मैक्सिम गोर्की

जीवन की पाठशालाएँ

मूल्य २॥)

प्रकाशक
जन साहित्य
३७, शिवचरणलाल रोड, प्रयाग।

मुद्रक
रामशरण अग्रवाल
प्रगति प्रेस, प्रयाग।

हिन्दी के सभी अनुवादकों
को जो विश्व साहित्य
हमारे लिए सुलभ
कर रहे हैं—

—शरद

जीवन की पाठशालाएँ

[मैक्सिम गोर्की की आत्मकथा के तीसरे भाग
(My Universities) का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादक

श्री ओंकार शरद

पर उसके साथ ही मैं कजान गया। उसने मुझे बताया कि मुझे कुछ परीक्षायें देनी होंगी फिर मुझे वजीफा मिलेगा। और पांच साल में मैं एक शिक्षित व्यक्ति हो जाऊँगा। यह यवरीनोव के दिल की कोमलता का एक सुबूत है जो उस समय १६ वर्ष का था।

यवरीनोव के जाने के दो सप्ताह बाद मैं भी गया। नानी ने विदा दिया, 'देख सब के साथ लड़ने को तैयार न रहना। क्योंकि क्रोध और झगड़ालू आदत तुझमें बहुत आ गई है। अपने नाना को ही देख। आज इसी आदत के कारण उसकी क्या हालत है। जीवन भर वह कटुता ही बटोरता रहा। अच्छा जा।'

फिर आंखों के आंसू पोंछ कर उसने कहा, 'शायद हमारी अब भेंट न हो क्योंकि तेरे पांव में तो चक्र है। तू घूमता रहेगा और मैं मर जाऊँगी।'

फिर मैं भी उस प्यारी सी नानी के प्रति तनिक लापरवाह हो गया। कभी ही कभी उससे मिलने आता। फिर अचानक मुझे यह भावना प्राप्त हुई कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये क्योंकि कोई दूसरी महिला मुझे शायद ही इतना प्यार करे।

डेक पर से मैं विदा के समय देखता कि वह एक हाथ से तो क्रास बना रही थी और दूसरे से शाल के किनारे से आंखें पोंछ रही थी।

और अब मैं अर्द्ध तातारी कजान में हूँ! एक बहुत आबाद, एक मंजिले मकान में। गली की अंतिम छोर पर!

इसी मकान में बाहर की ओर एक अँधेरा कमरा भी था जिसमें लावारिस कुत्ते और बीमार बिल्लियाँ रहतीं और मर भी जाती थीं। यह घर भी मेरी पाठशालाओं में एक था।

यवरीनोव की माँ और दो बेटे खिड़की वाले भाग में रहते थे। बाजार से लौट पहले ही दिन जब वह आई और अपनी खरीदारी की वस्तुएँ मेज पर बिखेर दिया तभी मुझे उसके मानसिक परेशानी का अन्दाजा लग गया। वह बहुत नाटी सी स्त्री थी। उसके चेहरे को देखकर उसके अन्तर की चिन्ता का आभास मिलता था।

एक सुबह ! मेरे पहुंचने के लगभग तीन दिनों बाद, जब दोनों बेटे खाट पर ही थे, मैं उसको सब्जी बनाने में मदद देने के इरादे से रसोई घर में गया। उसने मुझसे पूछा, 'तुम कजान क्यों आए ?'

'विश्वविद्यालय में भरती होने के लिए ?'

सुनकर उसकी फैली हुई पुतलियाँ ऊपर को उठीं और पीले माथे पर रेखायें उभरीं। इसी बीच चाकू से उसकी उँगली भी कट गई।

कटी उँगली चूसते हुये वह कुर्सी पर बैठ गई। लेकिन दूसरे ही क्षण उठ खड़ी हुई। उँगली में रूमाल लपेट लिया और दृढ़ता से कहा, 'तू आलू अच्छा छील सकता है !'

वाह ! मुझे जहाज की रसोईगीरी का नाज था।

'और तू समझता है कि तुझे विद्यालय में जगह मिल जायेगी ?'

उस समय मैं मजाक न समझता था और हर चीज को बहुत गम्भीरता से ग्रहण करता। मैंने उसे अपनी योजना बताई कि किस प्रकार में निक यवरीनोव के बताये रास्ते पर ज्ञान के मंदिर में घुसना चाहता हूँ।

'ओफ ! निक, निक !' वह तनिक चीखी ।

ठीक उसी क्षण निक रसोई में आया—अपना हाथ मुँह धोने । वह अभी भी नींद के खुमार में था ।

उसने मुझे बताया था कि साधारणतया स्त्रियाँ, पुरुषों के मुकाबले में अधिक भावुक होती हैं । इसलिये मैं उसकी माँ से बातें करते समय सदा सतर्क रहता था ।

यह वर्णन करना कठिन है कि निक किस तरह सदा ही गुरु की तरह मेरे मस्तिष्क में कुछ नया ज्ञान भरने को आतुर रहता, और मैं भी उसकी सीखों को अमृत की तरह ग्रहण करता ।

निक जाने क्यों मुझे एक अच्छा मनुष्य बनाने पर तुल गया था लेकिन उसे इतना अधिक समय न मिलता था जितना वह चाहता था । मेरे कारण अपनी उस जवानी में वह तनिक गैर जिम्मेदार भी हो गया जो उसकी बेचारी दुखिया माँ के लिये उसकी ओर से उचित न था । मैं इससे खूब परिचित था कि वह किस तरह अपने बेटों को पेट भरने का सदा धोखा देती और मुझे भी खाना खिलाती थी । इससे उसकी दी हुई रोटी का असर मेरे मन पर यों पड़ता जैसे किसी ने मेरी आत्मा पर पत्थर रख दिया हो । मैं खुद भी किसी काम की तालाश करने लगा ।

मुझे उनका खाना न खाना पड़े इसलिये मैं सुबह ही निकल पड़ता था । लेकिन जब मौसम खराब होता तो मैं किसी जले मकान में शरण लेता जहाँ कुत्ते और बिल्लियों की लाशें ही पड़ीं होतीं और वहीं मैंने अनुभव किया कि विश्वविद्यालय में पढ़ने का मेरा विचार बिल्कुल कल्पना ही है और यदि मैं फारस गया होता तो अधिक काम का होता । अक्सर ऊब कर मैं कल्पना करने लगता कि क्या क्या हो सकता है ! इस प्रकार

आँखें बन्द कर के सोचना यानी दिन में ही सपने देखना एक प्रकार से मेरे लिये आदत की चीज हो गई। मुझे न तो अब किसी की मदद अच्छी लगती न। मैं अधिक भाग्य पर भरोसा करता। मुझ पर दुर्दिन की जितनी भी मार पड़ती मैं उतना ही दृढ़ और आत्म विश्वासी होता गया।

पेट की भूख से परेशान होकर मैं वोल्गा के किनारे डेक पर चला जाता। वहाँ गर्मियों में कोई भी दिन भर में पन्द्रह से बीस कोपक तक कमा सकता था। मैं भी वहाँ के मजदूरों में शामिल हो गया। यहाँ के दुर्व्यवहार मुझे बुरे नहीं लगे।

वाशकीन जो पहले किसी अध्यायकों के कालेज का विद्यार्थी था, अब यहाँ काम करता था। उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। उसने मुझसे पूछा, 'तुम लड़कियों की तरह अपना सारा बदन इस प्रकार क्यों ढके रहते हो? तुम्हें बेइज्जती का डर है? किसी लड़की के लिए यह उचित है परन्तु तुम्हारे लिये यह एक मुसीबत है।'

दाढ़ी-मुच्छ विहीन, अभिनेताओं की तरह लगने वाला, तेज और सुन्दर वाशकीन काफी पढ़ा लिखा भी था। उसकी प्रिय पुस्तक थी, 'दी काउन्ट आफ मोन्टेक्रिस्टो'।

वाशकीन स्त्रियों से भक्ति करता था। स्त्रियों के विषय में बातें करते समय वह काँप उठता था। मैं स्त्रियों के विषय में उसे गौर से सुनता।

'औरत, औरत!' कहते हुये उसके पीले चेहरे पर लाली दौड़ जाती और आँखें चमक उठतीं, 'एक औरत—सब कुछ! उसके लिये पाप पाप नहीं है। बस वह जीती है, प्यार के लिए इससे अधिक या कम कुछ नहीं।'

कहानी सुनाना उसका एक खास गुण था वेश्याओं के ऊपर उनके करुण और अनचाहे प्यार के ऊपर उसने बहुत कुछ

लिखा था। इस विषय पर बनाये उसके गीत वोलगा के किनारे गाए भी जाते थे। उनमें से एक तो बहुत ही मशहूर था—'गंदे कपड़े, गरीब और सुन्दरता भी नहीं……कौन इससे शादी करेगा'

निरन्तर त्रुसोव भी मेरे प्रति अच्छा ही व्यवहार करता था। वह रहस्यपूर्ण, सुन्दर और शरीफ व्यक्ति, उसकी उँगलियाँ, पतली पतली जैसे किसी संगीतज्ञ की हों। गाँव के पास उसकी दूकान पर लिखा था, '—बहुत अच्छी तरह घड़ियों की मरम्मत होती है।' सचाई यह है कि उसका काम चोरी के माल को बेचना था।

वह मुझे सीख देता, 'चोरी न करना' अपनी भूरी दाढ़ी हिला कर वह फिर कहता, 'पेश्कोव, मैं तुम्हारे लिये दूसरी अच्छी राह देख रहा हूँ। तुम पर किसी का प्रभाव है।'

'प्रभाव ! तुम्हारा मतलब ?'

'जो किसी उत्सुकता वश ही कोई काम करे।'

मैं बाशकिन की भाषण कला और बातों में नये शब्दों के प्रयोग पर मुग्ध था। एक बार उसने कहा था, 'बर्फ से ढंकी रातों में मैं उसी तरह हूँ जैसे ओक के वृक्ष पर बैठा कोई उल्लू। और मेरी प्रेमिका, उसी आँखों में आत्मा की पवित्रता चमकती है। 'डार्लिंग' वह जब कहती तो उसके शब्दों की ईमानदारी बोल उठती—'मैं धोखा नहीं दे रही।' मेरा मन जानता था कि वह झूठ कह रही है परन्तु मैं विश्वास न कर पाता।'

और जब वह अपनी कहानी बताता तो उसका शरीर सिहरने लगता उसकी आँखें बन्द हो जातीं और हाथ वह हृदय पर रख लेता।

और त्रुसोव ! उसके पास सुनाने के लिये साइबेरिया की अनेक कथाएँ थीं। खीवा, बुखारा की कहानियाँ।

अक्सर गरमी की रातों में छोटी सी नदी कजानका के पार जाकर हम लोग पिकनिक करते। वहाँ अधिकतर व्यक्तिगत बातें होतीं। अपनी पत्नियों की बातें और किसी भी स्त्री की बातें।

मैंने भी कई रातें उनके साथ बिताईं। ऊपर काला आकाश और टिमटिमाते तारे थे। वोल्गा पास थी अतः उसमें जहाजों के ऊपर की बत्तियाँ उस कालिमा के बीच सुनहली मकड़ी की तरह लगतीं।

वहाँ जो बातें होतीं उन्हें सुनकर तनिक दुख ही होता क्योंकि वे अपने अपने दुखी विचार ही जीवन के प्रति प्रकट करते। सभी अपनी अपनी सुनाते रहते। और किसी दूसरे की बात पर कोई भी ध्यान न देता। किसी न किसी झोपड़ी के नीचे बैठे और वोद्का या बियर पीते हुये वे अपनी स्मरण शक्ति से सब घटनायें बताते रहते।

'और मेरे साथ ऐसा हुआ।' उसी अँधेरे में से ही किसी की आवाज आई। और प्रत्येक कहानी के अन्त में एक फुसफुसाहट सुनाई पड़ी, 'हो सकता है। ऐसी घटनायें अक्सर घटती हैं।'

इतना होने पर भी मैं उन्हें—बाशकीन और त्रुसोव—को पसन्द करता था। उनकी बातों में मैं एक युवकोचित रोमांच का अनुभव करता। अब तक पढ़ने के नाम पर कुछ गम्भीर विषय की पुस्तकें भी मैं पढ़ गया था।

उन्हीं दिनों मैंने एक नई बात का अनुभव किया। यवरीनोव के घर के पास के एक छोटे से मैदान में स्कूलों के विद्यार्थी खेलने आते थे। उनमें से एक था जार्ज प्लेतनेव। उसके प्रति मैं भयंकर रूप से आकर्षित हुआ। जापानियों की तरह नीले और काले उसके सिर के बाल थे। उसका चेहरा अनेक काले

दागों से भरा था जैसे किसी ने बारूद उसके चेहरे पर रगड़ दी हो। वह बहुत चतुर, खुशदिल और खेल में बहुत तेज था। उसके बहुत तगड़े और गठे हुये शरीर में उसकी बीसों पेवन्द वाली कमीज पर पतलून व फटे जूते बहुत सुन्दर लगते थे। वह जीवन की हर नई घटना को बहुत उत्साह से ग्रहण करता था।

मेरी मुसीबतों के विषय में उसे पता लगा तो मुझे वह अपने साथ ले गया और यह योजना बनाई कि मैं देहाती स्कूल का अध्यापक बन जाऊँ। इसी योजना के अन्तर्गत मैं एक मकान में ले जाया गया जिसे 'मारूसोंवका' कहते थे। मुझे मालूम हुआ कि कजान के विद्यार्थियों में यह मकान तीन पीढ़ी से मशहूर है।

ऐसा लगा कि इस बहुत बड़े मकान में हर समय तूफान चला करता हो। इसमें विद्यार्थी, वेश्याएँ और बेकार आदमी ही रहते थे। जार्ज सीढ़ी के पास बरामदे नुमा एक कमरे में रहता था। खिड़की के पास ही उसकी खाट पड़ी रहती थी। इसके अलावा केवल एक कुर्सी व एक मेज—बस यही फर्नीचर थे। इसी बरामदे में तीन कमरों के दरवाजे खुलते थे। दो में वेश्याएँ रहतीं थीं और तीसरे में गणित का एक अध्यापक। वह बहुत ऊँचा और लाल बालों वाला था। उसके गन्दे कपड़े स्थान स्थान पर इस बुरी तरह फटे थे कि उसका मुर्दे की तरह गला हुआ शरीर देखा जा सकता था। दिन रात वह गणित के प्रश्नों में ही उलझा रहता। बीच बीच में सूखी खांसी खांसता रहता।

वे वेश्याएँ उसे लेकर काफी परेशान रहतीं—अक्सर उस पर दया करके रोटी, चाय और चीनी वे उसके दरवाजे के बाहर रख आतीं। और जब वह उन्हें भीतर उठा ले जाता तो

थके घोड़े की तरह नथुनों से तेज साँस लेता। एक रात को तो मैं उसके पागल पने की चीख पर उठ बैठा। वह चीख रहा था, 'यह जेल! पिंजरा है, जामेट्री एक जेल है।'

मैंने बाद में जाना कि वह गणितज्ञ इस फेर में था कि वह ईश्वर के अस्तित्व को गणित द्वारा प्रमाणित करे। लेकिन वह अपना यह काम पूरा किये वगैर ही मर गया।

जार्ज अपनी जीविका एक अखबार में बारह कोपेक प्रति रात प्रूफ पढ़कर कमाता था। एक दिन जब मैं कुछ भी न कमा सका तो सिर्फ चाय और चार टुकड़े रोटी पर ही काटा। मेरी पढ़ाई चलती थी, अतः काम को बहुत कम समय मिलता।

जार्ज व हम दोनों ही एक खाट से काम चलाते। वह दिन को खाट पर सोता और मैं रात को। प्रति सुबह वह अपनी प्रेस की ड्यूटी से लाल आँखे व विगड़े चेहरे के साथ आता। हमारे पास अपना कोई रसोई घर तो था नहीं, अतः मैं पास के होटल से भाग कर गरम पानी लाता। खिड़की के पास बैठ कर रोटी व चाय खाते। जार्ज चाय के साथ मुझे वे सभी ताजा खबरें सुनाता जो उसने प्रूफ पढ़ने में देखा था। जार्ज उस मकान की मालकिन—चाँद सी सुन्दर मालकिन पर मुग्ध था यह मुझे मालूम था। वह स्त्री स्त्रियों के पुराने कपड़ों का और गृहस्थी की अन्य वस्तुओं के खरीदने व वेचने का व्यापार करती थी। जार्ज गरीबी के कारण किराया न दे पाता तो उसे खुश रखने को मजाक करता, गाने सुनाता। अपनी जवानी में मालकिन ओपेरा में गाया करती थी जिसके कारण गाने के प्रति उसका स्वाभाविक मोह था। अक्सर गाना सुनते समय उसके आँखों में आंसू भर आते थे। जिन्हें वह उँगलियों से पोंछती और उँगलियाँ गन्दे रूमाल से।

'तुम भी क्या कलाकार हो जार्ज !' वह बहुत कोमलता से कहती।

हम लोगों के ऊपर ही कुछ अमीर युवक रहते थे। उनमें एक युवक था, विद्यार्थी। साधारण कद, चौड़ी छाती, और उसके गट्ठे स्त्रियों की तरह कोमल, असाधारणतया छोटा सिर, जैसे कंधों में घुसा जा रहा हो, उसके ऊपर लाल बालों का गुच्छा। उसके रक्तहीन चेहरे में दो हरी आँखें यों चमकती थीं कि देखकर अजीब भावना मन में पैदा होती थी। बड़ी मुसीबतों से वह भी घर से बिना किसी सहायता के विश्व-विद्यालय में पढ़ रहा था। वह गाना भी जानता था। मालकिन ने उसका सम्बन्ध एक व्यापारी की स्त्री से करा दिया था जो चालीस वर्ष के लगभग के उम्र की थी और उसका एक लड़का व एक लड़की भी स्कूल में पढ़ते थे। वह पतली और चौड़ी औरत सिपाही की तरह कठोर मालूम होती थी। वह सदा काले कपड़े पहनती तथा पुराने फैशन का हैट लगाती थी।

वह उस विद्यार्थी के पास या तो भोर में आती या शाम को अँधेरा शुरू होने के आस पास। प्लेतनेव और हम उसका दरवाजे से घुसना, मार्च करते हुए चलकर कमरे तक जाना देखा करते। उसका चेहरा भयानक था, दोनों ओठों को वह यों दाबे रहती जैसे ओंठ हों ही नहीं।

वह विद्यार्थी उससे विमुख रहता और छिप भी जाता परन्तु वह स्त्री सतर्कता से उसे खोज लेती जैसे उसने उसका कर्ज लिया हो या वह जासूस स्त्री हो।

'मैं तो अब चला जाऊँगा।' वह जब थोड़ा शराब पिए होता तो कहता, 'मैं गवैया तो कभी बन नहीं सकता।'

'तो यह मूर्खता बन्द क्यों नहीं करते ?' प्लेतनेव ने पूछा।

'लेकिन मुझे खेद है। काश, कि तुम जानते कि वह स्त्री कौन है·········लेकिन आप चिन्ता न करें।'

हम लोग काफी जानते थे। अक्सर हम लोगों ने उसे सीढ़ी पर खड़े होकर कहते सुना था, 'खुदा के वास्ते, मेरे प्यारे, खुदा के वास्ते······· ।'

हमारे चाय और रोटी के भोजन के पश्चात, जार्ज सोने चला जाता और मैं दिन के काम के लिये निकल पड़ता। अगर भाग्य अच्छे होते तो मैं घर आते समय रोटी और उबली मछली लाता। हम और प्लेतनेव अपना अपना हिस्सा खा लेते, प्लेतनेव प्रेस चला जाता।

मैं अकेला, मारूसोवका के आसपास घूमकर वहाँ के रहने वालों के जीवन को देखता जिनमें हमें बहुत नवीनता मिलती। इस घर में दिन भर कोलाहल मचा रहता। सिलाई के मशीन की आवाज, गाने वालों का अभ्यास करना, एक अर्धविक्षिप्त अभिनेता अपना पार्ट याद किया करता। और उन वेश्याओं के यहाँ से भी अजीब अजीब ध्वनि आया करती। यह सब देखकर मेरे मन में प्रश्न उठता, 'यह सब क्या है ?'

वहीं एक युवक और था। उसके बड़ी सी तोंद थी जो उसके पतले पावों के ऊपर बहुत बुरी लगती थी। उसका बड़ा सा मुंह, घोड़ों की तरह बड़े दाँत। उसका नाम रख दिया गया था, 'लाल घोड़ा' वह किसी महाजन से झगड़ गया था जिसके लिए कहता, 'अगर वह मुझे मार भी डाले तो भी वह बरबाद हो जायेगा। जब वे तीन वर्ष गलियों में भीख माँग चुकेंगे तब मैं उन्हें सब लौटा दूँगा।'

'तो यही तेरे जीवन का लक्ष्य है, घोड़े !'

'हाँ।' वह कहता, 'जब तक यह काम पूरा न हो मैं किसी दूसरे के लिये सोच नहीं सकता।

अपने वकील के यहाँ घंटों बर्बाद करके जब वह आता तो साथ में कुछ खाना और शराब लेता आता जो किसी भी विद्यार्थी को बुलाकर साथ ही खाता पीता। वह केवल 'रम' पीता था।

'रम' का नशा चढ़ने पर वह कहता, 'मैं सबों को प्यार करता हूँ। बस वह भर मुझसे नहीं बच सकता—उसे मैं बर्बाद कर दूंगा यदि वह मार भी डाले .....।' फिर पागल पने में वह विद्यार्थियों को डांटता, 'तुम लोग कैसे रहते हो ? भूख, जाड़ा, गरीबी ? यह सब क्या ? ऐसा जीवन बिताकर तुम शिक्षा कैसे ग्रहण करोगे—शायद जार ही यह जाने।' फिर अपने जेब से रुपये निकाल कर कहता, 'लो, लो, तुम्हें जरूरत होगी।' गवैये और दूसरे लोग उस पर झपटते पर वह कहता, 'नहीं नहीं, तुम्हारे लिए नहीं—यह विद्यार्थियों के लिए हैं।'

लेकिन कोई विद्यार्थी उसके रुपये न लेता।

एक दिन 'लाल घोड़ा' दस रुपया की नोट लेकर आया और मेज पर रखा और बोला, 'क्या तुम इसे चाहते हो ? मैं तो नहीं चाहता।'

एकाएक वह हमारी खाट पर लेट गया। उसे जैसे फिट आ गया हो। तत्काल ही हमने पानी डाल कर उसे ठीक किया। जब वह सो गया तो प्लेतनेव ने उन नोटों को अलग करना चाहा परन्तु वे इस तरह एक दूसरे से चिपके थे कि पानी में डालकर उन्हें छुड़ाना पड़ा।

लाल घोड़े का कमरा ही खराब था। हर समय शोर, धुआँ, गन्दगी। मैंने पूछा कि जब वह रह सकता है तब होटल में क्यों नहीं रहता ?

'आत्मा की शान्ति के लिए मित्र !' फिर उसने कहा।

'कुछ गाना होना चाहिये! एक गाना सुनाओ।' उसने प्लेतनेव से कहा। अपने घुटने पर गिटार रखकर जार्ज ने गाया, 'लाल सूरज ऊग आ।' उसकी महीन आवाज आत्मा को तृप्त कर रही थी।

सब कोई खामोश बैठे थे। काफी लोग इकट्ठे हो गये थे। उस व्यापारी की स्त्री ने कहा, 'तुम बहुत ही अच्छा गाते हो।'

मारूसोवका के पीछे दो गलियाँ थीं। दूसरी के अन्त में निकीफोरिच का छप्पर था। यह लम्बा बूढ़ा आदमी हमारे जिले में पुलिस कप्तान था। उसके छाती पर अनेक तगमें लगे थे। वह बहुत शिष्ट था। उसकी चमकती और तेज आंखों के कारण वह काफी चतुर भी दिखाई पड़ता था। वह हम लोगों के मकान पर निगाह रखता था। अक्सर दिन में वह आता भी था। अक्सर वह चुपचाप आकर खिड़कियों से भीतर के दृश्य भी देखा करता।

उस जाड़े में मारूसोवका के रहने वाले कुछ किरायेदार पकड़ गये थे। उनमें एक फौजी अफसर स्मीरनोव, और सिपाही मुरातोव भी थे जिनके पास सेंट जार्ज के कई पदक भी थे। इनके अलावा जोवनीन, ओवसीआन्कीन, ग्रिगोरिच, क्रिस्तोव और कुछ और थे। उन पर एक गैर कानूनी प्रेस चलाने का जुर्म था। गिरफ्तार होने वालों में एक और था जिसे हम लोग 'ऊँची मीनार' कहते थे। सुबह ज्योंही मैंने जार्ज को उसकी गिरफ्तारी का समाचार दिया कि उसने घबड़ा कर कहा, 'दौड़ो मैक्सिम, जितनी जल्दी संभव हो……' और मुझे पता बताया और कहा, 'होशियारी से जाना वहाँ जासूस लगे होंगे।' मैं उसकी आज्ञा लेकर भागा।'

यह रहस्यमय कार्य मुझे काफी दिलचस्प लगा। वह किसी ठठेरी की दूकान थी, वहाँ घुँघराले बालों वाला एक युवक मिला। वह काम तो कर रहा था लेकिन मजदूर जैसा दिखता नहीं था। कोने में सिर पर चमड़े की पट्टी बांधे एक बूढ़ा भी काम कर रहा था।

'मेरे लिए कोई काम है ?' मैंने पूछा।

बूढ़े ने लापरवाही से कहा, 'नहीं, तेरे लिये नहीं।'

युवक ने मुझे गौर से देखा, और तभी मैंने धीरे से उसके पांव में ठोकर मारी। गुस्से से उसकी नीली आँखें चमक उठीं। उसने हाथ यों उठाया जैसे मारेगा लेकिन मेरे इशारे से शायद वह समझ गया और एक सिगरेट जलाते हुये मुझे ऊपर से नीचे देखने लगा।

'तुम टिखोन हो।' मैंने पूछा।

'मैं—हाँ।'

'पीटर गिरफ़्तार हो गया है।'

वह मुझ पर गिरता गिरता बचा, 'क्या, पीटर ?'

'हाँ वह लम्बा वाला व्यक्ति जो राक्षस की तरह चलता था।'

'तो क्या हुआ ?'

'पकड़ गया।'

फिर मैं घर आया। खुश था कि मैंने अपना काम बखूबी पूरा किया। यह मेरे जीवन का सर्वप्रथम जासूसी कार्य था। जार्ज लेतनेव ने समझाया, बहुत तेजी मत दिखा, अभी तुझे बहुत सीखना है।'

इसके बाद यवरीनोव के माध्यम से मेरा परिचय भी अजीब अजीब लोगों से हुआ। इसके बाद ही एक मीटिंग हुई। वह जगह शहर से बाहर थी। रास्ते भर यवरीनोव मुझे

समझाता रहा कि मीटिंग की बात को बिल्कुल गुप्त रखना होगा। सामने हम लोगों को एक खेत दिखा। यबरीनोव ने वहाँ एक पीली छाया की ओर इशारा किया। कहा, 'जा, जा, उससे कहना कि तू नया साथी है।'

यह सभी रहस्य मुझे बहुत दिलचस्प लगे।

जो आदमी खेत में दिखाई पड़ा था, उसे जब कब्रगाह के पास मैंने पकड़ा तो पाया कि वह छोटे कद का एक तेज दिखने वाला युवक है। आँखों में चिड़ियों की तरह चमक थी। वह भूरे रंग का ओवरकोट पहने था जैसे स्कूल के लड़के पहनते हैं लेकिन अन्तर इतना था कि लोहे के बटनों की जगह पीतल के बटन लगा लिये थे। फटी टोपी में अब तक स्कूल का चिन्ह बना था। यों देखने में वह एक बूढ़े पक्षी की तरह लगता था।

जहाँ हम लोग बैठे वहाँ झाड़ियों की छाया थी। उसकी बातें बहुत सूखी थीं और मेरे मन में जाने क्यों उसके प्रति अनिच्छा हो गई। पहले तो उसने मेरी पढ़ाई के विषय में कई प्रश्न किये बाद में अपने दल में शामिल होने की सलाह दी। मैंने उससे हामी भर दी और हम अलग हुये।

उस दल में चार पांच व्यक्ति ही थे जिसमें प्लेतनेव भी था और मैं उनमें सबसे छोटा था और उनके कार्यक्रमों के प्रति अनभिज्ञ। हम लोगों के मिलने की जगह मिलोवस्की का कमरा था। वह एक अध्यापकों के स्कूल का विद्यार्थी था बाद में उसने अपनी कहानियों का एक संग्रह येलेवन्सकी के उप नाम से छपाया था। लगभग पाँच पुस्तकें निकलने के बाद लेखक ने आत्महत्या कर ली। कितने ही मैं ऐसे व्यक्तियों से मिला हूँ जिन्होंने अपनी इच्छा से अपना जीवन समाप्त कर लिया है।

मिलोवस्की एक बढ़ई की दूकान में एक सड़े कमरे में रहता था। वह बहुत अच्छा साथी न था। उसी कमरे में अर्थ-शास्त्र पढ़ने हम लोग जुटते थे परन्तु वहाँ मुझे बहुत ऊब आती थी।

एक दिन हमारे अध्यापक ने देरी की। हमने समझा वे आयेंगे ही नहीं सो दिन मजे में काटने के लिये हम लोगों ने थोड़ी सी वोदका रोटी और खीरा का प्रबन्ध किया। और ज्योंही हम लोगों ने शुरू किया था कि उसकी छाया खिड़की पर दिखाई पड़ी। हम लोग किसी प्रकार भी वोदका छिपा न सके कि टेबिल पर उसकी नजर पड़ गई। लेकिन देखकर भी उसने एक शब्द न कहा जिसके फलस्वरूप मेरे मन में यह अनुभव हुआ कि उसके समक्ष मैं कितना बड़ा अपराधी हूँ यद्यपि वोदका लाने का मेरा प्रस्ताव न था।

अपनी इस पाठशाला के ऊब के बीच भी मैं अक्सर तातारों की बस्ती में घूम आता था जो बिल्कुल ही दूसरे प्रकार का जीवन बिताते थे। उनकी भाषा भी अजीब थी।

सितम्बर के महीने में पारसी वस्तुओं का एक जहाज वोल्गा में आया। माल उतारने के लिये मुझे काम मिल गया। हमारे दल में ४० व्यक्ति थे। हमारा मुखिया चेचक के दागों वाले चेहरे का एक अधेड़ व्यक्ति था। यह दल राक्षसों की तरह काम कर रहा था। दो दो मन के बोरे थे, यों उठाते जैसे खिलवाड़ कर रहे हों। काम के लिये पागल इन युवकों के बीच मुझे बहुत अनुभव हुये।

काम के बीच ही में पानी बरसने लगा। लेकिन सभी काम में जुटे ही रहे। उन पर मुझे बहुत श्रद्धा उपजी। जब काम समाप्त हो गया तो हम लोग एक स्टीमर से कजान वापस आ गये। सब से पहले वोदका पीने शराब खाने में आये।

वहाँ वाशकिन ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखकर कहा, 'तेरे साथ इन्होंने कैसा व्यवहार किया ?'

मैंने सब बता दिया।

'मूर्ख।' उसने कहा, 'मूर्खों में मूर्ख! पागल!' कहते कहते उसकी देह मछली की तरह हिली। कमरे के कोने से किसी ने गाया।

'उस अंधेरी रात में……।

बगीचे में औरत घूम रही थी।'

तभी लगभग एक दर्जन व्यक्तियों ने तालियाँ बजाकर आगे गाया—

'और शहर के चौकीदार ने देखा कि औरत जमीन पर लेटी थी।'

फिर सारा कमरा, हंसी, डांट, उछल कूद और हिंसक मजाकों से भर गया।

—दो—

मेरा परिचय आन्द्रीव डेरेनकोव से कराया गया। वह एक छोटी सी पंसारी की दूकान किए था। वह काफी तेज आदमी था। उसके छोटी सी साफ दाढ़ी थी। उसके पास सैकड़ों जब्त किताबें थीं जिन्हें वह कजान के विद्यार्थियों और अन्य क्रान्तिकारियों को दिया करता था।

उसकी यह दूकान एक धार्मिक व्यक्ति के घर के एक भाग में थी। इस दूकान के पीछे का दरवाजा एक बड़े कमरे से लगा हुआ था। उसी कमरे में ये जब्त किताबें भरी थीं। उनमें काफी पुस्तकें हाथ की लिखी थीं जैसे नोट बुकों में उतारी गई हों। उनके नाम थे—ऐतिहासिक पत्र, हम क्या करें! जार की भूख। बहुत अधिक पढ़ी जाने के कारण वे काफी बुरी हालत में थीं।

जब मैं पहली बार दुकान में आया तो डेरेनकोव किसी ग्राहक से बातें कर रहा था, उसने इशारे से मुझे उसी कमरे में जाने का संकेत किया। उस कमरे में एक वृद्ध व्यक्ति बैठा था। उसने दाढ़ी हिलाई। फिर मुझे देखकर कहा, 'मैं आन्द्रीव

का बाप हूँ। तू कौन है? मैं समझता हूँ तू कोई परेशान विद्यार्थी है।'

मुझे खिड़की के पास खड़ा छोड़ वह रसोई घर की ओर चला गया। मैंने देखा कि एक जवान लड़की रसोई घर के दरवाजे पर खड़ी थी। वह बहुत गोरी थी, बाल घुँघराले थे, और गोल चेहरे में दो आंखें बिजली की तरह चमक रहीं थीं। वह क्रिस्मस के कार्डों पर बने चित्रों सी सुन्दर लगी।

'तुम डरते हो? मैं क्या इतनी डरावनी हूँ?' उसने बहुत धीमी आवाज में कहा और मेरी ओर बढ़ी। मैं खामोश था। इस घर में सब कुछ कितना अजीब था।

बहुत सम्हाल कर वह चल रही थी। आकर वह कुर्सी पर बैठ गई। उसने बताया कि उसे अच्छे हुये केवल चार दिन हुये हैं। तीन महीने तक हाथ पाँव में लकवा के कारण वह खाट पर थी। 'यह नसों की बीमारी है।' उसने कहा।

मैं सोचने लगा।

'मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है।' उसने उसी प्रकार कहा, 'मैं देखना चाहती थी कि तुम कैसे हो?'

उसकी आँखें मेरी देह में चुभ सी रही थीं। उससे बातें करना मेरे लिये कठिन था। मैं बातें शुरू न कर सका। घबराहट में मैं दीवारों पर लगे हरजेन, डारवीन और गैरिबाल्डी के चित्रों को देखता रहा। तभी मेरी ही उम्र का एक युवक दूकान से आया और सीधे रसोई घर में चला गया। फिर उसने पुकारा, 'कहाँ हो मेरिया!'

'एलेक्स, यह है मेरा छोटा भाई।' उसने कहा, 'तुम बोलते क्यों नहीं? शरमाते क्यों हो?'

तभी आन्द्रीव डेरेनकोव आया। जेवों में दोनों हाथ डाले था। आकर उसने अपनी वहन के सिर पर के सुन्दर वालों को सहलाया फिर मुझसे पूछा, 'तुम किस प्रकार का काम चाहते हो?' उसके पीछे पीछे एक दुबली पतली लाल वालों और हरी आँखों वाली एक लड़की आई। मुझे घूर कर वह बोली, 'आज इतना ही काफी है।' कहकर वह मेरिया को लिवा गई। मेरिया नाम वहुत साधारण था अतः मुझे अधिक नहीं भाया।

मैं भी अजीव मनस्थिति में वापस आया। लेकिन दूसरे शाम को फिर मैं गया। पता नहीं क्यों मुझे उनके जीवन के प्रति आकर्षण था।

उस वृद्ध पिता ने उसी प्रकार क्त्रिम हँसी से कहा, 'मुझे मत छूना।'

आन्द्रीव का हाथ टूटा था यह मुझे आज मालूम हुआ जव वह केवल जैकेट पहने हुये मेरे सामने आया। उसका छोटा भाई एलेक्स उसकी दूकान में मदद करता था, एक और विद्यार्थी भी उसका सहायक था लेकिन वह केवल रविवार को ही आता था। वह पंगु वहिन कभी ही कभी आती तो मुझे परेशानी होती। यह घर एक सूदखोर स्त्री का था। वह स्त्री भी देखने में विल्कुल गुड़िया सी थी। केवल आँखें तेज व कठोर थीं। लाल वालों वाली उसकी लड़की नास्त्या भी उसके साथ ही रहती।

विद्यार्थी गण नये अखवारों से लेखादि काट कर लाते और संग्रह में मदद करते। सभी मोटी मोटी कितावें सदा पढ़ते और वहस करते।

उस गुप्त पुस्तकालय में लगभग एक दर्जन लोग प्रतिदिन आते। इनमें एक जापानी—पैन्तेलीमन सातो नामक विद्यार्थी भी था। कभी-कभी बड़े ऊँचे कंधों वाला एक व्यक्ति भी आता—उसकी बड़ी-बड़ी दाढ़ी और तातारों की तरह घुटा हुआ सिर भी था। बहुत कसी हुई भूरे रंग की जैकेट, गर्दन तक बटन बन्द किये रहता। जब कभी वह घूरकर मुझे देखता तो मैं डर के मारे घबड़ा जाता। उसकी खामोशी भी मुझे परेशान करती थी। मुझे आश्चर्य था कि हरकुलीस जैसा यह व्यक्ति बोलना भी जानता है या नहीं।

सभी उसे खोखोल कहते थे। मैं समझता हूँ कि केवल आन्द्रीव ही उसका ठीक नाम जानता रहा होगा। इतना तो मैं जान गया था कि उसे दस वर्ष का देश निकाला था और वह याकुट्स्क* में था। इस बात से मेरे मन में उसके प्रति अधिक आकर्षण बढ़ा परन्तु मेरे दब्बू स्वभाव के कारण परिचय न हुआ! सभी के बारे में फौरन जानने की मेरी लालसा का ही यह फल था। मैं अन्य सभी लोगों को जानता था। बढ़ई, ईंट वाले, और दूसरे सभी। मैं जेक ओसिप और ग्रेगरी को जानता था पर इस व्यक्ति को न जाना जिसके सामने सभी दुबके रहते थे।

आन्द्रीव डेरेनकोव ने बताया था कि उसकी सारी आमदनी दूसरों के लाभ के लिए ही खर्च होती थी। अक्सर अकेले में जब सभी लोग चले जाते तो रात काटने को वह मुझसे बातें करने लगता था। हम लोग कमरे बन्द करके लालटेन की हल्की रोशनी में जमीन पर चटाई पर लेटकर बातें करने लगते थे। वह अक्सर कहता, 'ये जो लोग आते हैं वे एक दिन सैकड़ों

---

* पूर्वी साईबेरिया

हजारों की तादाद में आवेंगे और रूस पर इन्हीं का अधिकार हो जायगा।' वह मुझसे दस वर्ष बड़ा था। मैंने अनुभव किया कि वह लाल बालों वाली नास्त्या से बहुत प्रभावित है। वह उसकी उत्तेजनापूर्ण आँखों से कतराता भी है। औरों के सम्मुख वह बहुत बड़प्पन से उससे बातें करता था। लेकिन बहुत उत्सुक निगाहों से वह उसके प्रत्येक हाव-भाव को भी समझता रहता था। जब कभी उससे वह अकेले में बातें करता तो उसे लज्जा भी आती थी

कोने में बैठी उसकी छोटी बहन भी उसकी नाटकीय बातें गौर से देखा करती थी।

शरद ऋतु के आते आते बिना काम-काज के मेरा जीवन एक भार सा हो गया था। अपने चारों ओर के वातावरण से अवश्य ही मैं खुश था लेकिन मैं ज्यादा काम न करता और दूसरों की रोटी ही खाता था जो अक्सर मेरे गले में फँसती सी जान पड़ी। जाड़ों के लिये मैंने काम की तलाश की। अपने इस जीवन को मैंने अपनी कहानियों में भी चित्रित किया है परन्तु यह जीवन सचमुच मेरे लिये मानसिक और शारीरिक दोनों ही रूपों में कष्टप्रद था।

मुझे वसील सेमेनोव की दूकान में काम मिल गया। यहाँ का काम मेरे मित्रों और मेरे बीच एक दीवार की तरह था। कोई मुझसे मिलने न आता और चौदह घंटे रोज काम करके मैं किसी तरह भी डेरेनकोव से न मिल पाता। क्योंकि छुट्टियों के दिन मैं केवल सोकर थकान मिटाता था। लेकिन वहाँ के अन्य काम करनेवालों का भी मुझे काफी स्नेह मिल गया था। वहां जिन लोगों का मेरा साथ हुआ था वे भी अजीब लोग थे। काम के बाद कुछ निश्चित गलियों में वे थकान मिटाने जाते और बोतल या औरत की खोज में मारे-मारे फिरते। तनख्वाह

के दिन 'खुशी के घर' में जरूर जाते। एक सप्ताह पहले से ही इसकी तैयारी होती। फिर उस तिथि के बाद उनके संस्मरण सुनने लायक होते थे। वे अपनी विजय की बातें करते कि उन्होंने कितनी औरतों से प्रेम किया। इस 'खुशी के घर' में कोई भी एक रुबल देकर पूरी रात किसी स्त्री के साथ बिता सकता था। लेकिन मेरे भीतर किसी स्त्री से सम्पर्क की कल्पना अजीब कम्पन पैदा कर देती। फिर भी मेरी दिलचस्पी इस ओर कम न हुई।

मेरा यहाँ किसी भी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध कायम न हो सका था, इससे मैं वहाँ बड़ी बुरी स्थिति में पड़ गया था। स्त्री और पुरुष दोनों के विरोधों का मैं पात्र बन गया। अक्सर वे मुझे बाहर चले जाने को कहते।

'क्यों।'

'तुम्हारा यहाँ रहना आवश्यक नहीं।'

यद्यपि मैं इन शब्दों का अर्थ खूब अच्छी तरह समझता था फिर भी मैंने प्रश्न किया तो उत्तर मिला, 'हम नहीं चाहते कि तुम यहाँ रहो। दूर रहो नहीं तो हमारा मजा किरकिरा हो जायगा।' हँसकर आर्टीयोम कहता।

चालीस वर्ष की अधेड़ स्त्री थेरेसा बोरुटा इसे चलाती थी—वह पोलैंड की स्त्री थी। उसने मुझे देखकर एक लड़की से कहा, 'इसे सम्हाल, ऐसे अच्छे साथी के लिये तो कोई भी दुल्हन तैयार हो जायगी।'

वह पीती बहुत थी और जब पिये होती थी तो उसे सम्हालना कठिन होता था। अक्सर जब वह बिना पिये होती तो भिन्न-भिन्न मनुष्यों के लिये उसकी पहचान देखकर मैं दंग रह जाता।

'ये विद्यार्थी बड़े बुरे होते हैं।' उसने कहा, 'भला वे लड़कियों के साथ क्या नहीं करते! फर्श पर साबुन रगड़कर फिसलन पैदा करके एक के बाद एक कई लड़कियों को गिरा देते हैं।'

'तुम झूठ कह रही हो।' मैं कहता।

'नहीं। भला किसी लड़की के लिये मैं ऐसा क्यों कहूँगी—अगर यह सच न हो। क्या मैं पागल हुई हूँ?'

सुननेवाले हमारी वार्तालाप बहुत ध्यान से सुनते थे।

'ये धर्म की शिक्षा पानेवाले लड़के लावारिस होते हैं—ये या तो चोर, या बदमाश होते हैं या बुरे आदमी।'

थेरेसा की कहानियाँ, लड़कियों की, विद्यार्थियों और सरकारी नौकरों के प्रति शिकायतें मुझे बुरी लगतीं। लड़कियाँ कहतीं, 'ये पढ़े लिखे लोग हमसे अच्छे नहीं होते।'

मुझे यह सब सुनकर अच्छा न लगता। मैंने देखा कि इन काले कमरों में जैसे शहर की गन्दगी का भंडार हो और यहाँ लोग अपनी गंदगी छोड़कर ताजे होकर वापस जाते हैं। मैंने पाया कि शिक्षित लोगों के प्रति यहाँ पर एक प्रकार का असन्तोष था, उसका कारण था कि शिक्षित अशिक्षित का अधिक भेद नहीं था और इस प्रकार के वेश्यालय दुनियादारी सीखने के विश्वविद्यालय के समान थे। जब कभी मैं यहाँ की लड़कियों की ओर से बहस करता तो दूकान के मेरे साथी कहते, 'जरा इन लड़कियों से बातें कर के तो देखो! वे कहानी का दूसरा रुख ही बतावेंगी।'

मैं जानता था कि आज का जीवन बहुत मंहगा हो गया है और ऐसे जीवन में यदि घृणा का साम्राज्य हो गया तो आश्चर्य नहीं। इसे लेकर मेरा सदा ही साथ काम करने वालों से झगड़ा होता रहता। इन चीजों को देख सुन

कर मुझे बहुत ही क्रोध आता परन्तु मैं उसपर विजय पाने को प्रयत्नशील रहने लगा।

एक रात भयङ्कर जाड़ा पड़ा। मैं डेरेनकोव के घर से अपनी नानवाई की दूकान आ रहा था कि रास्ते में मैं एक व्यक्ति से टकरा गया और वह गिर पड़ा। हम दोनों ने एक दूसरे को 'अन्धा' कहा लेकिन मैंने रूसी भाषा में और उसने फ्रेंच में।

मेरी उत्सुकता बढ़ी। मैंने उसे उठने में मदद किया। वह बहुत हल्के वजन का व्यक्ति था। मुझे धक्का देकर उसने डाँट कर कहा, 'भले आदमी ! मेरा हैट कहाँ है। लाओ मेरा हैट, मुझे सरदी लग रही है।'

उसका हैट खोजा। बर्फ से उठाया, झाड़ा-पोंछा, और उसके सिर पर रख दिया। लेकिन उसने उतार लिया और चीखकर कहा, 'दूर हट जाओ।'

फिर वह आगे बढ़ा, फिर अचानक वह फिसल गया और मैंने जाकर देखा कि वह एक बुझी हुई बत्ती के खम्भे से लिपट कर कह रहा है—'लीना, मैं मर रहा हूँ ! लीना !'

देखा कि वह पिये था। सोचा कि इस प्रकार छोड़ देने से शायद यह रात को ठण्ड खाकर मर जाये। सो मैंने उसके रहने का स्थान पूछा।

'हमें याद नहीं कहाँ जाना है। हम किस सड़क पर हैं ?' मैंने सुना कि सचमुच उसके दाँत किटकिटा रहे थे। उसने शायद गरम करने के लिये हाथ मुंह पर रखा।

उसे लेकर मैं बुलक सड़क पर गया। वहाँ एक झोपड़ी के सामने रुककर उसने धीरे से कहा, 'श—श, खामोश !' और धीरे धीरे दरवाजा खटखटाया।

३५९

लाल घरेलू कपड़े पहने एक स्त्री ने दरवाजा खोला और हम लोग भीतर गये। उसने चश्मा लगाकर मुझे सिर से पांव तक देखा। उस आदमी की देह ठंड से अकड़ रही थी। मैंने कहा कि शीघ्र ही कपड़े उतार कर उसे विस्तरे में लिटाना चाहिये'

'अच्छा !'

'हां और उसके हाथ धुला दो।'

विना कुछ कहे हुये वह स्त्री इधर उधर देखने लगी।

'क्या तुमने भी शराव पी है ?' मैंने पूछा परन्तु उत्तर न मिला। वह मेज पर फैले ताश के पत्तों को छूने लगी और वह आदमी कुर्सी पर बैठ गया। मैं उसे उठाकर कोच पर ले गया और उसके कपड़े उतारने लगा। मुझे यह सब बहुत आश्चर्यजनक दिखाई पड़ रहा था। वह स्त्री अपने ताश में ही रमी रही। थोड़ी देर बाद उसने हल्की आवाज में पूछा, 'ज्योर्जस ! क्या मिस्का से मिले थे ?

हमें अलग हटाकर वह सीधा बैठ गया और कहा, 'वह तो कोव चला गया।'

'कोव ?'

'हाँ वह जल्दी ही आवेगा।'

'अच्छा !'

'हाँ ! हाँ !'

'अच्छा' उसने फिर कहा

एकाएक कोच से उछलकर अधनंगा वह व्यक्ति स्त्री के सामने घुटनों के बल बैठ कर फ्रेंच भाषा में गिड़गिड़ाने लगा। स्त्री ने कहा, 'लेकिन मैं तो चुप हूँ।'

'सुनो, मैं रास्ता भूल गया था। बाहर बहुत तेज तूफानी

ठंडी हवा चल रही है । मुझे लगा जैसे मैं मर कर जम गया। हमने ज्यादा पी भी नहीं ।'

वह व्यक्ति लगभग चालीस वर्ष का था । लाल चेहरे पर मोटे होठों पर काली कड़ी कड़ी मूँछें थीं ।

'कल हम कीव चलेंगे ।' उसने इस ढङ्ग से कहा जैसे आज्ञा और प्रश्न दोनों भाव स्पष्ट दिखे ।

'हाँ कल जरूर ! तुम सो जाओ !'

'मिस्का आज नहीं आयेगा ?'

'इस बर्फ के तूफान में नहीं आएगा । चलो सो जाओ ।' टेबिल पर से लैम्प उठाकर उसने उसे एक आलमारी के पीछे रास्ता बताया मैं चुपचाप बैठा रहा ।

जिओर्जस वापस आया । बोला, 'वह सोने चली गई ।'

टेबिल पर बोझ देकर वह बीच में खड़ा हो गया, 'तुम न होते तो आज मैं मर जाता । तुम जो भी हो, तुम्हें धन्यवाद !'

'तेरी पत्नी ?' मैंने तनिक हिचक से पूछा ।

'हाँ मेरी पत्नी, मेरी जीवन संगिनी ।' बहुत धीरे से कहते हुये उसने अपने हाथों से सिर को रगड़ा ?'

'कुछ चाय बन सकती है ?'

उसने नौकर को पुकारा पर कोई उत्तर न आया । मैंने कहा कि वह खुद ही केटली ऊपर रख दे । उसे अभी तक शायद यह चेतना न थी कि वह नङ्गा है । वह मुझे रसोइघर में ले गया । वहाँ की जमीन इतनी गीली थी कि फिसलन होती थी । वहां उसने फिर कहा, 'यदि तुम न होते तो मैं ठंड से समाप्त हो गया होता । तुम्हें धन्यवाद । और उसका क्या होता, या खुदा ।'

बहुत जल्दी व सतर्कता से उसने कहा, 'वह बीमार है । वह अब तक अपने बेटे का इन्तजार कर रही है—दो वर्षों से ।

वह मास्को में संगीतज्ञ था—दो वर्ष पूर्व उसने आत्महत्या कर ली है।'

चाय पीते समय उसने बताया कि उस स्त्री के पास गाँव में मकान भी है। वह अपने बेटे को पढ़ाती थी। वह उससे प्रेम करने लगा था। उसने अपने पति को छोड़ दिया था जो जर्मन था। वह आपेरा की गायिका बन गई थी। उसने पहले पति ने सब कुछ किया परन्तु इनका प्रेम अटूट बना रहा।' यह सब बताते समय उसकी आँखें चूल्हे के पास ही जमी थीं। उसने इतनी जल्दी चाय समाप्त की कि उसका मुँह अवश्य ही जल गया होगा। उसने कहा, 'और तुम! नानबाई की दूकान के काम करने वाले, पर ऐसा लगता तो नहीं।'

वह देखने में भी अजीब लगा। जैसे वह आधा पागल हो। मैंने भी अपने जीवन के बारे में उसे थोड़ा सा बताया।

उसने मुझसे एक पुस्तक के बारे में पूछा कि मैंने पढ़ा है या नहीं। मैंने तो पढ़ा नहीं था, उसने कहा,

'मुझे वह कहानी बहुत अच्छी लगी। जब मैं तुम्हारी उम्र का था। तब मैंने एक बत्तक पाली थी। मैं गिरिजा में शिक्षा लेने जाने वाला था पर मैं विश्वविद्यालय में चला गया। मेरे बाप ने मुझे घर से अलग कर दिया। मैं लिखने लगा। प्रगति ऐसी चीज है जिससे बहुत सांत्वना मिलती है। काम के बिना प्रगति भी नहीं होती। लेकिन केवल मजदूरी ही नहीं। खेत का काम भी संसार के लिये बहुत आवश्यक है। और यों तो आदमी की इच्छायें जितनी कम हों, वह उतना ही खुश रहता है।' फिर उसी दरवाजे को देखकर फिर कहा, 'मेरी बात समझे, आदमी को बहुत कम आवश्यकता है—एक टुकड़ा रोटी और एक औरत, बस!'

मैं चुपचाप सुनता रहा।

'भूख और प्यार ही संसार में सब कुछ है।'

उसकी बातें सुनकर मुझे वह पुस्तक याद आई 'जार की भूख'। जब सुबह मैंने वह रसोंई घर छोड़ा तो छः बज चुके थे। मैं सोच रहा था कि ऐसे लोगों से मिलकर मन को चाहे शांति न मिले पर सोचने को काफी मिल जाता है।

इसी प्रकार की बातें मेरे एक मजदूर मित्र ने कहा था। उसने कहा था, 'मेरे मैक्सिम! इस सारी विद्वता के अर्थ क्या हैं? एक आदमी को चाहिए केवल रहने को बीता भर जगह और जब चाहे तब प्यार करने को एक स्त्री। अगर तुम विद्वानों की तरह सोच रहे हो तो तुम हमारे बीच से अलग हो जाओगे।' कहते हुए उसने अपनी सिगरेट नदी में फेंक दी। फिर बोला,

'विद्वता सदा संघर्षों की पक्षपाती रही है। देखो न ईसा के साथ क्या कम संघर्ष थे! मजदूरों की बातें करेंगे जो केवल काम और काम के लिये औजार चाहते हैं। वे विद्रोह कर नहीं सकते। तुम्हीं सोचो यदि तुम अधिक जिम्मेदारी न लो तो तुम्हारा जीवन अपने आप सादा हो जायगा। सचाई यह है कि हमलोग आवश्यकताओं से घिरे रहते हैं। विद्वान् को मैं इससे दूर पाता हूँ।'

'लेकिन हम रूसी ...।' मैं पूछ रहा था कि वह बोल उठा, 'मुझसे डरो मत। क्योंकि जो मैं कहता हूँ बिल्कुल ठीक है। हमारी ही बात लाखों व्यक्ति सोचते हैं लेकिन उसे व्यक्त नहीं कर पाते।'

इसके पूर्व इस व्यक्ति ने कभी भी विद्रोही भावना व्यक्त नहीं की थी। लेकिन उससे बातें करके मैं सोचने को विवश हो गया। मैं यह सोचने लगा कि यदि ऐसा हो कि कम से कम काम और अधिक से अधिक आनन्द—तो कितना अच्छा हो जाय।

तीन

डेरेनकोव की दूकान से अधिक आमदनी न होती। अक्सर रोटी खाते हुए अपराधी की तरह हँसकर वह कहता, 'हमें कोई रास्ता खोजना ही चाहिए।'

कई बार मैंने उससे पूछा, 'तुम इस पुस्तकालय का क्या करोगे?'

उसका उत्तर बहुत टालू होता, 'भला कौन पढ़ना या कुछ जानना चाहता है?'

'लेकिन तुम तो जानते हो कि कौन कितना चाहता है।'

मैंने अनुभव किया कि लोग अच्छी चीजें न पढ़कर मौज की चीजें पढ़ना चाहते हैं जिससे घंटे दो घंटे के लिये वे अपने कठिन जीवन से नाता तोड़ सकें। लोग जानना नहीं चाहते बल्कि अपने जीवन की मुसीबतों को भूलने का उपाय चाहते हैं। मैंने अनुभव किया कि ऊटपटांग साहित्य में लोगों की दिलचस्पी अधिक है।

डेरेनकोव की राय थी कि एक नानबाई की दूकान ही खोली जाय। मुझे याद है कि उसने कितने उत्साह से यह हिसाब लगाया था। पैंतीस प्रतिशत का मुनाफा इस काम में होगा। मैं उसका सहयोगी होता और उसके 'परिवार का व्यक्ति' होने के कारण यह भी देखने का काम था कि कोई आंटा, अंडे, मक्खन या अन्य चीजें न चुरावे।

इसी बहाने उस गंदे स्थान से हटकर हमलोग साफ पर छोटे से घर में आये। मेरे साथ काम करनेवाला एक व्यक्ति था, भूरे बालों वाला, नाटे कद का, नुकीली दाढ़ी और धुंआ सा चेहरा।

वह बेहया चोर भी था। पहली रात को ही उसने दस अंडे, तीन पौंड आंटा और एक डबल रोटी चुराई।

'यह सब क्यों किया?'

'एक छोटी लड़की के लिये।' अपनी नाक सिकोड़कर उसने कहा। 'बहुत प्यारी, छोटी सी लड़की।'

मैंने उसे चोरी न करने की बहुत शिक्षा दी। लेकिन मेरी बातों का कोई प्रभाव न पड़ा। उसी रात को खिड़की के पास लेटकर वह खीझ रहा था, 'वाह, क्या मजाक है, मेरे उम्र का एक तिहाई यह छोकरा! एक दिन में ही मेरा उस्ताद बनना चाहता है। मुझे शिक्षा देता है!'

फिर मुझसे कहा, 'इसके पहले कहाँ काम करते थे? लगता है कि पहले कहीं तुम्हें देखा है। क्या सोमिओनोव के यहाँ? याद है? नहीं! तो शायद तुझे कभी सपने में देखा होगा।'

मैंने देखा कि सोने में वह बहुत तेज था। किसी भी करवट चाहे जितनी देर वह सो सकता था। सोते समय उसके चेहरे पर अजीब अजीब भाव आते थे। वह सपने भी खूब ही देखता था। उसने बिलकुल सच ही बताया था, 'मैं सपने में धरती के नीचे के दृश्य देख लेता हूं। वहाँ मशीनें, सन्दूकें, लोहे के बर्तन रुपयों से भरे पड़े हैं। एक बार एक पूरी ट्रङ्क चाँदी से भरी हुई देखा था। एक बार जागा तो जाकर उसे खोदा। लगभग दो फुट खोदा, तो जानते हो क्या पाया? कोयला और

कुत्ते का कंकाल। उसके नीचे से औरत की आवाज आ रही थी।'

इस तरह की बातें बताते समय भी ईवान लेंटोनिन हँसता न था। हाँ जब वह मुस्कुराता तो नाक की शक्ल बदल जाती और नथुने फैल जाते। उसके सपनों में कोरी कल्पना कम होती।

शहर में एक चाय के सौदागर की लड़की की आत्महत्या की बड़ी सनसनी थी क्योंकि उसकी बिना प्रेम की शादी कर दी गई थी और उसने शादी के पश्चात् फौरन ही आत्महत्या कर ली थी। हजारों जवान उसके शव के साथ गये। कुछ युवकों ने उसकी कब्र पर भाषण देना चाहा, तो पुलिस को भीड़ को भगाना पड़ा। रास्ते में उत्तेजित विद्यार्थी समूह की बातें हम लोगों को घर के भीतर तक सुनाई पड़ रहीं थीं।

इस घटना पर भी लेटोनिन की राय थी, कि लड़की ने बेवकूफी की। उसे हमारी दूकान की स्थिति का ठीक-ठीक शायद पता न था। दोनों लड़कियाँ, डेरेनकोव की बहन और उसकी एक सखी, बड़े-बड़े गुलाबी होठों वाली लड़की सदा ही वहाँ रहतीं लेकिन दूकान का काम उनके योग्य न था अतः वे सदा ही किताबें पढ़ती रहतीं। विद्यार्थी आते रहते। कमरे में सदा ही फुसफुसाहट और अनन्त बहस होती रहती। डेरेनकोव भी कभी ही कभी आता। तब मैं ही दूकान का एक तरह से मैनेजर था।

'क्या तुम मालिक के रिश्तेदार हो?' लेटोनिन ने पूछा, 'या तुम उसके दामाद होनेवाले हो? नहीं! यह नहीं होगा। और ये विद्यार्थी यहाँ हर समय क्यों घुसे रहते हैं? सम्भव है, इन लड़कियों के पीछे पड़े हों। लेकिन नहीं, लड़कियों में कोई अधिक आकर्षण नहीं है।'

अक्सर सुबह, पाँच या छः बजे के लगभग एक छोटी सी लड़की दूकान के पास आती। वह पुकारती 'ईवान।'

एक रुमाल से वह सिर ढँके रहती। मैं ईवान को जगाकर उठाता। वह पूछता, 'कैसे आई?'

'यों ही।'

'रात को नींद आई?'

'हाँ।'

'कोई सपना देखा?'

'याद नहीं।'

अब तक शहर में खामोशी ही रहती। केवल कहीं-कहीं से कभी-कभी गौरैयों की आवाज आ रही थी। उगते हुये सूर्य की मुलायम किरणें खिड़की पर आ रही थीं। उसे देखकर ईवान कहता,

'पेरकोव, यही समय है, कुछ मिठाइयाँ छाँट कर निकालो।'

मैं लोहे की थाली निकालता और वह बिना किसी संकोच के ही आठ दस केक या अन्य वस्तुयें उसको दे देता।

जब वह चली जाती तो अपनी शान में वह बेतरह बातें बनाता। दिन चढ़ते चढ़ते मैं एक दर्जन रोटियाँ लेकर डेरेनकोव की दूकान की ओर भागता। वापस आकर केक आदि लेकर विद्यार्थियों के होस्टल जाता। जहाँ लड़के नास्ता करने को तैयार रहते। वहाँ जब मैं पैसों के भुकतान का इन्तजार करता होता तो सुनता कि टाल्सटाय पर कोई बहस चल रही थी। गुसेव नामक एक प्रोफेसर टाल्सटाय का बहुत विरोधी था।

सप्ताह में एक बार प्रोफेसर वेखतरेव भी भाषण देते। ये डाक्टरी के प्रोफेसर थे और उदाहरण में ये अपने मरीजों को ही पेश करते। आज इन्होंने जिस मरीज को बुलाया उसकी लंबाई

देखकर मैं हँसी न रोक सका। क्षणभर रुककर उसने मुझे गौर से देखा।

मुझे लगा जैसे उसकी आँखें मेरे कलेजे में छेद कर देंगी। डाक्टर बेखतरैव अपने मरीज से बातें कर रहे थे। वह मरीज पागल था। डाक्टर और मरीज में जो बातें हुईं उनमें मुझे बहुत आनन्द आया। विद्यार्थी ध्यान लगाए सब सुन रहे थे। उसी रात घर आकर मैंने एक कविता एक पागल व्यक्ति पर लिखी—नाम रखा—'मालिकों का मालिक, खुदा का सलाहकार व मित्र!' उस पगले की याद मेरे लिए एक बोझ बन गई।

रात और दिन काम के कारण एक रहते। अतः मैं दोपहर को सोता! जब रोटियाँ सेंकने के लिए चूल्हे में रख दी जातीं तो मैं पुस्तकें पढ़ता। यह जानकर काम में मैं काफी चतुर हो गया हूँ—ईवान आलसी होता गया। वह कहता, 'साल दो साल में तुम पूरे नानबाई हो जाओगे। लेकिन तुम अभी छोटे हो इसलिये तुम्हें अभी कोई महत्व न देगा न तुम्हारी बात ही सुनेगा।' वह मेरा किताब पढ़ना भी बुरा मानता। वह समझाता कि सोना अधिक अच्छा है पर कभी उसने यह न पूछा कि मैं क्या पढ़ता हूं।

उसका सारा समय सपने देखने या उस लड़की के साथ बीतता। जब कभी वह रात को आती तो उसे लेकर वह आटे के बोरों वाले कमरे में ले जाता और अगर सरदी होती तो मुझी से कहता, 'क्या आधे घन्टे के लिए कहीं जाओगे?'

मैं उन्हें अकेला छोड़ देता परन्तु सोचता कि प्रेम का जो रूप पुस्तकों में पढ़ा है उससे वास्तविकता कितनी भिन्न है।

डेरेनकोव की बहन दूकान के पीछे के कमरे में रहती थी। उसकी केटली गरम करने का काम मेरा था। मैं उससे अब भी

कतराता था क्योंकि मेरे मन में उसकी बच्चों की सी आंखें उसी तरह चुभती थीं।

मैं किसी काम से घबराता न था। मैं जब सवा मन का आँटे का बोरा उठाता तो ईवान कहता, 'तुम्हारे बहुत ताकत है परन्तु इसका कोई उचित उपयोग नहीं होता।'

अब तक मैं काफी किताबें पढ़ गया था। फलस्वरूप मेरे मन में कविता के प्रति एक मोह पैदा हो गया था और मैं अपने रूखे शब्दों में अपने मन के भावों को प्रकट किया करता था। डेरेनकोव की बहन असाधारण रूप से कोमल थी—शरीर से भी, शब्दों से भी। वह हर समय हँसा करती। मैं समझता कि वह मुझपर से वह असर हटाना चाहती है जो मुझ पर उसे पहली बार देखकर पड़ा था। अक्सर वह मुझसे पूछती, 'तुम क्या पढ़ रहे हो?'

मैं कुछ भी उत्तर न देता यद्यपि मन में होता कि प्रश्न करूँ कि तुम क्यों जानना चाहती हो?

एक बार ईवान ने अपने प्रेम की चर्चा करते हुए कहा, 'तुम मूर्ख हो। यहाँ प्राण देते हो, क्यों नहीं मालिक की बहन से शुरू करते?'

मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसे धमकाया कि इस प्रकार की बातें अगर वह फिर कभी करेगा तब मैं लोहे से उसका सिर फोड़ दूंगा। मैं उस कमरे में चला गया जहाँ आँटे के बोरे रखे थे। पीछे से ईवान लेटोनिन कह रहा था कि मैं उस पर क्यों नाराज हो रहा हूँ। पागलों की तरह, तुम्हें केवल पुस्तकों का ज्ञान ही तो प्राप्त है।

कमरे में चूहे आवाज कर रहे थे। बाहर हल्की सी बूंदा-बूंदी हो रही थी। दूकान में वह लड़की थी जो डेरेनकोव के पास आती थी। इस समय आधी रात से ज्यादा समय बीत

चुका था। सामने के कमरे की खिड़की से हल्का हल्का गाना सुनाई पड़ रहा था। मेरे मन में ख्याल आया कि मेरिया मेरी बाहों में है जैसे ईवान की बाहों में वह लड़की होगी।

इस कल्पना से जाने क्यों मैं खुद घबड़ा गया। सामने के कमरे की खिड़की से भीतर देखने के लिए मैंने झाँका। हल्के परदे पड़े थे—नीली रोशनी जल रही थी। खिड़की की तरफ मुँह करके वह लड़की बैठी लिख रही थी। उसकी आधी मुंदी आँखें मुस्कुरा रहीं थीं। धीरे से उसने पत्र को मोड़कर लिफाफे में रखा। अपनी जीभ से किनारे को गीलाकर उसे चिपकाया और टेबिल पर रखा। उसकी बड़ी उँगली मेरी छोटी उँगली से भी पतली थी।

फिर उसे उठा लिया। खोला और पढ़ा। दूसरा लिफाफा लेकर उस पर नाम लिखा। फिर उसे अपने सिर के ऊपर ले जाकर हिलाया, फिर रख दिया और कमरे के दूसरे किनारे पर जहाँ उसकी खाट थी गई। अपनी ब्लाउज उतार दी, उसकी बाहें बहुत गोल थीं, सुन्दर सी। फिर उसने लैम्प को उठाया और बुझा दिया।

मैं सदा सोचा करता था कि यह लड़की अकेली कैसे रहती होगी, लेकिन लाल बालों वाले उस लड़के को मैं बिल्कुल पसन्द न करता था जो अक्सर आता था।

तभी मुझे ईवान ने पुकारा।

दूकान का काम इतना चल निकला था कि डेरेनकोव ने एक बड़ी जगह तलाश की और एक अन्य सहकारी भी रखने का निश्चय किया। मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे बहुत अधिक काम का बोझ उठाना पड़ता था। 'नई दूकान में तुम प्रधान कार्यकर्ता होगे।' ईवान ने कहा, 'और मैं मालिक से कहूँगा कि तुम्हें कम से कम दस रूबल प्रति मास और मिलें।'

यह मैं जानता था कि प्रधान मैं रहूँगा तो उसी का कितना लाभ होगा। काम में उसकी बिल्कुल दिलचस्पी न थी। मैं तो काफी काम भी करता था, पढ़ना अवश्य कम हो गया था।

ईवान ने कहा, 'यह बहुत अच्छा है कि तुमने पढ़ना छोड़ दिया। लेकिन यह कैसे सम्भव है कि तुम्हें सपने न आते हों। शायद तुम भूल जाते हो या बताना न चाहते हो। परन्तु सपने की बातें बताने में कोई बुराई नहीं है।

अवश्य ही वह व्यक्ति मेरे प्रति अच्छे व्यवहार ही प्रदर्शित करता था। मालिक का कृपापात्र हूँ इसका उस पर अधिक असर न था।

नानी की मृत्यु हो गई। यह सूचना मुझे उसके दफनाने के सात सप्ताह बाद ममेरे भाई के पत्र से मिली। उसके पत्र की टूटी-फूटी भाषा से मुझे ज्ञात हुआ कि किस प्रकार वह भीख मांगते समय गिरजाघर की सीढ़ी पर गिर पड़ी थी। उसकी टांगें टूट गईं थीं। बाद में ज्ञात हुआ कि किसी ने उसे डाक्टर को भी नहीं दिखाया। चिट्ठी में लिखा था, 'हमलोगों ने उसे कब्रगाह में गाड़ दिया। हमलोगों के अलावा वहाँ कई भिखारी भी थे जो चिल्ला रहे थे। नाना तो पदहवासों की तरह हर समय कब्र के पास की झाड़ी में बैठा रोया करता है। शायद वह भी अब शीघ्र ही मरेगा।'

मैं रोया नहीं, लेकिन मुझे याद है कि बर्फीली हवा की तरह यह खबर मेरी आत्मा को पत्थर बना गई थी। मेरा बहुत जी चाहा कि किसी से मैं नानी की ही बातें करता कि वह कितनी दयालु थी और सबों को माँ का प्यार देती थी। उसकी याद

कई दिनों तक आती रही पर कोई ऐसा न था जो मुझे सांत्वना देता सो मेरा सन्ताप अपने आप मेरे मन में जलकर सूख गया। कई बरसों बाद, चेखव की एक बहुत अच्छी कहानी पढ़ते समय वे यादें फिर हरी हो गईं जिसमें एक गाड़ीवान अपने घोड़े से अपने बेटे की मृत्यु की बातें बताकर अपना जी हल्का करता है। मुझे कष्ट हुआ कि मेरे पास घोड़ा या एक कुत्ता भी नहीं जिसे मैं अपना दुख सुना सकूँ। न तो मुझे दूकान के चूहे ही मिल रहे थे जिन्हें सुनाकर जी हल्का करता।

इन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि निखिफोरिच नामक सिपाही मेरा पीछा छाया की तरह करने लगा। वह बहुत लम्बा-चौड़ा व्यक्ति था। चाँदी के तारों की तरह उसके बाल सिर पर खड़े रहते थे। चेहरे पर साफ बनी हुई छोटी छोटी दाढ़ी थी। उसने कहा,

'मैंने सुना है तू खूब पढ़ता है। आखिर कौन सी किताबें पढ़ता है? महात्माओं की जीवनियाँ या बाइबिल।'

मैंने कहा कि दोनों ही पढ़ता हूँ। इससे उसे आश्चर्य और निराशा हुई।

'यह पढ़ना तो ठीक है पर क्या तुमने कभी काउन्ट टालसटाय की किताब भी पढ़ी है?'

मैंने टालसटाय की पुस्तकें अवश्य पढ़ी हैं पर ऐसी कोई नहीं जिससे पुलिस का आदमी पूछताछ करे। "हाँ वह बहुत मामूली किस्म की किताबें हैं जिसे कोई भी लिख सकता है।"

पुलिस ने पूछा, 'मैंने सुना है कि उसने कुछ ऐसा लिखा है जिसे पढ़कर लोग पादरियों के विरोधी बन जाते हैं। अगर ऐसी कोई किताब पकड़ी जाती है तब ....।'

मैंने ये भाव उसकी पुस्तकों में अवश्य पाये थे फिर भी वे पढ़ने में बहुत रूखी सूखी पुस्तकें थीं। फिर भी मैं पुलिस के आदमी से बातें करने का ढङ्ग जानता था।

इस प्रकार की थोड़ी बहस के बाद उस बूढ़े सिपाही ने मुझे अपने घर में चलकर एक प्याला चाय पीने की दावत दी।

उसके मन का रहस्य मेरे लिये कोई रहस्य न था। मैं यह जानता था कि चाहे जितनी विनय से उसके दावत को इन्कार किया जाय, उसका शक मुझ पर और दूकान पर बढ़ेगा ही।

मैं उसका मेहमान बना। जिस स्थान पर वह रहता था उसका एक तिहाई भाग तो चूल्हे ने ढँक लिया था, बाकी भाग के आधे हिस्से में दो खाटें थीं जिन पर सूती छींट का परदा पड़ा था और कई तकिए दिखाई पड़ती थीं। बाकी भाग में एक मेज, दो कुर्सियाँ और खिड़की के पास एक बेंच थी, जिस पर निखिफोरिच इस प्रकार बैठ गया कि रोशनी और हवा दोनों ही रुक गईं। मेरे बगल में उसकी स्त्री बैठी जो लगभग बीस वर्ष की थी—उसकी छातियाँ अधिक उभरी थीं, ओंठ खूब लाल थे और आखों के देखने से बहुत बीभत्स दृश्य उपस्थित होता था।

'मेरी धर्म की संतान सेचेता, मैंने सुना है कि अक्सर तुम्हारे दूकान जाती है। वह छोटी सी लड़की।' सिपाही ने कहा। 'स्त्रियाँ सभी द्वेषी होती हैं।'

'सभी !' उसकी पत्नी ने पूछा।

'इसमें कोई झूट की बात नहीं, सभी होती हैं। द्वेषी भी हैं—चाहे कोई वेश्या हो या रानी।'

उसकी स्त्री उसकी बातें सुन रही थी परन्तु मेज के नीचे उसके पाँव मेरे पावों को धक्का दे रहे थे। निखिफोरिच लगातार नए नए उदाहरणों से स्त्रियों के चरित्र की बात कहता जा रहा था।

'उदाहरणार्थ, एक विद्यार्थी है प्लेतनेव।'

उसकी स्त्री ने सजग हो कहा, 'सुन्दर तो वह नहीं पर भला है।'

'कौन ?'

'वही मिस्टर प्लेतनेव।'

'उसे मिस्टर मत कहो। पढ़ाई समाप्त करने के बाद मिस्टर कहाने योग्य होगा। और वह भला है के क्या माने ?'

'वह युवा है और खुशदिल !'

'बन्दर, पिल्ला !'

'जबान सम्हाल कर बोलो !' स्त्री ने डाँटा।

लेकिन स्त्री की बात न सुनकर उसने मुझसे कहा, 'तुम प्लेतनेव से परिचय करो। वह अच्छा आदमी है।'

मैंने अनुमान किया कि उसने अवश्य ही मुझे कभी न कभी प्लेतनेव के साथ देखा होगा। सो मैंने कहा, 'मैं उसे जानता हूँ।'

'सचमुच !'

यह साफ था कि इसे सुनकर वह तनिक घबड़ाया। मैं जानता था कि प्लेतनेव कुछ परचे छापता है।'

टेबिल के नीचे मुझे अपने पावों से छेड़ते हुए उस स्त्री ने उस बूढ़े को चिढ़ाया। क्षण भर चुप रहकर उसने कहा,

'हम बादशाह की एक मकड़ी से तुलना कर सकते हैं।'

'खुदा के लिये क्या कह रहे हो।' स्त्री ने डाँटा।

'तू मुँह बन्दकर ! राक्षसिन ! मैं जो चाहूंगा कहूँगा। तू घोड़ी है। चाय का प्रबन्ध कर।' फिर मुझसे कहा, 'मकड़ी के धागे की तरह अदृश्य धागा। इसी धागे में बादशाह से लेकर हमारे जैसा सिपाही तक सभी बँधे हुये हैं। इसी धागे पर सारा जार का साम्राज्य टिका है। और जनता की मदद के

नाम पर रानी पादरियों को यह धागा तोड़ देने को घूस दे रही है।'

फिर मेरी तरफ जरा घूमकर उसने कहा, 'मैं यह क्यों कह रहा हूँ जानते हो? तुम चतुर आदमी हो। अपने बूते पर जीवन काट रहे हो। लेकिन विद्यार्थी लोग दिन रात वहाँ डेरेनकोव के घर में क्यों घुसे रहते हैं? एक दो होते तो मैं समझ सकता था पर इतने अधिक, वाह! मुझे विद्यार्थियों से कुछ नहीं कहना। आज वे विद्यार्थी हैं कल अफसर होंगे। विद्यार्थी अच्छे होते हैं पर किसी भी विद्रोह में पहले कूदते हैं— जार के विरोध में आये तो कानून के विरोध में आवेंगे— समझे!' आगे वह बोल न सका क्योंकि दरवाजा खुला और एक नाटे कद का लाल नाक वाला बूढ़ा व्यक्ति हाथ में एक वोदका की बोतल लिए हुए आया जिसका असर उस बूढ़े पर प्रत्यक्ष था।

'मेरा ससुर!' निकिफोरिच ने परिचय दिया। थोड़े ही मिनटों बाद मैं विदा हुआ। दरवाजा बन्द करते समय उसकी स्त्री तनिक दुखी दिखी। उसने धीरे से कहा, 'देखो न बादल कितने लाल हैं जैसे आग लगी हो।' लेकिन उस समय केवल बादल का एक टुकड़ा ही था जो भी सुनहला था।

कुछ भी हो उस पुलिस के आदमी ने सरकारी कार्य प्रणाली का ठीक ठीक ब्योरा मुझे दिया। शीघ्र ही उसके बताये गये मकड़ी के जाल का मैं हर जगह अनुभव करने लग गया।

उस रात जब दूकान बन्द हो गई तब डेरेनकोव की बहन ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। और मुझसे पूछा जैसा कि उसे पूछने की आज्ञा मिली थी कि पुलिस के आदमी से मेरी क्या बातें हुईं? मैंने जब सब बताया तो जैसे उसे विश्वास न

हुआ और वह 'डियर, डियर' करके कमरे भर में चुहिया की तरह यों नाचती रही जैसे उसे विश्वास न हो रहा हो। उसने पूछा।

'क्या ईवान तुम्हें सताता है? क्या उसकी वह छोकरी भी निखीफोरिच की रिश्तेदार नहीं है? हम जरूर इसका...... उसे गोली मार दूँगी।'

पता नहीं क्यों गोली मारने का विचार मुझे बहुत अच्छा न लगा।

'अपने प्रति सतर्क रहना।' मुझे उसने आगाह किया। और अपनी तेज आँखो से मुझे सदा की तरह परेशान करती रही। यह बातें बन्द करके मुझे देखकर, और अपने पीछे दोनों हाथ बाँधकर उसने मुझसे अजीब भाव भंगिया में पूछा. 'तुम इतने उदास क्यों हो?'

'मेरी नानी मर गई है!'

मेरे उत्तर से उसे हँसी आ गई। मुस्कुरा कर उसने पूछा 'क्या तुम बहुत प्यार करते थे उसे?'

'हाँ बहुत अधिक! और कुछ पूछना है?'

'नहीं!'

वापस आकर मैं अपनी कविताओं के साथ जुट गया। उसकी एक पंक्ति अब भी याद है—'तुम जो दिखाई पड़ती हो, वास्तव में वह नहीं हो।'

यह निश्चय हुआ कि दूकान में विद्यार्थियों का आना जितना भी कम किया जा सके, किया जाय। जब वे नहीं आते तो मुझे पढ़ी हुई पुस्तक के कठिन अंश समझने में दिक्कत पड़ने लगी। मैंने सभी प्रश्न नोट बुक में नोट कर लिये। एक बार जब मैं सो रहा था तब ईवान ने मेरी नोट बुक पढ़ ली। मुझे जगा कर उसने पूछा—'यह तुमने क्या लिखा

है—गैरिवाल्डी ने राजा का पीछा क्यों न किया? यह गैरिवाल्डी कौन है? और इसे राजा का पीछा करने की आज्ञा मिली कब थी?'

उसके नोट बुक को चूल्हे में डाल दिया फिर कहा, 'वाह क्या मजाक है! तुम किताबी कीड़े—यही मूर्खता करते रहते हो। सारातोभ में इस प्रकार के किताबी कीड़ों को जेल भेजा गया था। हाँ……पाँच वर्ष पूर्व। क्या समझते हो कि तुम पर निखिफोरिच की निगाह नहीं है। देखो महाशय, राजा का पीछा करना छोड़ दो!'

उसका व्यवहार तो मित्रता का था इसलिए जैसा मैं चाहता था उत्तर न दे सका। क्यों कि कुछ दिन पूर्व ही मुझे यह आदेश मिला था कि उससे अधिक गड़बड़ बातें न की जाएँ!

— ——

—चार—

उन दिनों एक पुस्तक सामूहिक रूप से पढ़ी जा रही थी और उस पर बहुत उत्तेजनापूर्ण बहस भी हो रही थी। मैंने लावरोव से एक प्रति मांगी पर उसने कहा, 'एक भी प्रति पाना असम्भव है। लेकिन शीघ्र ही एक सामूहिक पाठ होगा तो उसमें तुम्हें शामिल करूँगा।'

और आधी रात को आगे आगे लावरोव और लगभग पचास क़दम पीछे मैं चल रहा था। जिस खेत को हम पार कर रहे थे वहाँ काफी सन्नाटा था। हम लोग पूर्व निश्चय के अनुसार खामोशी से आगे बढ़ रहे थे। जमीन में हम दोनों की छाया साफ़ दिखती थी। एक बाग के दरवाजे पर वह रुका और बढ़कर मैं उसके पास पहुंच गया। आगे बढ़कर एक घर की दीवाल की खिड़की पर हमने दस्तक दी। उसे एक दाढ़ी वाले बूढ़े आदमी ने खोला जो वहीं अँधेरे में खड़ा था।

'कौन है?' उसने पूछा।

'हमें जैक ने भेजा है।'

'तो आ जाओ।'

उस घटाटोप अंधकार में भी कमरे में कई आदमियों की उपस्थिति का पता लगता था। हल्की सी फुसफुसाहट सुनाई पड़

रही थी। तभी किसी ने मेरे चेहरे के सामने दियासलाई जलाई। दीवाल के पास कई काली छायाएं दिखाई पड़ीं।

'सब आ गये हैं ?'

'हाँ।'

'परदे गिरा दो और यह अन्दाज करलो कि कोई रोशनी न आ सके।'

किसी ने डाँटकर पूछा, 'यह किसका सुझाव था कि इस प्रकार के बेकार घर में मीटिंग हो।

'श ······ श ······ चुप !'

कोने में एक लैम्प जलाया गया। दिवाल से लगकर जमीन पर तीन व्यक्ति बैठे थे। खिड़की से लगकर लम्बे बालोंवाला, दुबला व्यक्ति बैठा था। उसे और एक दाढ़ी वाले अन्य व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी को मैं जानता था। धीमी आवाज में उस दाढ़ीवाले व्यक्ति ने कहा, 'मैं परचा पढ़ूँगा।'

मुझे सभी बातें धीरे से कहने तथा सब कुछ गुप्त रखने की बात से बहुत रोमांच हुआ। वह व्यक्ति धीरे-धीरे पढ़ रहा था कि किसी ने कोने से कहा, 'बेकार है।'

फिर बहस होने लगी—और फुसफुसाहट में पढ़ने वाले की आवाज खो गई। खिड़की पर से एक ने कहा, 'क्या यही पढ़ाई है ?' यह लम्बे बाल वाले युवक ने कहा था। इससे सभी चुप हो गये, केवल पढ़ने वाले की आवाज सुनाई पड़ती थी। दियासलाइयाँ जली और कई लोगों के चेहरे के सामने जलती सिगरेट के लाल निशान से उनकी आधी मुंदी आँखें दिखाई पड़ रहीं थीं।

पढ़ाई बहुत देर तक चलती रही। मुझे बहुत कष्ट लगा। यद्यपि बहस के बीच में वे जिस प्रकार [illegible] और तीखे शब्दों का प्रयोग कर रहे थे वे मुझे बहुत अच्छे लगे।

तभी एकाएक पढ़ने वाले की आवाज़ रुक गई। कमरे भर में क्रोध की बातें होती रहीं। थोड़ी देर बाद खिड़की पर से वही युवक बोला, 'बेकार की बहस से अच्छा है काम की बातें करें।'

मुझे भी बहस से दिलचस्पी न थी। तभी खिड़की से झुककर उस व्यक्ति ने पूछा, 'क्या तुम पेश्कोव हो, नानबाई की दूकान से ? मैं फेदेसेव हूँ। हमारा परिचय हो जाना चाहिये। यहाँ अब कुछ रखा ही नहीं है। यह तो इसी तरह बड़ी देर बहस चलती रहेगी। हमें अब चलना चाहिये।'

फेदोसेव युवकों की एक संस्था का संचालक था। उसका पीला पर आकर्षक चेहरा और गहरी तेज आँखों ने मुझे आकर्षित किया। खेत पार करते समय उसने मुझसे पूछा कि मेरे मित्रों में कितने और कौन कौन लोग हैं, मैंने कौन कौन सी किताबें पढ़ी हैं, मेरा कौन समय खाली रहता है। 'मैंने तुम्हारी दूकान के बारे में सुना है। इसें आश्चर्य है कि केक ही सेंक, सेंक कर तुम अपनी जिन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो ?'

मैंने बताया कि मैं तो खुद ही इससे ऊबा हुआ हूं। उसने बहुत प्रेम से मुझसे हाथ मिलाया, जैसे मेरी बात सुनकर वह खुश हुआ हो। मुझसे उसने बताया कि तीन सप्ताह के लिये वह जा रहा है। जब वह आवेगा तो खबर देगा तब हम लोग मिलेंगे।

दूकान बड़ी तो हुई लेकिन मुझे अच्छा न लगा। नए घर में आने पर मेरा काम बहुत बढ़ गया। केक आदि तैयार करने के अलावा स्कूलों और लड़कियों के हास्टल में मैं ही चीजें पहुँचाने भी जाता। इतनी अधिक लड़कियों के बीच मुझे अजीब

सा लगता। उसके प्रति मेरा आकर्षण बढ़ा तो मुझे लगा जैसे मकड़ी का वही अदृश्य जाल यहाँ तक भी फैल गया है।

एक बार एक बहुत उन्नत वक्षस्थलों वाली स्त्री ने मुझे रोक कर कहा, 'यह पत्र दे देना मैं तुम्हें दस कोपेक दूंगी।'

मेरे उत्तर की परीक्षा में खड़ी वह अपने ओंठ काट रही थी तथा उसकी काली बड़ी, भावुक आँखों में आँसू छलछला रहे थे। मैंने दस कोपेक लेने से तो इन्कार कर दिया लेकिन पत्र एक जज के बेटे को दे आया। बड़ी असावधानी से आधा रूबल की रेजकारियाँ गिनकर उसने मुझे दिया लेकिन जब मैंने स्वीकार न किया तो उसे अपने पाजामें के जेब में वापस रख लिया लेकिन लापरवाही के कारण पैसे जेब में न जाकर जमीन पर बिखर गये। उसने पैसे बटोरते हुए तनिक घबराहट में कहा, 'अब मैं क्या करूँ? अच्छा मैं सोचूँगा। नमस्कार!'

वह क्या करेगा या क्या सोचेगा—मैं नहीं समझ पाया परन्तु उस लड़की पर मुझे तनिक दया ही आई। कुछ दिनों बाद अचानक वह स्कूल से गायब हो गई। पन्द्रह वर्ष बाद जब उसे हमने फिर देखा तो वह जीवन के प्रति बहुत क्रूर हो गई थी।

सुबह केक देने के बाद मैं तनिक झपकियाँ ले लेता था। रात को मुझे केक बनाने में मदद देनी पड़ती थी और बनने के पश्चात सिनेमागृह के सामने की दूकानों में अर्धरात्रि के पूर्व ही पहुंचाना पड़ता था। उसके बाद कहीं मैं दो या तीन घंटे को आँखें मूँद पाता था। एक प्रकार से यही मेरा जीवन था।

मेरे मित्रों में मिल के मजदूर, कोस्तोवनिकोव, और अलाफुसोव थे और एक बहुत बूढ़ा बुनकर निक मायोर जो

लगभग रूस की सभी कपड़े विनने की मिलों में काम कर चुका था।

'इस धरती पर मैं अपनी जीवन यात्रा के सत्तानवें वर्ष में हूँ मैक्सिक।' उसने कहा। उसका उपनाम 'जरमन' रखा था। क्योंकि मूंछे वह जरमनों की तरह रखता था। 'मैं सरकस पसन्द करता हूं। सोचो न कि घोड़ों को, जानवरों को कितना सिखाया जाता है!'

एक वार कहीं उसने झगड़ा कर लिया था तभी मेरी उसको भेंट हुई था। उसे दो घूंसे पड़ चुके थे। मैंने वीच वचाव किया था। 'तुम्हें क्या चोट आई है?' मैंने पूछा।

'नहीं नहीं, लेकिन तुम्हें इतनो मुहब्बत क्यों हो रही है?'

इस प्रकार हमारी मित्रता शुरू हुई फिर उसने कहा, 'देखो, तुम्हारे वदन में ऊपर एक सिर भी है। उसका प्रयोग किया करो। समझे!

जैक शापोश्नीकोव नामक एक वढ़ई से परिचय था। वह गिटार वहुत अच्छा वजाता था। वह कहता, 'मैं खुदा में विश्वास नहीं करता। मैं न तो कुछ सोचता हूँ न करता हूँ। मैं अच्छा आदमी भो नहीं हूँ। खुदा शायद मेरे जोवन के दुःखों को नहीं जानता या उसमें इतनो हिम्मत नहीं कि मेरी मदद कर सके। या तो खुदा को संसार की हर चीज मालूम न रहती हो या हर शक्ति उसमें न हो या वह दयालु न हो या यह सव धोखा हो, जिन्दगी भी एक धोखा हो!

जैक के यहाँ से आते समय खजोव ने कहा 'मैंने इस प्रकार खुदा का विरोधी दूसरा न देखा। यह आदमी वहुत दिन नहीं रह सकता! वेचारा कितना नाराज था?'

'लेकिन वातें मजेदार कहता था।'

बहुत जल्दी जैक से उसकी गहरी दोस्ती हो गई। मैं उसे अब अक्सर बहुत बेचैन पाता। मैंने उसे 'जार की भूख' पढ़ने को दिया, जिसे पढ़कर उसने कहा, 'अक्षरशः ठीक ही लिखा है।'

सर्वप्रथम बार उसने एक लीथो द्वारा छपा परचा देखा जिसे देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ। उसने पूछा, 'यह किसने भेजा, कितना सुन्दर लिखा है। उसे धन्यवाद भेज दो।'

नई बातें सीखने-जानने को वह जैसे बेचैन रहता। जैक की सनक की बातों और मेरे किताबी ज्ञान दोनों पर वह बराबर ध्यान देता। फिर अट्टहास करके वह कहता, 'आदमी ने भी क्या दिमाग पाया है!'

उसकी आंखें कमजोर थीं। इससे वह पढ़ता कम था लेकिन उसकी बुद्धि को देखकर आश्चर्य होता था। एक दिन उसने जैक से पूछा, 'तुम हर समय खुदा के विरोध में ही क्यों सोचा करते हो?'

जैक ने बड़े इतमिनान से उत्तर दिया, 'मैं क्या करूँ। बीस वर्ष से अधिक मैं खुदा पर विश्वास करता रहा। मैं तब खुदा की बातों पर बहस भी नहीं करता था।'

रवजोम तातार जिले का रहने वाला था। मित्रता तो चलती रही परन्तु मेरे पास कोई अपनी जगह न थी इससे मित्रों को मैं कभी दावत न देता और वे मेरे पास कभी न आते। कुछ सिपाही मेरे ग्राहक थे। वे अपने कप्तान के लिए और कभी कभी अपने लिये भी केक व अन्य वस्तुएँ लेने आते। मुझे यह आदेश था कि उनसे ज्यादा हिलूँ मिलूँ नहीं अन्यथा इस दूकान का उपयोग ठीक से न हो सकेगा। इधर मेरा जी काम में ज्यादा न लगता। अब तो रोजगार की आव-

श्यकता का विचार किए विना भी दूकान का पैसा घर पर खर्च होने लगा जिसका फल यह हुआ कि अक्सर आंटे के लिए भी पैसा न वचता। आखिर एक दिन डेरेनकोव ने बहुत गम्भीरता से अपनी दाढ़ी के वाल खींचते हुये कहा, 'देखो, अब दिवाला होने वाला है।'

उसकी हालत अच्छी न थी। लाल वालों वाली नास्त्या गर्भवती थी। अब डेरेनकोव और वह दोनों ही एक दूसरे से कतराते। अक्सर वह मुझसे सहानुभूति की आशा करता व कहता, 'यह वड़ा बुरा है, सभी चीजें गायव हो जाती हैं। कल ही मैं आधे दर्जन जोड़े मोजे अपने लिए लाया था—आज सभी गायव हैं।

मुझे आश्चर्य सिर्फ इसलिये हुआ कि यह व्यक्ति दूसरों के लिये व्यापार चला रहा था और आज यही व्यक्तिगत वातें क्यों करने लगा है। इसके अलावा आजकल उसके परिवार का प्रत्येक व्यक्ति उसके लिए परेशानी का कारण वन गया था। उसका वूढा वाप अचानक धर्म के लिए पागल हो गया था। उसका छोटा भाई चकले का प्रतिदिन का घूमने वाला वन गया था। उसकी वहन घर में इस प्रकार व्यवहार करती थी जैसे वह अजनवी हो किसी से उसे मतलव न हो। वह उस लाल वाल वाले लड़के के प्रेम में पागल हो रही थी। अक्सर उसकी आंखें आंसू से तर और सूजी हुई देखी जाती थीं। और परिणाम यह हुआ कि मैं उस लड़के से घृणा करने लगा।

मुझे ऐसा शक हुआ कि शायद मैं भी उससे प्रेम करने लगा हूँ। साथ ही सामने के घर वाली लड़की के प्रति भी मेरे मन में कोमलता जागृत हो गई थी। मुझे हर तरफ प्रेम की बौछार ही दिखती थी। संसार में हर ओर स्त्री मात्र के प्रति

अपने मन में एक अजीब प्रेम का मैं अनुभव करता। अब हर समय लगता कि यदि किसी स्त्री से प्रेम सम्बन्ध न जुड़ सके तो कम से कम मित्रता अवश्य हो जानी चाहिये।

मैं अपने असली मित्रों को पहचान न पाता। अधिकांश ऐसे थे जो मुझे गीली मिट्टी समझ कर सदा ही कोई न कोई मेरा स्वार्थ पूर्ण उपयोग करना चाहते थे।

जार्ज प्लेतनेव गिरफ्तार करके सेंटपिटर्सवर्ग के क्रेस्ती जेल में बन्द कर दिया गया था। एक दिन सुबह निखिफोरिच के यहाँ गया तो यह सूचना मिली। उस समय उसके सभी तकमें उसके सीने पर लगे थे जैसे वह परेड से लौटा हो। पहले तो अपने हाथ में टोपी लेकर फिर टहलते हुये उसने बताया, 'प्लेतनेव कल रात गिरफ्तार कर लिया गया।' कहते समय उसका गला भी भर आया था।

मैं जानता था कि प्लेतनेव अपनी गिरफ्तारी की किसी भी क्षण आशा करता था। रबजोव व मुझे उसने आगाह भी किया था। निखिफोरिच ने मुझसे कहा, 'तुम अब मुझसे मिलने क्यों नहीं आया करते?'

उसी शाम को मैं फिर उसके पास गया। शायद वह सो कर उठा था और अधलेटा हुआ सा बैठा 'क्वास' पी रहा था। उसकी पत्नी खिड़की पर बैठी उसका पाजामा सी रही थी। मुझे देखते ही वह बोला, 'देखा न वह पकड़ गया। उसके कमरे में एक घड़ा मिला जिसमें वे जार के विरुद्ध पर्ची छापने की स्याही बनाते थे।'

फर्श पर थूक कर उसने चिल्लाकर पत्नी से कहा, 'मेरा पाजामा दे!'

बिना सिर उठाये ही वह बोली, 'एक मिनट!'

—३५६

फिर पत्नी की ओर इशारा करके वह बोला, 'यह उसके लिये दुःखी है। यह उसके लिये रो रही थी। यों तो मैं भी उसके लिये दुःखी हूँ पर सवाल यह है कि एक विद्यार्थी को भला जार का विरोध करने की क्या पड़ी थी ?'

फिर कपड़ा पहनते हुये उसने कहा, 'मैं जरा जाऊँगा…… ……वह घड़ा, तुम……।'

उसकी पत्नी जब तक वह चला न गया खिड़की के बाहर ही देखती रही। फिर उसने खिड़की के दरवाजे पर अपना हाथ पटक कर कहा, 'स्कंक !'*

आँसू के कारण चेहरा भी फूला सा लगता था और एक आँख तो सूजन के कारण बन्द थी। जल्दी से चूल्हे के पास जाकर उसने केतली चढ़ाई और कहा, 'मैं इसे अब मजा चखाऊँगी। उस पर तुम एक बात का भी विश्वास न करना—वह तुम्हें फंसाने के चक्कर में है। वह झूठा है। उसके दिल ही नहीं है। वह तुम लोगों के बारे में खूब जानता है। जीवन भर वह लोगों को फँसाता रहा है—यही तो उसका काम रहा है।'

वह मेरे बहुत-बहुत पास आ गई और तनिक अधिकार के स्वर में बोली, 'मुझे चुम्बन दो !'

मैंने देखा कि उसके प्रस्ताव के बाद भी मुझे बहुत उत्साह न आया लेकिन उसकी आँखों में इतनी प्यास दिखाई पड़ी कि मैंने उसके गले में एक बाँह डाल दी उसके रूखे बालों को सहला कर पूछा, 'फिर वह आजकल किसके फेर में है ?'

'फिसर स्ट्रीट में कोई ! तुम क्या नाम भी जानना चाहते हो ! देखो वह आ गया।—बस मैं एक का ही नाम जानती

---

*उत्तरी अमरीका में पाया जाने वाला एक जानवर।

हूँ—प्लेतनेव का।' और कह कर फिर चूल्हे के पास चली गई।

निखिफोरिच एक बोतल वोदका, कुछ पाव रोटियाँ और चाय ले आया। हम चाय के मेज पर बैठे। मेरिया साथ ही थी। वह मेरे चेहरे की ओर गौर से देख रही थी। और वह कह रहा था, 'जार आदमियों के लिये खुदा है।'

फिर मेरी ओर घूम कर वह बोला, 'तुम तो काफी पढ़े लिखे आदमी हो! तुमने बाइबिल पढ़ी है? क्या तुम उसमें जो भी लिखा है उसे ठीक मानते हो?'

'मैं नहीं जानता!'

'मैं समझता हूँ कि उसमें अधिकांश बेकार ही हैं। जैसे भिखारियों को उसमें बहुत महत्व दिया गया है। गरीबों के बारे में भी—लेकिन हमें देखना है कि सचमुच के गरीब और जो अपने से गरीब बनते हैं उनमें अन्तर है या नहीं!'

'क्यों?'

क्षण भर चुप रहकर वह मुझे गौर से देखता रहा, फिर बहुत सज्जनता से कहा, 'मेरी अपनी राय है कि बाइबिल में लिखा है और जीवन का आज जो रूप है उसमें अन्तर है। देखो न प्लेतनेव ने किस प्रकार अपने को बरबाद किया।'

मैं अवाक होकर उसे आश्चर्य से सुनता रहा। 'तुम तो होशियार आदमी हो। तुम पढ़े लिखे हो पर क्या तुम्हारा नानबाई होना शोभा देता है? तुम तो जार की सेवा कर के अच्छी तरह सफलता पा सकते हो।'

मैं सोच रहा था कि पूछूँ कि फिशर स्ट्रीट पर कौन उसका शिकार है; यद्यपि एक का नाम मैं जानता था—सरजेस्तोमोव

जो अभी ही देश निकाले के बाद वापस आया था। तभी उसकी स्त्री ने टोका, 'नव बज चुके हैं !'

'रहने भी दो !' कह कर निखिफोरिच उठ खड़ा हुआ और अपनी वरदी का बटन बन्द करने लगा। 'अच्छा विदा ! याद रखिये कि कभी कभी आप का आना अच्छा ही लगता है !'

उसके घर से वापस आकर मैंने प्रण किया कि निखिफोरिच के साथ अब कभी चाय नहीं पिऊँगा। उन्हीं दिनों एक 'टाल्सटायन' शहर में आया। इतना ऊँचा, तेज, मोटे ओठों और काली सुन्दर दाढ़ी वाले व्यक्ति को मैंने पहले न देखा था। उसकी आंखों से जैसे शोले निकल रहे हों। प्रोफेसर के घर में एक मीटिंग हुई। अधिकांश युवक थे और उनके बीच एक सुन्दर सा काला लबादा पहने हुये पादरी। वह 'टाल्सटायन' ही बोल रहा था। बायां हाथ उसके शब्दों के साथ हिल रहा था और दायां उसके पैंट के जेब में था।

'अभिनेता है !' किसी ने फुसफुसाकर कहा।

मुझ पर उसके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ा। मैंने पता लगा लिया कि उसका नाम है क्लोप्स्की और वह कहाँ रहता है ! दूसरे दिन शाम को मैं गया। पास ही गाँव में वह उस मकान में रहता था जिसकी मालकिन दो युवती लड़कियाँ थीं। वह बाग में एक पेड़ के नीचे टेबिल बिछाये दोनों लड़कियों के साथ ही बैठा था। वह सफेद कपड़े पहने था—सफेद कमीज, सफेद पैंट, उसकी चौड़ी छाती का आभास मिलता था। वह कुछ खा रहा था। एक लड़की खड़ी उसे परोस रही थी और दूसरी पेड़ के सहारे खड़ी खाली आकाश को एक टक देख रही थी। दोनों लड़कियाँ एक सा कपड़े पहन कर एक सी लग रही थीं।

बात चीत में उसने कहा, 'प्यार से ही किसी को जीता जा सकता है। बिना प्यार के जीवन कुछ नहीं है। जो कहते हैं कि संघर्ष जीवन का अंग है वे अंधे हैं। आग को आग से ही नहीं दबाया जा सकता।'

थोड़ी देर बाद एक दूसरे के हाथों में हाथ डाले लड़कियाँ चली गईं। पीछे से उन्हें देखते हुए उसने मुझसे पूछा, 'अच्छा बतलाओ, तुम कौन हो ?'

मेरी कहानी सुनकर उसने कहा कि आदमी जीवन की हर स्थिति में आदमी ही है। जीवन के नजदीक होने के माने हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को प्यार किया जाय।

मैं उसकी बात ध्यान से सुन रहा था और अनुभव भी कर रहा था कि मैं उसे उबा ही रहा हूँ। उसने जम्हाई लेकर कहा, 'प्रेम के प्रति समर्पण ही तो जीवन का नियम है। और सुनो भाई, माफ करना। इस समय मैं थका हूँ।'

उसने फिर आँखें बन्द कर लीं। मैं वहाँ से चला आया। लेकिन मेरे मन में ऐसा हो रहा था जैसे वह बहुत ईमानदार व्यक्ति नहीं है।

कुछ दिनों बाद, अपने एक डाक्टर मित्र को जो कुंआरा और शराबी था, उसे केरु पहुंचाते समय मेरी भेंट कोप्स्की से हो गई। वह अवश्य ही पहली रात को सोया न होगा क्योंकि उसकी आँखें लाल थीं और चेहरा उतरा हुआ था। वह भी शायद उस दिन पिये था।

वहाँ कोप्स्की ने मुझे अपने बाहों में दबोच लिया और डाक्टर से बोला, 'डाक्टर इससे पूछो कि यह किस फेर में है यह आजकल जरा प्रेम के चक्कर में है।'

डाक्टर हँसा, उसने गीली आँखों से मुझे पहचाना, 'अरे यह तो नानबाई है। इसका मेरा तो रुपयों का सम्बन्ध है

कह कर उसने मुझे अपने मेज के दराज की चाभी दी और कहा, 'खोलकर जितना हो तुम्हारा वह निकाल लो।'

उस दिन की भेंट के बाद ही मुझे पता चला कि कोप्स्की ने उन दोनों लड़कियों से अपने प्रेम सम्बन्ध को सर्वविदित करा दिया है जिनके घर में वह रहता था।

दोनों लड़कियों से एक साथ प्रेम भला कैसे चल पाता सो आपस में दोनों लड़कियों की खटक गई और दोनों बहनों ने कोप्स्की से घृणा करना शुरू कर दिया। बाद में तो दोनों ने नौकर से कहला दिया कि उसके लिये अब घर में स्थान नहीं है अतः उसे वह घर ही नहीं शहर भी छोड़ देना पड़ा।

प्रेम की परिणति कितने रूपों में होती है, यह मेरे लिये एक समस्या बन गई थी। मेरी सारी शिक्षा का फल अब तक यही था कि मेरे भीतर क्रिश्चियन धर्म का बहुत असर था और सदा ही यह भावना रहती कि अन्य व्यक्तियों को मैं भाई मानूँ परन्तु आँखों के आगे जो कुछ देखता था बिल्कुल भाईचारे की बात न थी। जीवन का जो रूप मेरे सामने था वह घृणा और कष्ट की अटूट कड़ी का रूप था। मेरे पास केवल पुस्तकें पढ़कर समय काटने के अलावा कोई दूसरा चारा न था।

अक्सर दरवाजे पर घंटे भर बैठकर मैं देखता कि मजदूर, अफसर और अन्य लोगों में जीवन के प्रति कितनी असमानता है और वे किस तरह जीवन के भिन्न-भिन्न रास्तों पर चल रहे हैं।

यह सब देखकर मुझे तनिक दुःख ही हो रहा था। लावरोव जानवरों का डाक्टर था। उसे कुछ बीमारियाँ थीं जो अच्छी न हो रहीं थीं अतः ऊबकर वह जहरीली दवाइयाँ खाता ताकि शीघ्र ही उसके जीवन का अन्त हो जाय।

'खुद तो जानवरों का इलाज करता है और खुद ही मर रहा है।' उसके साथी दर्जी मेडनीकोव ने कहा जिसके साथ एक ही कमरे में वह रहता था। मेडनीकोव के एक सात साल की लड़की, और एक ग्यारह साल का लड़का था। पत्नी को वह अक्सर बाँस की छड़ी से पीटा करता था।

रात को गली की लैम्पों को जला दिया गया था। लेकिन थोड़ी बूँदा बूँदी हो रही थी और एक प्रकार का धुँधलापन छाया हुआ था। एक वेश्या एक शराबी व्यक्ति की बाँह पकड़े, उसे घसीटती हुई गली में कुछ बड़बड़ाती हुई चली जा रही थी। रह रह कर वह उसे झकझोर भी देती थी। उसने कुछ कहा जिसके उत्तर में उस स्त्री ने कहा,

'यह तकदीर है!'

'ठीक' मैंने सोचा, 'मेरी भी इसी शराबी की हालत है। मैं भी इसी तरह घसीटा और झिझकोरा जा रहा हूं। मुझे भी उलझे दिमाग के लोग घसीट रहे हैं। मैं इन सबों से कितना ऊब गया हूँ!'

मैं जाने किस शक्ति के द्वारा औरतों की ओर, किताबों की ओर, मजदूरों की ओर और विद्यार्थियों की ओर खिंचा जा रहा था। मैं न तो इधर का होता था न उधर का।

जैक शेपोरत्नीकोव, के बारे में मैंने सुना कि वह अस्पताल में है। मैं उसे देखने गया। ज्योंही मैं अन्दर गया कि एक मोटी, चश्मा पहने, और भद्दे चेहरे वाली सफेद कपड़े पहने स्त्री ने बताया, 'वह तो मर गया।'

जब मैं सुनकर, अचानक वापस न आकर उसे ही घूरता रह गया तो वह क्रुद्ध होकर मुझ पर जैसे झपटी, 'तुम अब क्या चाहते हो?'

मुझे भी क्रोध आ गया और मैंने उसे चुड़ैल कह दिया।

'निकोलाई, आकर इस आदमी को बाहर निकालो !'

निकोलाई पीतल के छड़ों को पालिश से चमकाने में व्यस्त था। एक छड़ से मेरे पीठ में धक्का मारा। मैंने उसे उलट कर अपनी बाँहों में उठा लिया और कमरे के बाहर लाकर अस्पताल के दरवाजे की सीढ़ी पर बैठा दिया। वह चुप क्षणभर वहीं बैठा रहा। फिर मुझे घूरकर कहा, 'कुत्ते !'

मैं दरजाविन पार्क* में चला गया और कवि की मूर्ति के नीचे बेंच पर बैठा। जाने क्यों मेरे अन्दर ऐसी भावना उठी कि मैं कुछ ऐसा कार्य करूँ जो बहुत बुरा व अशोभन हो ताकि लोग आकर झगड़ा करें और मैं उनपर टूट पड़ूँ। लेकिन वह छुट्टी का दिन था अतः पार्क सूना था और आस-पास कोई न था। केवल हवा चलकर सूखी पत्तियाँ उड़ा रही थी और कभी-कभी पास के लैम्पपोस्ट पर चिपके इश्तहार का एक उखड़ा कोना फड़फड़ा रहा था। हवा में काफी नमी आ गई थी, आसमान और काला हो गया था। मूर्ति जैसे मुझ पर झुक आई थी। उसे घूर कर मैंने सोचा, 'इस संसार में वह एक अकेला व्यक्ति रहता था, शेपोश्नीकोव, जिसने अपनी सारी शक्ति खुदा से लड़ने में खर्च कर डाली। लेकिन अब वह नहीं है। एक साधारण आदमी की तरह साधारण मौत पाई है। और वह मूर्ख निकोलाई, उसे चाहिये था कि मुझसे लड़ता, पुलिस आती और मुझे जेल ले जाती।'

मैं रवनोव को देखने गया। पाया कि वह टेबिल पर बैठा एक छोटे लैम्प के सहारे अपने जैकेट की मरम्मत कर रहा है

'जैक मर गया।' मैंने बताया।

---

* कवि गवरियल दरजाविन के नाम का पार्क।

उस बूढ़े ने वह हाथ उठाया जिसमें सुई पकड़े था। फिर अजीब भाव में बोला, 'हम सभी मर जाएँगे। यही बेहूदा तरीका है, बच्चे! वह मर गया न! मैं एक अन्य व्यक्ति से मिला था, वह भी मर गया। मैंने सुना है कि विद्यार्थियों ने हड़ताल की है, क्या यह सच है? लो यह जैकेट तो सिओ। मुझे दिखाई नहीं पड़ रहा।'

उसने मुझे वह गूदड़ जैकेट, सुई और तागा दे दिया और अपने दोनों हाथ पीछे बाँधकर कमरे में टहलने लगा, 'अब या कभी भी, यहाँ व वहाँ, कहीं न कहीं लौ निकलेगी। क्या यह शहर है! मैं यहाँ से चला जाऊँगा। लेकिन कहाँ जाऊँगा? मैं सब जगह तो हो आया हूं।' कहते हुए वह कोने में रुका रहा फिर आकर मेज के किनारे बैठ गया।

'मैक्सिम, मेरे बच्चे! खुदा का विरोध करने की जैक की आदत ठीक न थी। किसी को खुदा व राजा के काम में दखल नहीं देनी चाहिए। जवान होकर अन्धे बन जाना उचित नहीं। अच्छा, चलो चाय पिएँ।'

जाते समय अँधेरे में मेरी बाँह पकड़कर उसने कहा, 'मेरी बात को याद रखना, एक दिन आयेगा जब जनता का सब्र अपनी सीमा पार कर जाएगा और अपने क्रोध में वे सब कुछ समाप्त कर देंगे।'

हम लोग चाय न पी सके क्योंकि एक चकले के सामने झगड़ा हो रहा था। कुछ मल्लाहों को मिल के मजदूर भीतर नहीं घुसने दे रहे थे।

'हर छुट्टी को यहाँ इसी तरह झगड़ा होता है।' रयज़ोव ने कहा, तभी उसने कुछ मजदूरों को पहचाना और उन्हें उत्साह दिलाया, 'इन मेढ़कों को कुचल डालो जी।'

अन्त में दरवाजा टूटने की आवाज आई। इसी बीच दो आदमी फाँदकर छत में चले गये और वहाँ उन्होंने बड़ी ऊँची आवाज में गाया—

'डाकू नहीं, चोर नहीं, लुटेरे नहीं हम,
नदी और समन्दर के आदमी हैं हम।'

इस प्रकार दिन बीत रहे थे। विद्यार्थियों के दंगे शुरू हो गए थे पर इसका कारण मुझे न मालूम था।

अपने खाली समय में मैं वाइलिन सीखने लगा। अक्सर रात को दूकान बन्द होने पर बजाता। मुझे गाने के प्रति काफी दिलचस्पी थी। लेकिन एक दिन मेरे संगीत अध्यापक ने जो एक थियेटर में काम करता था, उसने मेरी अनुपस्थिति का लाभ उठाया। मैं लापरवाही के कारण रुपयों की दराज बन्द करना भूल गया था। उसने अपनी जेबें रुपयों से भर लीं। लेकिन उसके जाने के पूर्व ही मैं समय से पहुंच गया। पकड़े जाने पर बहुत धीमे स्वर में उसने कहा, 'मुझे तमाचे मारो।' उसकी आँखें बरस रही थीं और ओंठ फड़क रहे थे।

मैंने उसे रुपये वापस दराज में रख देने को कहा। उसने रुपये रख दिये और जाने लगा, लेकिन दरवाजे पर रुककर उसने दस रूबल के लिये प्रार्थना किया।

मैंने उसे दे दिए लेकिन उसी दिन से मेरी संगीत-शिक्षा बन्द हो गई।

दिसम्बर में मैंने आत्महत्या कर लेने का निश्चय किया। इसका कारण मैंने अपनी कहानी 'मकर के जीवन की एक घटना' में स्पष्ट किया है। मेरा प्रयत्न असफल रहा।

———

पांच

एक जगह से मैं एक रिवाल्वर मांग लाया उसमें चार गोलियाँ थी। मैंने अपने हृदय पर गोली चलाई पर बच गया। एक महीने बाद अपने ऊपर बहुत ग्लानि आई और मैं पुनः दूकान में लौट आया। लेकिन इस बार अधिक न रहा। मार्च में एक शाम को मैंने देखा कि खोखोल नामक एक व्यक्ति मेरे कमरे में बैठा इन्तजार कर रहा है। खिड़की पर बैठ कर वह एक बहुत मीठी सिगरेट पी रहा था। मेरे आते ही शिष्टाचार में समय न गंवा कर उसने कहा.

'तुम्हें कुछ फुर्सत है?'

'बैठ जाओ, बातें करें!'

हमेशा को तरह ही उसने काली चमड़े की जैकेट पहन रखी थी। 'मेरे साथ चलोगे?' उसने पूछा, 'क्रास्नोविडोवो गांव में मैं हूँ। वोल्गा से नीचे की ओर लगभग तीस मील। मेरी वहां दूकान है, तुम सहायता दोगे? तुम्हारा ज्यादा समय भी नष्ट न होगा। वहां पुस्तकों का अच्छा संग्रह भी है और मैं तुम्हें पढ़ाई में अन्य सहायता भी दूंगा। क्या राय है?'

'हाँ!'

'मैं शुक्रवार को तुम्हारा कुयरातोव में इन्तजार करूँगा। क्रास्नोविडोवो के लिये वेसिली पेन्कोव की नाव पूछना। यों तो मैं वहां मिलूँगा ही। अच्छा तब तक के लिये विदा।'

उठकर उसने अपना चौड़ा पंजा मेरी ओर बढ़ा दिया। दूसरे से अपनी जेब घड़ी निकाल कर देखा और कहा, 'हमें केवल छः मिनट लगे। मेरा नाम है माईकेल रोमास।'

फिर बिना देखे वह चला गया।

दो दिनों के बाद मैं क्रास्नोविडोवो की ओर चल पड़ा। वोल्गा की वर्फ अभी अभी ही गली थी।

स्टीमर में मेरे पास बैठे रोमास ने 'कहा, मुझे वे किसान अच्छे नहीं लगते जो दूसरे किसानों से काम कराते हैं।'

दोपहर को हम लोग क्रास्नोविडोवो पहुंचे। मैं नये घर के एक साफ सुथरे कमरे में गया जहां चमकदार आँखों वाली एक स्त्री मेज ठीक कर रही थी। रोमास ने किताबों के कुछ बक्से खोले और चूल्हे के पास एक आलमारी में उन्हें सजा दिया।

'तुम्हारा कमरा ऊपर है।' मुझसे उसने कहा।

मेरे कमरे की खिड़की से गाँव के दृश्य दिखाई पड़ते थे।

हम लोग खाने बैठे। ईसोट भी मेज पर बैठा बातें कर रहा था। मेरे पहुंचते ही बात बन्द हो गई। रोमास ने कहा, 'आओ!'

'हम लोगों ने तय किया है कि सब अपने से ही करना पड़ेगा। तुम्हारे पास रिवाल्वर है न! और नहीं तो छड़ी लिये रहा करो। देखो वारीनोव और खुखुश्किन से दूर रहना होगा। औरतों की तरह उनकी जबान है। और तुम्हें क्या मछली मारना अच्छा लगता है?'

'नहीं।'

ईसोट का खाना समाप्त हो गया था, कहा, 'बहुत सम्हल कर रहना होगा।'

जब वह चला गया तो रोमास ने कहा, 'बहुत तेज और साफ कहने वाला आदमी है। लेकिन अफसोस की बात है कि इसने पढ़ाई नहीं की। तुम जरा इसकी मदद करना।'

रात को बहुत देर तक हम जागते रहे। उसने मुझे स्टाक दिखाया और चीजों के दाम की लिस्ट दी। 'गाँव के दो दूकान-दारों के हाथ भी हम बिक्री करते हैं।'

'मैं समझ गया।'

दूकान तो बन्द थी लेकिन रोशनी जलती देख एक आदमी दरवाजे पर चक्कर काट रहा था।

'इसे देखो, वह मीगन है। एक भिखारी। जानवर, सारी खुराफातों की जड़। कोई भी बात मुँह से न निकालना जब वह रहे।—और हाँ तुम पढ़ते बहुत हो लेकिन पढ़ाई ऐसी न हो कि आदमियों से व्यवहार टूट जाए।'

फिर रसोई घर में जाते समय उसने मुझे किताबें दिखाई, हर विषय के प्रसिद्ध लेखकों के प्रसिद्ध ग्रन्थ।

चाय पीते समय उसने अपने विषय में बताया,—उसका पिता चरनिगोव में लुहार था। उसने सबसे पहला काम कीव रेलवे स्टेशन पर तेल देने वाले का किया। वहाँ कुछ क्रान्ति-कारियों का उसका साथ हो गया। मजदूरों का एक स्कूल खोलने की योजना वह बना रहा था उसी में वह पकड़ गया और दो वर्ष की कैद हुई। फिर याकुत्स्क में दस वर्ष तक निर्वासित रहा।

'पहले तो याकुतों के साथ रहना बड़ा कठिन मालूम हुआ। वहाँ का जाड़ा सचमुच दिमाग तक जमा देता था। वहाँ दिमाग काम नहीं करता। फिर पता लगा कि मेरे अलावा अन्य रूसी भी वहाँ हैं। सरकार ने इतनी कृपा की थी सभी को आपस में मिलने की सुविधा थी। उनमें एक विद्यार्थी भी था जिसका नाम कोरालैन्को था। वह भी अब वापस आ गया है। कुछ दिन साथ रहने के बाद हम अलग हो गये थे। हम लोग कई बातों व आदतों में समान थे। वह हर प्रकार के काम कर लेता था। अब तो वह पत्रिकाओं में लेख लिखता है और सुना है कि बहुत अच्छा लिखता है।'

आधा रात तक हम लोग चलते रहे। पहली बार जीवन में किसी से एकरसता का मजा मिला। आत्महत्या की कोशिश की बात सोच कर मुझे अपने आप पर बड़ी लज्जा मालूम होती थी। मैं समझता हूँ ऐसे अवसर पर रोमास का मेरे जीवन में आना बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। इसे मैं कभी न भूलूंगा।

रविवार को दूकान खोली गई और फौरन ही गाँव वालों ने दरवाजा छेंक लिया। मैथूब बारीनोव पहला व्यक्ति था जो आया। देखने में वह बहुत कुछ स्त्रियों जैसा लगता था।

एक दुबला पतला व्यक्ति फटा सा कोट पहने आया।

'आओ मीगन; बारीनोव ने स्वागत किया, 'आज रात को क्या चुराया ?'

'तुम्हारा रुपया,' हँसकर मीगन ने कहा।

हमारा मकान मालिक भी आ गया और हमारा पड़ोसी पानखोव जैकेट और खिलाड़ियों की तरह कपड़े पहने आया। मीगन को तनिक क्रोध से देखकर उसने कहा, 'तुम पर मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा है।'

'बिना एक दूसरे को मारे अब हम जी नहीं सकते !' मीगन ने उत्तर दिया।

पानखोव ने कहा, 'मैं अभी केवल छियालीस वर्ष का हूँ।

'पिछले क्रिसमस में तुम तिरपन के थे। यह तुमने ही कहा था आखिर यह झूठ क्यों बोले ? बारीनोव ने पूछा।

बहुत गम्भीर दाढ़ी वाला बूढ़ा सुरलोव और मल्लाह इशोट अन्य दस आदमियों के साथ आये। दरवाजे से लगकर ही बैठा खोखोल अपना पाइप पीता हुआ सबों की बातों का रस ले रहा था। रोमास इन लोगों का इकट्ठा होकर गप्पबाजी करना पसन्द करता था। वह इस समय अपनी पाइप की राख झाड़ रहा था। उपस्थित लोगों में बहस छिड़ी थी। कुछ इस पक्ष के थे जमींदार अच्छे हैं कुछ इस पक्ष के कि महाजन अच्छे हैं, सूदखोर !

सामने नदी में एक जहाज आ रहा था। इसी समय एक शराबी बूढ़ा पाँव लड़खड़ाने से सड़क पर गिर पड़ा। सबों की बातों का जोर कम हो गया।

मैंने चा पीते समय खोखोल से पूछा कि उसे किसानों से बातें करने को कैसे समय मिलता है।

'क्यों ?' उसने पूछा और मेरी बात सुनकर कहा, 'उनसे बातें करने में ही मैं अपने गाँव पहुँच जाता हूँ।

उसने पाइप में तमाखू भरी और जलाया और इस प्रकार बातें की कि मुझे उसके शब्द सदा याद रहे। ये किसान बहुत शक्की होते हैं। अपने पड़ोसी पर भी शक ही करते हैं। पड़ोसी पर, हर नये आगन्तुक पर ! इनका जीवन फकीर है। जार ने जमींदारों से जमीन ले ली है। खुद ही मालिक है। इसके माने आजादी तो नहीं—लेकिन वे कहते हैं कि जार

आजादी है। कैसी आजादी है, यह किसी दिन जार सम-झाएगा। इन्हें जार पर विश्वास भी अटूट है। उसने जैसे जमीन हथिया ली उसी तरह व्यापारियों की जहाज व दूकान भी ले सकता है। यह तो किसानों को बताना पड़ेगा कि वे जार से छीन कर शक्ति अपने हाथों में ले सकते हैं। वे अपना यह अधिकार पा सकते हैं कि अफ़्सर अपने बीच से ही चुने। सभी अपने हों, सिपाही, गवर्नर और जार भी !

'लेकिन यह समझाने में शताब्दी लगेगी।'

'और नहीं तो क्या तुम समझते हो कि इस क्रिसमस में ही हो जाय।'

फिर वह चला गया। करीब ग्यारह बजे मैंने पास ही कहीं गोली की आवाज सुनी। मैं उस वर्षा और अंधकार में भी बाहर निकल पड़ा तभी छाया की तरह रोमास आता दिखा और मेरे प्रश्न पर कहा, 'मैंने गोली चलाई थी !'

'किस पर ?'

'कुछ लोग लाठियाँ लेकर आये थे। मैंने कहा छोड़ दो रास्ता, नहीं तो, गोली मार दूँगा। सो हवा में गोली छोड़ी थी किसी का नुकसान नहीं हुआ।'

कमरे के बीच खड़ा होकर, कपड़ा उतारते हुये, दाढ़ी से पानी निचोड़ते हुये और घोड़े की तरह हांफते हुये उसने कहा, 'मेरे जूते तो नष्ट हो गये, जाने दो। बदल लूंगा। हाँ, तुम रिवा-ल्वर साफ करना जानते हो ? इसे साफ करलो, कुछ तेल भी डालो नहीं तो जंग लग जाएगा।'

बगल के कमरे में कंघी करते हुये उसने कहा, 'जब भी गाँव में जाना तो सतर्क रहना। खासकर रात में और छुट्टी के दिन। वे शायद किसी दिन तुम्हें भी सतावें। पर कभी लाठी लेकर न जाना। लाठी से वे भड़क उठते हैं—समझते हैं उन्हें

चुनौती दी जा रही है। यों अधिक डरने की भी बात नहीं—वे तनिक बुजदिल भी हैं।'

अजीब जीवन हो गया था। प्रतिदिन कुछ न कुछ नवीन सा लगता। मैं इतिहास की किताबें पढ़ता तो रोमास ने कहा, 'मन में समझ लो कि विज्ञान पढ़ने से ही दिमाग बढ़ता है।'

एक दिन उसने कहा, 'कई लोग तेरे ताकत की चर्चा करते थे। आज एक लाठी तू ले और एक मैं। देखें किसमें अधिक दम है।'

हमें रसोई घर में दो लाठियां भी मिल गईं। और हम लोग बढ़े। खोखोल देख कर हँस रहा था।

इसोट अच्छा आदमी था। वह वोल्गा का बहुत भक्त था। आकाश के तारों को देखकर वह कहता, 'खोखोल कहता है कि उनमें भी जीवन है। तुम्हारी क्या राय है?

वह अच्छा आदमी था यद्यपि उसका कोई वंशज न था न कोई जायदाद। मछुओं का जीवन ही ऐसा है। लेकिन वह किसानों से तनिक चिढ़ा था, 'वे अच्छे लोग नहीं हैं। वे बड़े चालाक हैं। बड़े स्वार्थी—छिः!'

औरतें इस व्यक्ति के पीछे पड़ी रहतीं। 'मैं इस मामले में सौभाग्यशाली हूँ। बहुत से पति मुझसे नाराज रहते हैं पर मैं क्या कर सकता हूँ। लेकिन अगर कोई स्त्री तुमसे प्रेम करे तो तुम दूर कहाँ तक रहोगे? उसका पति उससे घोड़ी की तरह काम लेता है—कभी प्यार नहीं, आराम नहीं। और मैं तो औरतों को खुश रखने को शायद पैदा ही हुआ हूं। मैं जानता हूं किसी व्याहृता से प्यार करना पाप है लेकिन……'
कह कर वह उत्साह से हँस पड़ा फिर कहा, 'तुम जानते हो। मेरे पास भी एक औरत थी। शहर से आई थी। [illegible]

था, दूध की तरह सफेद चमड़ी, बाल चमकदार और नीली आँखें ! मैं उसके हाथ मछली बेचने जाता तो बहुत विवशता से उसे घूरता ।'

'तुम क्या चाहते हो ?' उसने पूछा ।

'यह तुम आसानी से समझ सकती हो ।' मैंने कहा ।

'आज रात को इन्तजार करना, मैं तुम्हारे पास आऊँगी ।' उसने कहा ।

'और वह आई । केवल मच्छर परेशान कर रहे थे । उसने कहा, 'ये तो खा जायेंगे ।' और दूसरे ही दिन उसका पति जो एक जज था आ गया ।'

इसोट कुकुस्किन का बहुत प्रशंसक था । कुकुस्किन के पास जमीन न थी । उसकी स्त्री को शराब पीने की आदत थी । वह भी मजदूरी करती थी । वह छोटे कद की बहुत मजबूत और स्वस्थ औरत थी । अपना मकान किराये पर उठा कर वह एक छोटे कमरे में रहती थी । झूठी अफवाहें फैलाने की उसे बीमारी सी थी । जब कोई खबर न होती तो खुद ही कुछ गढ़ लेती ।

गाँव में कुकुस्किन का कोई महत्व न था । हाँ उसे लोग हँसी मजाक का साधन अवश्य समझते थे । लोग उसे भिखारी और बेदिमाग कहते थे लेकिन पैनकोव उसे बहुत 'रहस्यमय जीव' समझता था ।

कुकुस्किन सब प्रकार के छोटे मोटे कार्य कर लेता था । उसे बिल्लियों से बहुत प्रेम था । उसने दस मोटी बिल्लियाँ पाली थीं ।

वह एक बार पढ़कर भूल जाता था फिर दुबारा कभी न पढ़ता था । खोखोल, इसोट और पैनकोव अक्सर आते और आधी रात तक रहते । खोखोल बड़बड़ाता रहता, ध्वी की

उत्पत्ति, विदेशों का जीवन, विद्रोह सब विषय। पैनकोव का प्रिय विषय था—फ्रांस की क्रांति। 'वहाँ जीवन ने करवट बदला है।' वह कहता।

पैनखोव ने ही अपना मकान दूकान खोलने को रोमास को दिया था। वह कहता था कि यदि उसके पास कोई व्यापार होता तो वह शहर में रहता। वह असंतुष्ट था यही कारण था कि वह बहुत शक्की भी था।

पैनकोव का मेरे प्रति पहला व्यवहार कोई बहुत अच्छा न था। वह मुझसे बहुत शान से बातें करता। मुझे उसमें अविश्वास की झलक मिली। मैं उससे तनिक सतर्क रहता।

मुझे एक शाम की याद आ रही है। एक साफ पुते हुये कमरे में। खिड़कियाँ बन्द थीं। एक टेबिल पर एक लैम्प। इसके सामने एक व्यक्ति बैठा था, ऊँचा ललाट, दाढ़ी। वह कह रहा था, 'जीवन में जानवरों की प्रवृत्ति से जितना दूर रहा जाय उतना अच्छा।'

तीन किसान बैठे थे। इसोट भी इस तरह गम्भीर बैठा था जैसे वह बहुत गहराई से सब समझ रहा हो। कुकुश्किन इस तरह मुंह बना रहा था जैसे मच्छड़ काट रहे हों। पेनकोव अपनी मूंछें ठीक कर रहा था। थोड़े बहस के बाद मैं अपने कमरे में आकर खिड़की से सोते हुये गाँव और सूने खेतों को देख रहा था। तारों की किरणें जैसे अँधेरे में छेद कर रहीं थीं।

मैं गाँव की रूखी जिन्दगी से खूब परिचित हो गया था। मैंने पढ़ा था और सुना था कि गाँव के लोग शहर वालों के मुकाबले में अधिक ईमानदार होते हैं। कुछ लोग गाँव में भी

खुश थे। मैं शहर का होने के कारण अपने को तनिक बड़ा मानने लगा था। मुझे शहर के कुछ अन्य व्यक्ति याद हैं :—

कालुगिन और नेवी
घड़ीसाज, डाक्टरी औजारों की भी मरम्मत होती है, सीने की मशीन, गाने के बाजे आदि सभी मरम्मत होते हैं,

एक छोटी सी दूकान के छोटे से दरवाजे पर यह लिखा था। दरवाजे के अगल बगल दो खिड़कियाँ थीं। भीतर एक खिड़की के सामने कालुगिन बैठता था। वह आँखों पर मोटे शीशे का चश्मा चढ़ाये था। दूसरी पर नेवी बैठता उसके बाल काले और घुंघराले थे। वह अत्यधिक लम्बा था। उनके पीछे दुकान में तरह तरह की मशीनें व चीजें भरी थीं। मेरी इच्छा थी दिन भर खड़ा मैं उन चीजों को देखा करता परन्तु वहाँ खड़े होने से उनकी रोशनी छेंक जाती थी और वे बिगड़ उठते थे।

इतना होने पर भी देहात में मेरा पूरी तरह जी न लगता और वहाँ के निवासी किसी भी तरह मेरे दिमाग में नहीं आते।

उनकी बातों का मुख्य विषय था—स्त्रियों की बुराई करना। 'कलेजे का दर्द' 'छाती का दर्द' 'पेट का दर्द'—इनकी चर्चा अधिकांश होती। स्त्रियाँ भी बड़े बुरे स्वभाव की—सदा ही आपस में गाली गलौज! एक बार एक पुराने मिट्टी के जग के लिये, जिसके नये की कीमत बारह कोपेक थी तीन परिवार लाठी लेकर लड़े। एक बुढ़िया की बाँह और एक लड़के

का कंधा टूटा। यह प्रति दिन की घटनाएँ थीं।

युवक लोग तो हर समय लड़कियों को छेड़ते और बेवकूफ बनाते थे। किसी लड़की को खेत में अकेले पा जाते तो उसका स्कर्ट उलटकर सिर पर बाँध देते। इसे वह 'लड़की को 'फूल बनाना' कहते। नंगी होकर लड़कियाँ गाली देतीं, चीखतीं पर उन्हें तो इस खेल में मजा आता। बड़ी मुश्किल से उसका पिंड छूटता। गिरजा घर में भी युवक पीछे से युवतियों की पीठ में कुछ तेज चीज चुभो देते। कुछ तो इसी के ही लिये गिरजाघर आते थे। एक इतवार को तो पादरी ने डाँटा भी था, 'जानवरों, अपनी गंदी हरकतों के लिये तुम्हें और कहीं जगह नहीं मिलती !'

'मैं समझता हूँ कि युक्रेन के लोगों में धर्म के प्रति अधिक कोमल भावनाएँ होती हैं।' रोमास ने कहा, 'यहाँ तो खुदा के लिए सच्चा प्रेम है ही नहीं।'

बच्चे यहाँ के बुजदिल होते थे। मेरी उनकी न पटी। उन्हों ने तीन चार मुझे पीटने की असफल कोशिश की। एक बार पाँव में चोट आ गई थी। मैंने इसकी चर्चा रोमास से नहीं की। लेकिन मुझे लँगड़ाते देखकर वह समझ अवश्य गया था।

यद्यपि उसने मुझे मना कर रखा था फिर भी मैं अक्सर रात को वोल्गा के किनारे घूमने चला जाता था। कभी कभी इसोट भी मेरे साथ होता था। रात को वह दिन से अधिक लम्बा लगता तथा सुन्दर भी। एक रात वहीं बगल में बैठकर वह कह रहा था, 'औरतें सब समझती हैं यदि उनसे बिल्कुल शुद्ध हृदय से बातें की जाएँ। यहाँ आने के पूर्व मेरी नाव में एक स्त्री थी उसने पूछा, 'जब हम मर जाएँगे तो हमारा क्या होगा ? मुझे स्वर्ग व नरक पर विश्वास नहीं है।' देखा वे भी कितनी होशियार……।'

इसोट बहुत अच्छे दिल का आदमी था। उसे गिरजाघर के खुदा पर बहुत विश्वास था। थोड़ी देर बातें करके वह बिल्कुल गम्भीर हो गया। फिर कहा, 'यही होता है।'

'क्या ?'

'मैं अपने बारे में कहता था। देखो न जीवन कितना अजीब है!'

'हाँ बिल्कुल अजीब!' मैंने कहा।

उस अँधेरे में भी पानी की अपनी चमक थी। ऊपर चाँदी का सफेद आकाश था। तारे ऐसे लगते थे जैसे सोने की चिड़ियाँ उड़ रहीं हों।

छः

सेव के पेड़ों में फूल लगे थे। सारा गाँव मस्ती की सुगन्ध
से भर गया था। खेत से घर तक फूल यों लगते जैसे पेड़ों पर
किसी ने रंगीन कपड़े लपेट दिये हों। छुटियों के दिनों में
लड़कियाँ और युवतियाँ चिड़ियों की तरह चहक रहीं थीं और
पुरुष जैसे नशे में चूर मुस्कुराते थे। इसोट तो सचमुच जैसे नशे
में हो। वह जाने क्यों अब पहले से अधिक सुन्दर हो गया
था। वह खूब सोया करता, हर समय नींद से चूर। कुकुरिकन तो
कभी कभी उससे बहुत भद्दा लेकिन स्नेहपूर्ण मजाक भी करता।

'आज का जीवन कितना अच्छा है! जीने में भी क्या मजा
है! हृदय इसका वर्णन नहीं कर सकता। यही याद तो मरते
दम तक बनी रहती है।'

'तुम अधिक मजा न लेना नहीं तो किसी पति द्वारा मार
भी खाओगे!' हँसकर खोखोल ने आगाह किया।

'यह तो उनका अधिकार है।' इसोट ने उसी तरह उत्तर
दिया।

अक्सर बुलबुल की मीठी आवाज की तरह खेतों, बागीचों
व नदी के किनारों से गीत की आवाज आती।

शनिवार की रात को हमारी दूकान अड्डा बन गई थी। मोगन, बूढ़ा सुसलोव, वारीनोव और क्रोनोव आते और गहरी बहस में डूब जाते। इनमें से यदि कोई चला जाता तो उसकी जगह दूसरा कोई अवश्य आ जाता और यह बहस आधी रात तक चलती रहती। कुछ लोग शराब पी लेते थे खासकर युद्ध से वापस कोस्तीन जिसकी एक आँख व दो उँगलियाँ नष्ट हो चुकी थीं। अक्सर खोखोल उसे छेड़ देता तो वह मारने दौड़ता। लोग उसे पकड़कर शांत करते। इसमें सबों को बड़ा मजा आता। फिर कोस्तीन कहता, 'जाकर मेरे लिये वोदका लाओ!'

'क्यों?'

'मेरे कारण तुम लोगों ने इतना मजा जो लिया!' इस पर हँसी का तूफान उठ आता।

एक बार छुट्टी के दिन चूल्हा जलाकर रसोंइयाँ चली गयी थी। मैं दूकान में बैठा था कि अचानक रसोंई घर से इस प्रकार आवाज आई जैसे कोई राक्षस सिसक रहा हो। सारा घर काँप रहा था, टीन के डिब्बे जो ऊपर रखे थे गिरने लगे। खिड़कियों के शीशे बज रहे थे और जैसे धरती में कोई नगाड़ा बज रहा हो। मैं रसोंईघर की ओर भागा जहाँ से काले धुएँ के बादल बाहर आ रहे थे, कुछ टूटने फूटने की भी आवाज आ रही थी।

मुझे दबोच कर खोखोल चिल्लाया, 'बाहर भागो।'

बाहर ही से रसोंइयां चिल्लायी, 'यह क्या है?'

रोमास उस धुएँ के बीच से ही दौड़ा आया। अजीब आवाज आ रही थी। वह चिल्लाया, 'पानी लाओ, पानी!'

पानी छोड़कर आग को थोड़ा शान्त किया गया। जमीन पर बिखरी लकड़ियों में आग अब भी सुलग रही थी। मैंने एक एक लकड़ी को पटक कर बुझाना शुरू किया।

'सावधानी से!' खोखोल ने कहा, वह रसोइया को भी
खींच लाया। 'दूकान बन्द कर दो। और एलेक्स देखो, होशि-
यार रहना कहीं फिर न आग तेज हो जाए।'

वह कुछ चूल्हे के पास बिन रहा था। मैंने पूछा,
'क्या है?'

'यह देखो!' उसने कहा, 'किसी दुष्ट ने लकड़ी में बारूद
लपेट दिया था।' कह कर लकड़ी को एक ओर करके उसने
हाथ साफ किया। 'अच्छा हुआ कि अक्सीनिया बाहर चली
गई थी नहीं तो वह अवश्य ही जल जाती।'

बाहर लड़के खुशी से चिल्ला रहे थे। 'आग! आग!
खोखोल के यहाँ आग लगी है!'

किसी स्त्री के चीखने की बाहर से आवाज आई। दूकान
के भीतर से ही अक्सीनिया चीखी, 'वे भीतर घुसे आ
रहे हैं।'

रोमास एक तौलिए से अपनी दाढ़ी पोंछ रहा था। लोग
बाहर तरह तरह की बात कर रहे थे। 'इन्हें गाँव से निकाल
दो, रोज ही एक न एक खुराफात होती रहती है।'

एक बूढ़ा हाथ में कुल्हाड़ी लिए घुसा आ रहा था।

'कहाँ जा रहे हो?' रोमास ने पूछा।

'आग बुताने।'

'पर यहाँ तो कहीं आग नहीं है।'

इधर उधर देखकर वह बूढ़ा चला गया। रोमास ने बाहर
निकल कर भीड़ से कहा, 'किसी ने एक लकड़ी में बारूद
लपेट कर चूल्हे के पास रख दिया था लेकिन इतने से अधिक
नुकसान नहीं हो सकता था।'

भीड़ में से किसी ने कहा, 'हाँ, इतनी बड़ी जगह के लिए
कम से कम चालीस पौंड बारूद चाहिए।'

भीड़ में से दूसरी आवाज आई, 'पुलिस को बुलाओ।'

भीड़ के छंटने में कुछ समय लगा। भीड़ अपना कुछ निशान भी छोड़ गई। हम लोग थक कर चाय पीने बैठे। अक्सीनिया अपने असाधारण आवाज में जो आज जाने क्यों बहुत दयालु लग रही थी बोली, 'जब तक अधिकारियों से शिकायत न की जायगी, ये अपनी बदमाशियाँ बन्द नहीं करेंगे।'

'क्यों तुम इन चीजों से परेशान हो जाते हो?' रोमास ने पूछा।

काश, कि सभी लोग इसी तरह सहनशील होते!

मुझसे रोमास ने बताया कि वह कजान जाने वाला है फिर पूछा कि मेरे लिये कौन सी किताबें लावे। उसके प्रति अब मुझे बहुत आदर व प्यार उमड़ने लगा था। एक दिन उसने सुसलोव से कहा, 'भला यह कैसी बात है कि तुम तो दादा बन चुके हो लेकिन कभी ईमानदारी से ताश नहीं खेलते! इससे लोगों की निगाह में तुम गिरते ही हो!'

'हाँ यह मैं अनुभव करता हूँ।' सुसलोव ने स्वीकार किया।

बाद में रोमास ने मुझे समझाया कि उसकी अनुपस्थिति में मुझे क्या करना चाहिए। ऐसा लगा जैसे आग वाली घटना के विषय में वह सब कुछ भूल गया है जैसे कोई मक्खी का काटना भूल जाय।

कोई आया, पेनखोव, चूल्हे की तरफ देखकर पूछा, 'क्या आग लगी थी?'

'हाँ, बैठो चाय पियो।'

'नहीं मेरी पत्नी इन्तजार कर रही होगी।'

'कहां से आ रहे हो?'

'इसोट के साथ मछली मार कर !'

खोखोल के साथ उसकी बातें इसी तरह छोटे छोटे वाक्यों में होती थीं। जैसे बड़ी बातें करके वे थक चुके हों।

'यह जार भी क्या है !' इसोट ने कहा।

'कसाई है, कसाई।' कुकुरिकन ने कहा।

'दिमाग भी नहीं है,' पेनकोव ने कहा, 'वह सभी राजकुमारों की हत्या करा चुका है। उसके दरबार में विदेशी बहुत हैं। इसके कोई माने ही नहीं है छोटा जमींदार इससे अच्छा। एक मक्खी को राइफल से मारा नहीं जा सकता लेकिन मक्खी भेड़िये से ज्यादा तंग कर सकती है।'

कुकुरिकन एक बाल्टी में गीली मिट्टी लाया, चूल्हा बनाने के लिये। उखड़ी ईंटों को सजाते हुये वह बोला 'इन मूर्खों के सिर में दिमाग नहीं होता। वे जाने क्यों परेशान करने पर लगे हुये हैं !'

खोखोल ने एक सहयोगी फलों का बाग बनाया था। पेनकोव, सुसलोव आदि कई ने उसको सहयोग भी दिया था। यहाँ तक की खोखोल ने भी मदद दिया था।

मैं मीगन के प्रति उसके सुरीले गाने के कारण काफी आकर्षित था। गाते समय वह आँखें बन्द कर लेता था और उसके चेहरे पर शांति छा जाती थी काली रातों में जब सन्नाटे के साथ ही आकाश को काले बादल छाए रहते तो उसे गाने का जी होता। अक्सर ऐसी शामों को वह कहता, चलो वोल्गा चलें।' वहाँ पानी में टाँगें डाल कर वह बैठता। तब फिर कहना शुरू करता, 'जब कोई मुझसे बड़ा आदमी कोई बात कहता है तो मैं सुनता हूँ। भला, इन देहातियों की क्यों सुनूं ? हममें अन्तर क्या है—यही रूबल और कोपेक ही का न !'

नीचे काली नदी बहती ऊपर काला आकाश तैरता। इसी समय पहाड़ी पर से एक कुत्ते के रोने की आवाज आई। लगा जैसे वह कह रहा हो—ऐसी जिन्दगी में जीना व्यर्थ है।

नदी के पास सब शान्त था—'वे खोखोल को मार डालेंगे और साथ में तुम्हें भी, अगर तुम बहुत सतर्क न रहोगे!' कहा फिर गुनगुनाने लगा।

उसकी आखें बन्द, आवाज धीरे धीरे बढ़ रही थी, उँग-लियाँ हवा में ही थिरक रहीं थीं।

मैं अन्धकार की गहनता से तनिक डर रहा था। इतना अँधेरा कि लगता था जैसे अब कभी यहाँ सूरज न उगेगा। इस अँधेरे में ही मीगन को क्यों शांति मिलती है। उसके शांत चेहरे को देखकर मैं सोच रहा था, 'इन आदमियों का जीवन भी क्या है!'

मेरी बारीनोव की भी पटती थी। वह, बेवकूफ, झूठी अफवाहें फैलाने वाला आवारा। मास्को में वह रह चुका था। वहाँ के बारे में बताता, 'नरक है नरक! चौदह हजार वहां गिरिजा घर हैं। वहाँ महान पीटर है जिसके विरोध में एक अमीर महिला अपने प्यार के हार के कारण उठी थी। वह उसके साथ सात साल रही थी। तीन बच्चे हुये थे। फिर अचानक वह उससे अलग हो गया था इसीलिये तो वह पागल होकर विद्रोहिनी बनी है।'

मैंने कहा, 'यह सब बकवास है।'

वाह यह मुझे एक बहुत विद्वान व्यक्ति ने बताया था और तू……।'

कीव के बारे में वह कहता, 'वह शहर हमारे गाँव की तरह ही है। वह भी नदी के किनारे, पहाड़ पर है। लेकिन मुझे नदी का नाम याद नहीं। वहाँ के लोगों में तातार और

पोलिश खूब हैं। उनकी अलग जाति नहीं। वहाँ दस दस पौंड के मेढ़क होते हैं और वहाँ वाले उन्हें खाते हैं। वे बैलों पर चढ़ते हैं, खेत जुतवाते हैं। यह भी अजीब जानवर हैं। वहाँ सत्तावन हज़ार साधू हैं और दो सौ तिहत्तर पादरी। भला मेरी बातों को काटो तो......? मैंने सब आँखों से देखा है। तू वहाँ कभी गया भी था? नहीं गया न, हाँ! बच्चे मैं सब चीजों का ठीक ठीक हिसाब रखता हूं।'

बारीनोव को सभी संख्या याद रहती हैं। मैंने उसे गुणा व भाग करना सिखाया लेकिन उसे पसन्द न आया। उसको एक और विशेषता थी कि वह बच्चों की सी स्वच्छ हँसी हँसता था। उसे देखकर मुझे कुकुस्किन की याद आती थी क्योंकि दोनों की शक्ल भी काफी मिलती थी।

बारीनोव ने कैस्पियन सागर में भी मछली मारी है। उसके बारे में वह कहता, 'वह अजीब समुद्र है। वहाँ जाकर कभी कोई आ नहीं सकता। वहाँ का जीवन भी बहुत शांत है।

अपने गाँव में बारीनोव की स्थिति एक लावारिस कुत्ते की थी। लेकिन मीगन के गानों की तरह उसकी कहानियाँ भी प्रसिद्ध थीं।

मेरे लिए सभी लोग आश्चर्य के नायक थे। बूढ़ा सुसलोव कहता, 'सब कुछ खुदा करता है।' मेरे लिए यह शब्द बुजदिलों के हैं।

फिर भी इनके बीच रहना बड़ा अच्छा था। कभी-कभी पेनकोव अपनी पत्नी के साथ आता। छोटी सी सी लेकिन आँखों में गजब की चमक! वह कोने में बैठ कर बातें सुनती और तरह-तरह की भाव-भंगिया बनाती।

अक्सर रोमास के कुछ अजीब-अजीब मित्र आते। अकसीनियाँ उन्हें खाना और शराब देती। वे अक्सर रात को

सोते भी लेकिन उनके रहने की बात केवल हमें व अक्सीनियाँ को ही मालूम रहती।

अक्सर शहर से मेरिया डेरेनकोव भी आती। लेकिन उसकी आँखों में वह चितवन मुझे दिखाई न पड़ती जिससे पहले मैं परेशान होता था। अब उसकी आंखों में एक युवती की चितवन थी। उसे अपने पर तनिक घमण्ड भी था क्योंकि वह लम्बी दाढ़ीवाला उसे अब प्यार करने लगा था। वह अधिकतर नीले कपड़े ही पहनती। उसकी आवाज भी संगीत की तरह थी—वह बालों में भी नीले रिबन ही बांधती। वह जब आती तो मैं यही कोशिश करता कि मेरी भेंट न हो तभी अच्छा है।

जुलाई के मध्य में इसोट गायब हो गया। लोगों ने बताया कि वह डूब गया। लोग यह भी कहते कि अवश्य ही वह नाव पर सो गया होगा। उस समय रोमास कजान में था। शाम को कुकुश्किन दूकान में आया। बहुत उदास था, एक बोरे पर बैठ गया। फिर सिगरेट जलाकर पूछा, 'खोखोल कब तक आवेगा?'

'मैं नहीं जानता पर क्या मामला है।'

अजीब तरह से मुझे घूरकर उसने ओंठ काटे। मैं समझ गया कि वह कोई बुरी खबर लाया है और बहुत बेसब्री से इन्तजार कर रहा है। अन्त में बहुत प्रयत्न के साथ बोलते हुए उसने कहा, 'मैं इसोट की नाव के पास मीगन के साथ गया था। उस पर कुल्हाड़ी के दाग थे। इसके माने हैं कि इसोट मारा गया है, मारा गया मेरा विश्वास है।'

थोड़ी देर यों ही बैठा रहकर वह चला गया।

कुछ दिनों बाद बच्चों ने नदी के किनारे उसकी लाश देखी। वहां बहुत से किसान और पदाधिकारी इकट्ठे हो गये।

सभी इस निर्मम हत्या पर दुःख प्रगट कर रहे थे। एक अफसर की पतोहू! वह युवती स्त्री बहुत रोई। पहाड़ी पर से स्त्रियों और बच्चों का एक झुण्ड आकर इकट्ठा हो गया।

भीड़ में से हल्की सी आवाज आई, 'यह बहुत गड़बड़ी करता था......।'

'कौन कहता है? कुकुस्किन गड़बड़ी करता था, यह बेकार ही मारा गया था। इसोट तो शांतिप्रिय आदमी था।'

कुकुस्किन भीड़ को चीर कर प्रकट हो गया, 'शांतिप्रिय था तो क्यों मारा गया?'

उपस्थित स्त्रियां एक साथ हँस पड़ीं। एक ने उसे एक तमाचा मारा और कहा, 'सब तेरे ही कारण है। तू कुत्ता है।'

मेरी ओर देखकर वह चीखा, 'हट जा, आज कसके लड़ाई होगी।'

इसके पहले ही उस पर अनेक घूँसे पड़ चुके थे। उसके ओंठ से खून भी बहने लगा था। तभी बारीनोव आ गया, 'अब हम लोगों को हट जाना चाहिये।' कहकर वह चला गया।

मेरे सामने इसोट का कुचला हुआ शरीर तैर रहा था। मुझे उसकी अच्छी अच्छी बातें याद आने लगीं।

दो दिन बाद खोखोल आया। वह किसी बात पर खुश था। मेरी पीठ थपथपाकर पूछा, 'तुम्हें सोने को तो न मिला होगा, मैक्सिम?'

'इसोट मार डाला गया।'

'क्या क.....हा......?'

फिर वह जैसे काठ का हो गया, 'किसने मारा यह पता लगा?' फिर वह खिड़की पर जाकर बोला, 'मैंने उसे पहले ही आगाह किया था। क्या पुलिस आई थी?'

'हाँ कल!'

मैंने बताया कि सिपाही तो आए थे बाद में कल के झगड़े के कारण कुकुस्किन को पकड़ने गए हैं। मैं रसोईघर में गरम होने के लिये केटली चढ़ाने चला गया।

चाय के समय रोमास ने कहा, 'बेचारे, ये सब से अच्छे आदमी को ही मारते हैं। वह बहुत अच्छा आदमी था, खुश-मिजाज, चतुर और ईमानदार।'

खोखोल बहुत भावुक बना बैठा था। उसने किताबों को देखकर कहा, 'काश, मैं किताबें लिख पाता, लेकिन नहीं मेरे विचार ठीक नहीं हैं।'

वहाँ से अपने कमरे में जाकर भी मैं खिड़की पर बैठा रहा। मेरी आंखों के सामने किनारे पर पड़ा इसोट का शरीर ही नाच रहा था। मुझे लगा जैसे वह मुझसे कह रहा हो, 'भलों के प्रति दया रखना एलेक्सी! इसी की जरूरत है।'

तभी सीढ़ी पर भारी कदम सुनाई पड़े। रोमास झुककर भीतर आ रहा था। आकर वह मेरी खाट पर बैठ गया। फिर अपनी दाढ़ी अपने हाथ में लेकर कहा, 'मैं शादी करने वाला हूं, जानते हो?'

'यहां कोई स्त्री कैसे रहेगी?' मैंने पूछा।

रोमास ने मुझे यों घूरा जैसे मुझसे कुछ आगे सुनना चाहता है लेकिन मैंने कुछ कहा ही नहीं। 'मैं मेरी डेरेनकोव से शादी करनेवाला हूं।'

मुझे बरबस हँसी आ ही गई। उस क्षण के पूर्व मैंने कभी यह सोचा भी न था कि 'मेरिया' को 'मेरी' भी कहा जा सकता है। मुझे कल्पनामात्र से ही हँसी आ गई। मुझे याद है कि बहुत प्यार से भी उसके पिता या भाई ने उसे 'मेरी' न कहा था।

'हँसे क्यों?'

'कुछ नहीं यों ही! सचमुच यों ही!'

'शायद तुम सोचते होगे कि मैं उसके लिए बहुत बूढ़ा हूँ!'

'कदापि नहीं।'

'तुम उसे प्यार करते थे, ऐसा उसने बताया है।'

'हाँ मैं समझता हूँ—शायद था।'

'क्या अब समाप्त हो गया?'

'हाँ ऐसी ही मेरी धारणा है?'

'हाँ, तुम्हारी उम्र में प्रेम एक विचार होता है। लेकिन मेरी अवस्था में यह बात नहीं।'

फिर वह उठकर खड़ा हो गया और फिर बोला, 'तो मैं शादी तो कर ही रहा हूँ।'

'क्या जल्दी ही?'

'हाँ।' कहकर वह चला गया। झुकना उसके लिये आवश्यक ही था। मैं खाट पर सोने चला गया और सोचा कि इस ब्याह के पूर्व मैं चला जाऊँगा।

अगस्त के प्रारम्भ में रोमास कजान से वापस आया। दो बड़ी नावों में सामान लाया। एक में बिक्री का सामान। दूसरे में घर-गृहस्थी की चीजें। यह सुबह के आठ बजे थे। खोखोल उठ आया था और चा पी रहा था। वह कह रहा था, 'रात को नदी की यात्रा अच्छी होती है।' कि कुछ सूंघकर फिर पूछा, 'क्या तुम्हें भी धुयें की गन्ध लग रही है?'

उसी क्षण अक्सीनिया चिल्ला उठी, 'आग, आग!' हम लोग दौड़े। जहाँ, हमलोग मिट्टी का तेल, अनाज का तेल, रखते थे वहीं आग लगी थी। पीली लपटें छत को छू रहीं थीं। हमलोग यह दृश्य देखकर हतप्रभ रह गये। अक्सीनिया बाल्टी में पानी ले आई थी। खोखोल ने उसी को छोड़ा। फिर वह बोला, 'इससे काम नहीं चलेगा। पीपी को हटाओ एलेक्स! और अक्सीनिया तू दूकान में जा देख!'

मैं दौड़कर एक मिट्टी के तेल का पीपा उठाने लगा। लेकिन देखा कि उसका ढक्कन खुल गया था और तेल बाहर आकर वह रहा था। आग किसी तरह दव नहीं रही थी। छत तो फटने लगी थी। जब मैंने आधा खाली पीपा ही हटाया और गली में ले गया तो वहाँ देखा कि गली में काफी तादाद में स्त्रियाँ व बच्चे इकट्ठे हो गये हैं। खोखोल और अक्सीनिया दूकान के सामान निकालकर गली में रख रहे थे। तभी एक पके बालों वाली स्त्री ने कराह कर कहा, 'ओह, वदमाशों ने क्या किया ?'

अव तक वहाँ घना धुआँ भर गया था और कुछ दिखाई न पड़ता था। लकड़ी के चिटखने व दीवाल के फटने की आवाज आ रही थी मैं इसी धुएँ में फँस गया। मैंने सहायता के लिये खोखोल को पुकारा। उसने खींचकर मुझे अलग किया। फिर कहा,

'भागो, किसी भी क्षण यहाँ विस्फोट हो सकता है।'

मैं घर में घुसा ताकि अपने कमरे से कितावें बचा सकूँ। वहाँ से कितावें मैंने खिड़की की राह बाहर फेंकना शुरू कर दिया। तभी जोरों का धड़ाका हुआ। ऊपर नीचे सर्वत्र आग ही आग। ऐसी आवाज आ रही थी। जैसे कोई लोहे के दाँतों से लकड़ी चवा रहा हो। मैं आग में फँस गया। मेरे होश उड़ गये। अवाक् खड़ा मैं मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। लाल दाढ़ी वाला एक लाल चेहरा खिड़की से प्रकट हुआ। मुझे लगा कि मैं मर रहा हूँ। मुझे याद है कि मेरे वाल तक जलने लगे थे। पांव हांथ जल गये थे—आंखों में भी दर्द हो रहा था। खोखोल का कोट सिर से पांव तक ओढ़कर मैं निसहाय होकर खिड़की से कूद पड़ा। फिर मुझे होश नहीं कि क्या हुआ। जब मैं

जागा तो नाली के पास पड़ा था और मेरे बगल में रोमास था। पूछा उसने 'अच्छे हो ?'

मैंने सिर घुमाकर देखा—आग ने घर को राख कर दिया था।

'अब क्या हो !' डरी आँखों से देखकर रोता हुआ खोखोल बोला। 'मेरे पांव में चोट है क्या ?' मैंने पूछा।

खोखोल ने गौर से देखा और फिर एक झटका दिया। मुझे थोड़ा दर्द तो हुआ पर मैं शीघ्र ही सबों के साथ सामान ढोने लगा।

रोमास ने कहा, 'मुझे विश्वास था तुम जल जाओगे। जब मिट्टी के तेल का पीपा फटा और तेल ऊपर छत पर उछला। फिर पूरे घर पर छा गया। मैंने तो समझा कि एलेक्सी मर गया !'

उसकी खामोशी फिर आ गई। चीजों को गांजते हुये उसने कहा, 'अक्सीनिया ! तू सामान देख। नहीं तो सब चोरी चला जायगा मैं आग को बुझवा लूँ।'

उस समय जलते घर के ऊपर लपटों के साथ सफेद कागज के टुकड़े उड़ रहे थे। व्यथित होकर रोमास ने कहा, 'वह किताबों की दुर्दशा है। मैं उन्हें कितने शौक से रखता था !'

चार मकान जल चुके थे। आग शांत न हो पा रही थी और दाहिने बाएँ दोनों ओर बढ़ी जा रही थी। हर ओर लोग सामान बचाने में लगे थे, चिल्ला रहे थे, आग, आग, पानी ! पानी !'

रोमास ने आदमियों को तय किया कि वे वोल्गा से पानी लावें। तभी मैंने देखा कि अफसर और कुजमिन के साथ कुछ अमीर किसान चले आ रहे हैं। उन्होंने कोई मदद न दी केवल अपने हाथ व छड़ी उठा उठा कर राय देते रहे।

अब तक मकान के दूसरे हिस्से पर आग का हमला हो चुका था। तभी दीवाल का एक भाग नीचे गिरा। मैं करीब करीब उसके चपेट में आ गया था।

'तुम्हें चोट आई!' रोमास ने पूछा।

हम लोग आग बुझाने में लगे थे। तभी उस भले किसानों की भीड़ से किसी ने कहा, 'जानकर लगाई गई है।'

कुजमिन नामक दूकानदार ने भी इसी प्रकार कुछ कहा। मैंने कितनी ताकत से काम किया था कहा नहीं जा सकता। जब मैं गिर पड़ा तो रोमास ने कहा, 'अब जरा आराम करो।'

कुकुस्किन और वारीनोव भी धुएँ से काले हो गए थे उन्होंने भी मुझे सांत्वना दी।

तभी मैंने देखा कि दो सिपाहियों के बीच रोमास और उसके पीछे अफसर व अन्य धनी लोग उस स्थान की ओर जा रहे थे जहां सामान भरा गया था।

आशंका से मैंने देखा। उसकी कमीज गीली थी ही अब फट भी गई थी। टूटे स्थान घर में जहाँ सामान इकट्ठा किया गया था वहाँ अफसर ने कहा, 'दरवाजा खोलो।'

'दरवाजा तोड़ डालो, चाभी खो गई है।' रोमास ने बताया। मैंने दौड़ कर एक लाठी उठा ली और वहीं जा खड़ा हुआ। अफसर ने कहा, 'ताला तोड़ना गैर कानूनी है।'

कुजमिन ने मुझे इशारा किया। 'यह भी है। यह भी।'

रोमास ने बताया कि मैं चुप ही रहूँ। इन्हें शक है कि मैंने यहाँ सामान चुरा लिया है और दूकान में आग लगा दी है।

ताला तोड़ा गया 'यहाँ तो कुछ नहीं, खाली है।'

'कुछ नहीं!'

'ये बदमाश हैं।'

'ये सब डाकू हैं। किसानों की सहयोगी संस्था खोलते हैं। लुटेरे!'

'खामोश!' रोमास चीख उठा, 'देख लिया न! मैंने कुछ छिपाया तो नहीं! अब क्या चाहते हो? मैं ही क्यों न जला देता सब कुछ!'

'इसका बीमा था?'

तभी कुछ आगे बढ़े, चिल्लाये, 'देखा, इनके पास लाठी भी है।'

'लाठी, ओह?'

'एलेक्स चुप रहना, चाहे जो कहें, चुप ही रहना।' खोखोल ने कहा।

एक लंगड़े किसान ने कहा, 'इन्हें ढेले मार कर गाँव से निकाल देना चाहिये।' वह काफी दूर पर जाकर एक ईंटा उठा रहा था फिर वह हम पर चलाता कि कुकुरिकन उस पर भेड़िये की तरह टूट पड़ा और दोनों ही नाले में लुढ़क गये। कुकुरिकन के पीछे से, पेनकोव, बेरीनोव, और एक दर्जन अन्य व्यक्ति आये।

'आओ एलेक्सी! हम लोग चलें।' रोमास ने कहा। अपने मुंह से पाइप निकाल कर पैंट के जेब में ठूँस लिया।

'कितने लज्जा की बात है। सब कितने जल गईं।' खोखोल ने कहा। हम लोग नदी में गये। स्नान किया। फिर किनारे के एक होटल में बैठ कर एक एक गिलास चाय पिया।

तभी पेनखोव भी आ गया खोखोल ने पूछा, 'तुम्हारा क्या हाल है?'

पेनखोव ने कहा, 'मेरे घर का तो बीमा था।'

बड़ी देर तक वहाँ चुपचाप सभी एक दूसरे को अजनबी की तरह देखते बैठे रहे।

'तुम्हारा अब क्या इरादा है, रोमास?'

'अभी सोच रहा हूं।'

'अच्छा हो कि यहाँ से चले जाओ।'

'देखो, सोचूँगा।'

'बाहर, आओ!' पेनखोव ने कहा, 'मेरे पास एक विचार है, तुमसे बाहर बताऊँगा।'

मैं भी बाहर आया और एक झाड़ी के किनारे बैठकर नदी का बहाव देखता रहा। सूरज डूब रहा था फिर भी काफी गरमी थी। एक अजीब भारीपन मेरे मन पर छा गया था। फिर भी थकान के कारण मैं सो गया।

और सपने में देखा कि मैं मर गया हूं।

जागा तो देखा कि सामने थाली की तरह गोल चाँद निकला था। बारीकोव मुझ पर झुका कह रहा था, खोखोल बहुत चिन्तित होकर तुम्हें खोज रहा है।'

फिर चलते चलते बोला, 'इस तरह हर जगह सोया मत करो।' तभी एक झाड़ी से मीगन की आवाज आई, 'मिला!'

'हाँ मेरे साथ है।'

रोमास मुझसे नाराज था। 'तू वहाँ क्या कर रहा था?' जब सिर्फ हमीं दोनों थे तब उसने बहुत विवशता की ध्वनि में कहा, 'पेनकोव का विचार है कि उसके साथ रहें। लेकिन मैं तुझे इसकी राय नहीं दे सकता। वह एक दूकान खोलना चाहता है। यों तो जो कुछ मेरा बचा था मैंने उसी के हाथ

बेच दिया है। मैं शीघ्र ही वीयत्का जाऊंगा और तुझे भी बुला लूंगा। क्या तुम्हें यह विचार पसन्द है?'

'मैं सोचूंगा।'

'अच्छी बात है।'

वह भी खामोश हो गया और खिड़की पर बैठकर वोल्गा की ओर देखने लगा।

'क्या तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है?' रोमास ने पूछा, 'वे लोग तो बुरे हैं ही, उन पर नाराज होना मूर्खता है।'

उसकी इस बात से मुझे तनिक धैर्य बंधा। लेकिन जो कुछ घटनाएं घटी थीं उन्हें मैं भूल नहीं पा रहा था। जिस दिन रोमास गया उसने कहा, 'लोगों से लड़ना मत! क्योंकि किसी भी क्षण क्रोध आ सकता है। इससे अपना बुरा ही होगा। जो कुछ हो उसे सहना और यही सोचना कि हर बात का अन्त होता ही है। और फिर जो आएगा वह अवश्य ही अच्छा होगा। अच्छा विदा, मित्र, हम लोग शीघ्र ही मिलेंगे।'

लेकिन हम लोग मिले पन्द्रह वर्ष बाद। जब दस वर्ष के निर्वासन के बाद वह याकुत्स से आया।

रोमास के जाने के बाद मेरी वही स्थिति थी जो किसी पिल्ले की बिना मालिक के होती है। बारीनोव के घर के एक कोठरी में मैं रहता था। मैं अच्छे, अमीर किसानों का काम करता था—गल्ला जमा करता, आलू खोदता और बाग का काम देखता।

एक बरसाती रात को उसने कहा, 'एलेक्स, तुम तो बिना फौज के सरदार हो। क्या कल हम लोग समुद्र की ओर चलेंगे? सच पूछो तो हमारे करने को वही काम है।'

यह पहली वार था जब वह इस प्रकार मुझसे बोला था। वह भी आज कल कुछ परेशान था। वह इस प्रकार चारों ओर सूनी नजर से देखता जैसे किसी जंगल में रास्ता भूल गया हो।

उसने फिर पूछा, 'कहो एलेक्सी ? क्या कल हम लोग चलेंगे ?'

और हम लोग दूसरे दिन चले गये !

हम लोग एक स्टीमर में बैठे यात्रा कर रहे थे। ऊपर काले बादल छाये थे। नीचे पानी का कलकल ! चारों ओर अंधेरा। मेरी जहाज के ड्रायवर से जान पहचान हो गई। मैंने उसका नाम पूछा, उसने छुटी हुई आवाज में पूछा, 'तुम क्यों जानना चाहते हो ?'

जब शाम को कजान से चले थे तब मैंने देखा था कि भालू जैसा दिखने वाला आदमी अच्छा था। एक काठ के मग में वोदका की पूरी बोतल उंडेल कर पानी की तरह पी गया फिर सेव खाकर स्वाद बदला। फिर जब जहाज हिला तो कहा, 'खुदा, हाफिज !'

अस्त्राखान के निजनी के मेले का शोर यहाँ तक सुनाई पड़ रहा था। बारीनोव लगातार इसी की बातें कर रहा था।

'तुमसे क्या मतलब है ?' उसने डांटा।

'मैं सोच रहा था, तुमसे क्या ?'

अवश्य ही हम लोग बिना पैसे दिये यात्रा कर रहे थे पर इसके यह माने नहीं कि वे हमें भिखारी समझें बारीनोव मुझ

पर कूद रहा था, 'तुम्हें यह आदमी अच्छा लगता था न! तुम्हारे ही कारण मैं इस पर चढ़ा हूँ।'

अंधकार इतना घना था कि कुछ भी न जान आता था। ड्रायवर ने मुझे अपने मदद के लिये बैठा लिया। लेकिन इस आदमी से बातें करना तो असम्भव ही था जो हर बात का उत्तर देता था, 'तुमसे क्या मतलब?'

मुझे आश्चर्य था कि इस आदमी के सिर में क्या है। एकाएक उसने कहा, 'डूब गया!'

'क्या?' मैंने पूछा पर कोई उत्तर न मिला।

बहुत दूर से अँधेरे को चीरकर कुत्तों की आवाज आरही थी। 'यहाँ के कुत्ते अच्छे नहीं हैं!' अचानक उसने कहा।

'कहाँ के?'

'सब ओर, चारों ओर के!'

'तुम कहाँ के रहने वाले हो?'

'वोलोग्डा।'

फिर एकाएक वह यों बोला जैसे किसी बोरे के खुल जाने से आलू निकल पड़ें—'यह आदमी जो तेरा चाचा है न। मेरी राय में यह मूर्ख है। किसी का चाचा अच्छा हो तो उसकी क़िस्मत खुल जाती है।' फिर क्षण भर बाद कहा, 'तुम्हें पढ़ना आता है? जानते हो कानून कौन बनाता है?' मुझे बोलने का अवसर न देकर उसने फिर कहा, 'कुछ लोग कहते हैं, जार, कुछ कहते हैं, पादरी लोग। कानून कठोर होना चाहिये लोहे की तरह और चाभी की तरह सुलभ।'

इस समय सर्दी के कारण मैं सोना चाहता था। उसकी बात पूरी तरह सुन भी नहीं रहा था।

इसी समय एक व्यक्ति उसके पास आया और मैं सोने चला गया। जब जगा तब तीन आदमी (मल्लाह) उसे पकड़ कर

दीवाल से धक्का दे रहे थे।

'तुम डूब जाओगे!' आदमियों ने उसे समझाया।

'नहीं नहीं, मैं नहीं डूबूँगा। मुझे जाने दो। नहीं तो मैं उसे मारूँगा ही—जब हम सिमविर्क्स में उतरेंगे......'

'अच्छा अब चुप रहो।'

लोगों ने उसे छोड़ दिया। उसने कहा, 'धन्यवाद।'

सिमविर्क्स में हम दोनों को उतार कर एक मल्लाह ने कहा, 'तुमसे मेरा काम न चलेगा।'

किनारे पर हमलोग धूप खाने बैठे रहे। हम दोनों के पास सैंतिस कोपेक थे। हम लोगों ने होटल में चाय पिया।

'अब क्या करना होगा?' मैंने पूछा।

'क्यों, योंही ठीक हो जायगा!' वारीनोव ने कहा।

हमलोग समारा तक स्ट्रीमर पर गये। इस बार किराए के स्थान पर हमलोगों ने जहाज का काम किया। सात दिन में कैस्पियन के किनारे के बन्दरगाह पर पहुँचे।

सात

डोवरिका डिपो में मै रात का पहरेदार था। शाम को छः बजे से सुबह छः बजे तक मैं चहलकदमी करता रहता। बर्फ जोरों की पड़ रही थी। उसी बर्फ की बरसात के बीच दो काली छायाएँ दिखाई पड़ी—कोजाक आटा के चोर! मुझसे छिपने के लिए वे बर्फ में ही छिपने लगे। लेकिन मैं अत्यधिक सतर्क था। थोड़ी देर के बाद ही वे मेरे पास आये—मुझे घूस देना चाहा। बाद में गाली दी।

'यह सब कुछ नहीं।' मैंने कह दिया।

वे मुझे परेशान करते रहे। मेरा कोई इरादा न था कि मैं उनकी बातें सुनूँ क्योंकि मैं जानता था कि गरीबी के कारण वे चोरी करने नहीं आए बल्कि वे रुपया, शराब और औरत के लिए आए हैं। बाद में तो अक्सर वे मुझे बहकाने के लिए सेंट पिटर्सबर्ग के एक कोजाक की बहुत सुन्दर सी विधवा को मेरे पास भेजते रहे।

वह कहती, 'वे लोग बहुत होशियार हैं। दूसरे श्रेणी के आंटे का ही एक बोरा दे दो, ठीक? नहीं? अच्छा तीसरे श्रेणी के आंटे का ही एक बोरा सही।'

तासवोव का वैकोव, लूल्हा इब्राहिम और उस्मात का तातार सभी उसके चक्कर में आ चुके थे। वह उनके सामने खुली छाती दिखाती हुई खड़ी हो जाती, 'अपने लिये अच्छा मौका छोड़ो मत। मुझ जैसी मधु को छोड़कर पछताओगे।'

अवश्य ही उसकी बातों से उन्हें लालच हो आती। उसकी आवाज बिलकुल दृढ़ होती और उसके सुन्दर चेहरे में बिल्ली की आँखों की चमक! फलस्वरूप इब्राहिम उसको लेकर किसी छोटे से कमरे में घुस जाता और उसके साथी स्लेज पर बोरे लादते होते।

उस स्त्री की वेशर्मी से मेरे मन में विद्रोह की अग्नि भड़क उठी। उसके सुन्दर चेहरे और आकर्षक देह के प्रति घृणा ही उपजी। अक्सर उसके आलिंगन की चर्चा करके इब्राहिम थूक देता और कहता, 'डाइन!' और वैकोव तो कहता, 'उसे मार डालना चाहिये।'

छुट्टियों के दिन वह अच्छे कपड़े पहनती। अच्छा जूता। गुलाबी रूमाल में उसके बाल बँधे होते। वह उस दिन शहर में जाकर पढ़े-लिखे लोगों को फँसाती।

जब उसने मुझपर हाथ बढ़ाया तो मैंने उसे भगा दिया।

गर्मी में चाँदनी रात में एक बार जब झपकी लग गई तो आँख खुलने पर देखा कि सामने लुइसी खड़ी है। उस चाँदनी में उसकी सुन्दरता और धुल गई थी। वह अपने कोट के जेबों में हाथ डाले खड़ी आंखें नचा रही थी। 'घबड़ाओ नहीं।' उसने कहा, 'मैं केवल टहलने निकली हूँ।'

मैंने आकाश में देखा, तारों को देखकर साफ पता लगता था कि आधी रात से ज्यादा का समय है। 'क्या यह घूमने के लिये गलत समय नहीं है।'

'औरत एक रात्रि-जीव है।' लुइसी मेरे बगल में बैठती हुई बोली, 'और तुम सो क्यों रहे थे ? क्या इसी के लिये तुमने नौकरी की है ?'

उसने अपनी जेब से कुछ निकालकर मुँह में डाला और चूसती हुई बोली, 'सुना है कि तुम पढ़े-लिखे हो ? बताओ ओबोलाक शहर कहां है ?'

'मैं नहीं जानता !'

'यही जगह है जहाँ वर्जिन मेरी हुई थी।'

'तो तुम्हारा मतलब उस शहर से है !'

'हाँ वह कहाँ है ?'

'साइबेरिया में।'

'मैं वहाँ जाऊँ तो ? लेकिन बहुत दूर है।'

'क्यों ?'

'अपने प्रायश्चित के लिये। मैं पापिनी हूँ। तुम पुरुषों ने मुझे पाप के गढ़े में गिराया ! क्या तुम्हारे पास सिगरेट है ?'

उसने सिगरेट जलाकर कहा, 'यह किसी कोजाक से मत बताना। वे स्त्रियों के सिगरेट पीने के खिलाफ हैं। उस रात जाने क्यों मुझे उसका चेहरा बहुत आकर्षक लगा।

एक टूटने वाले तारे के कारण क्षण भर को आकाश में एक सुनहरी रेखा खिंची। क्रास बनाकर उसने कहा, 'खुदा उसकी आत्मा को शांति दे। एक दिन मेरा सितारा भी इसी तरह टूटेगा। तुम्हें आज की रात कैसीलग रही है। 'मुझे तो बहुत अच्छी लग रही है।' कहकर उसने सिगरेट फेंक दी फिर पूछा, 'क्या कुछ आनन्द की इच्छा है ?'

जब मैंने इन्कार कर दिया तो वह बोली, 'सभी तो कहते हैं मेरे साथ उन्हें आनन्द मिलता है।'

वहुत धीरज से मैंने समझाया कि लोगों की इस कलंक कहानी में उसके व्यवहारों का कितना हाथ रहा है। फिर एक ओर देखकर उसने बड़े दृढ़ शब्दों में कहा, 'वहुत विवशता ने मुझसे यह सब कराया। ये पुरुष……!' 'मैं कितनी सताई गई हूँ।'

'पुरुष' कहने का उसका अपना ढङ्ग था। लगता जैसे वह किसी अन्य अर्थों में कह रही है। फिर सिर पीछा करके उसने आकाश की ओर ऊपर देखा आह छोड़कर कहा, 'इसमें मेरा दोष नहीं है। मैं बिल्कुल दोषी नहीं हूँ।'

थोड़ी देर की शान्त के वाद वह उठ खड़ी हुई। फिर कहा, 'मैं स्टेशन मास्टर के पास जा रही हूँ।'

वह चाँदनी में हिलती हुई दूर जा रही थी और मैं उसके शब्दों से मानो दवा वैठा था, 'पुरुष' · · · 'मैं कितना सताई गई हूँ।'

इस प्रकार जितने लोग मेरे जीवन में आए सभी मेरी आत्मा पर एक न एक छाप छोड़ते ही गए। वह स्टेशन मास्टर ! पेत्रोवस्की, चौड़े कंधों वाला, लम्बी वाहों वाला व्यक्ति ! उसकी वड़ी-बड़ी काली आँखें वहुत ही प्रभावशील थीं। उसकी दाढ़ी वड़ी-वड़ी, घनी और काली थी। सव मिलाकर वह एक जानवर का रूप ही प्रकट करता था। वोलता भी वह वहुत तेज था। जब क्रुद्ध होता तो नथुनों से सीटी वजने लगती थी। वह वहुत कठोर प्रकृति का आदमी था। यह अफवाह थी कि अपनी पत्नी को पीटकर उसने मार डाला है।

उसके पास आनेवालों में एक तो पुलिस का दरोगा, मासलोव था। गंजा सिर, लोमड़ी की सी आँखें। दूसरा व्यक्ति जो उसके पास आता, वह था सावुन का एक व्यापारी टीखोन स्टेफेकिन, जो देखने सुनने में इन दोनों से भला था। उसके

यहाँ साबुन बनाने के काम करने वाले मजदूरों को कई बार जहर खाना पड़। जिससे उस पर कई बार मुकदमा भी चल चुका था। उसे जुर्माना भी देना पड़ा था। तीसरा व्यक्ति एक शराबी भी आता था जिसका नाम बोरोशिलोव था। उसके नीली-नीली बहुत प्यारी आँखें थीं इसीलिये उसे 'आँखों का चोर' कहते थे।

अक्सर उसके साथ गाँव की कुछ लड़कियाँ, स्त्रियाँ और लुइसी भी होती। एक कमरे में जिसमें बहुत सी कोच बिछी होतीं उसी में सब जुटते। बीच ही मेज पर सिगरेट के धुएँ के तूफान के बीच, उबाले हुए सेब, जाम और वोदका से भरी एक बड़ी बोतल रखी होती। वे खूब पीकर जब मस्त हो जाते तो बाशखीर गिटार बजाना शुरू करता। वे उस समय उठकर दूसरे कमरे में चले जाते जहाँ सिर्फ कुर्सियाँ रखी होती थीं।

अच्छा गाना होता। औरतों की आवाज भी बहुत सुरीली आ रही थी। एक कजाक स्त्री कुबासोवा बहुत बढ़िया गाती। लुइसी उसके सामने फीकी पड़ जाती। फिर नाच होता। सभी नशे में पूरी तरह चूर! औरतें भी पिए होतीं। उनका उछलना कूदना देखने योग्य होता।

एक बार पेत्रोवस्की के कहने पर मैं भी शामिल हुआ क्यों कि मुझे कई गाने याद थे। लेकिन मैं उनके साथ उतना मजा न पा सका। 'खूब पेश्कोव!' वह चिल्लाया। औरतों को चूमने के पूर्व भी वह इसी तरह जानवरों की तरह चिल्लाता था।

मैं जो खोल कर गाता रहा। उन्हें गाने इतने पसन्द आए कि कई बार सबों ने मुझे चूमा।

'पिओ थोड़ा, कोई बुरा न होगा!' पेत्रोवस्की ने आग्रह किया।

लुइसी ने अपना हाथ ऊपर कर के कहा, 'मैं तो इसके प्यार में पागल हो रही हूं—मैं इसे प्यार करती हूँ—यह मैं सब के सामने कह रही हूँ।'

फिर वे मुझे अपनी ऐसी दावतों में बराबर बुलाते रहे।

खिड़की के बाहर, स्टेशन की लैम्पों के मनहूस धुएँ में, ट्रेनों की लाल बत्तियाँ और इंजिनियरों व तेल देने वालों की लैम्पों का हिलना दिखाई देता। जब ट्रेन सीटी देती तो खिड़की हिलने लगती।

मुझे ये सभी आदमी बेकार लगे। उनके बीच मुझे घुटन हो रही थी।

'औरतों को नंगी कर दो।' एक बार पेत्रोवस्की ने आज्ञा दिया।

यह काम उसके साथी स्तेपाखोन ने किया। बहुत सहूलियत से एक-एक कपड़े को खोलकर अलग-अलग कोने में रखा।

नंगी औरतों को पुरुषों ने घेर लिया और उनके नंगे शरीर के अंगों की वे उसी तरह तारीफ करने लगे जैसे अभी कुछ पूर्व वे गाने व नाचने की तारीफ कर रहे थे। फिर वे लोग दूसरे कमरे में चले गये। वहाँ जो कुछ हुआ उसका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं।

मुझे एक आदमी की पशुता पर आश्चर्य था लेकिन स्त्रियों के प्रति कठोर व्यवहार करते उसे देखकर मुझे आश्चर्य होता क्योंकि कुछ पूर्व ही उनके नग्न सौंदर्य में भी वे धार्मिकता का अनुभव कर रहे थे। पेत्रोवस्की ने उसी नशे में साफ कहा, 'हम इन्सान कहाँ हैं। मेरे अन्दर तो बहुत बड़ा राक्षस है।'

औरतें दर्द से चीखती होतीं फिर भी इसका विरोध न करतीं। लुइसी चीख कर पेत्रोवस्की से कहती, 'मुझे बहुत तकलीफ है। अब कोई दूसरी...।' उसकी बिल्ली की तरह वाली आँखें फैल गई थीं। मुझे डर लगा कि पेत्रोवस्की उसे मार न डाले।

एक बार स्टेशन मास्टर के यहाँ से उसके साथ आते समय मैंने पूछा कि वह इसको क्यों होने देती है।

'इससे उन्हें भी तो बहुत तकलीफ होती है। मास्टर तो रोने भी लगता है।'

'क्यों?'

'वह स्टेशन मास्टर बूढ़ा है न। उसमें अब ताकत नहीं है। और दूसरे अफरीकन और स्तेपर्खीन—लेकिन तुम नहीं समझ सकते। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं कि समझा सकूँ।'

'तुम्हें सब चीजें जाननी और समझनी चाहिये।' मुझसे ये शब्द अक्सर रोमास ने कहा था। अब मैं हर चीज में अपनी नाक डालता। और जीवन के विभिन्न पहलुओं में बहुत भीतर घुसने के कारण मैंने जीवन से घृणा निकाल दी। क्योंकि किसी को भी किसी से घृणा का अधिकार नहीं है।

फिर मैं तीन या चार महीने डोबरिन्का स्टेशन पर रहा। मुझे पेत्रोवस्की से कोई शिकायत नहीं थी लेकिन उसकी छ: फुट ऊँची रसोइयां मुझे सताया करती। वह लगभग चालीस साल की केथीन मेरियन। वह काफी पढ़ी लिखी थी। वह पेत्रोवस्की के सब से सुन्दर मित्र मासलोव पर मोहित हो गई थी। जब दावतों में वह परोसती तो उसे बहुत ललचाई आँखों से देखती अक्सर वह जमीन पर लेट कर अपनी छाती कूटती और कहती, 'मैं मर रही हूँ मैं बीमार हूँ।'

वह एकान्त में मासलोव को पकड़ कर अपनी बाहों में कस लेती और बच्चों की तरह उसे प्यार करती। उसका असली नाम मासलोवन था बल्कि मारटीन था। वह भी कहता, 'यों तो शरीर से यह भैंस है लेकिन इसका हृदय सोने का है।'

पहले तो वह माँ की तरह उसे स्नेह देती थी लेकिन एक दिन मैंने उससे उसके बारे में पूछा। वह यों जल उठी जैसे उस पर गरम पानी छोड़ दिया हो। आँखों से आग बरसने लगी।—'भागो यहाँ से। तुझे तो जहर दे दूंगी—लोमड़ी की औलाद !'

उस दिन से मेरियन मुझसे बहुत क्रूरता से व्यवहार करती। स्टेशन मास्टर के घर की कई चोरी को उसने मेरे सिर पर मढ़ने की कोशिश की। रात भर मैं पहरेदारी करता, सुबह ही वह मुझे बताती—लकड़ी चीरो और रसोई में लाओ, चौका साफ करो और आग भी जलाओ। इसके बाद पेत्रोवस्की के घोड़े का काम फिर अन्य काम जिसमें आधा दिन समाप्त हो जाता और मैं न तो पढ़ पाता न सो पाता। वह अपनी बातें छिपाती भी न थी, कहती, 'मैं तुझे काकेशस। भगा कर ही छोड़ूँगी।'

मैंने मेरियन की क्रूरता का बयान करते हुये अफसर को एक अर्जी भेजी जिसके फलस्वरूप मेरी बदली बोरीसोगलेव्स्क स्टेशन को हो गई। जहाँ मुझे चौकीदारी और बोरों के मरम्मत का काम मिला।

वहाँ मेरा परिचय शिक्षित समुदाय से हुआ। सभी 'अविश्वासी*' थे, सभी को जेल और निर्वासन हो चुका था,

---

*सरकार की नजरों में अविश्वास, जिन पर क्रान्तिकारी होने का शक था।

लेकिन सभी विद्वान और विदेशी भाषाओं के पंडित—कुछ कालेज से निकाले गये विद्यार्थी मास्टर, एक नाविक अफसर और दो सेना के अफसर।

सब वहाँ थे—लगभग साठ। सभी वोल्गा किनारे के शहरों के थे। एक व्यापारी, जिसका नाम था अदादुरोव, के यहाँ सभी काम करते थे। उस व्यापारी का रेल से चोरी न होने देने का ठीका था। इन लोगों के लायक यह काम तो था नहीं।

एक दिन मैं अपने मित्र पाल क्रिकोव के साथ बियर पीता हुआ बातें कर रहा था—'आखिर ऐसे लोगों को वे नौकरी दे कैसे देते हैं। इन्हें तो रेगिस्तान में भेजना चाहिये! कुछ पहले तो इन्हें पीटर्सवर्ग में फांसी दी जाती थी।'

क्रिकोव भी खूब पढ़ा लिखा था। उसके पास बीस किताबें थीं। एक विद्रोहियों के विरोध में मुझे देकर उसने कहा, 'इससे तुम जान जाओगे कि वे कैसे हैं लेकिन उन्हें पता न चले कि तुम्हारे पास यह किताब है।'

वह अकेला ही विद्रोहियों के विरोध का विरोधी न था। मेरा परिचय स्टारोस्टीव-मानेनकोव नामक लेखक से हुआ जो रेलवे के किराया विभाग में एक मुनीम था। जब वह खाँसता तो उसका सारा शरीर हिलने लगता।

उसका कमरा छोटा था। दरवाजों पर गहरे रंगीन पर्दे थे और भीतर गुलदस्ते सजे थे। वह वोद्का पीता और प्याज के टुकड़े चूसता। जब कोई साथी होता तो वह चिल्ला कर कहता, 'असपेन्सकी* तो खेल करता है। मैं तो खून से लिखता हूँ। एक पाठक की हैसियत से बताओ कि असपेन्सकी में क्या

---

* उसी जमाने का एक मशहूर लेखक।

है ? जरूर ही उसकी चीजें बड़ी पत्रिकाओं में छप जाती हैं ; परन्तु मेरी……।'

उसकी कहानियाँ कुछ प्रान्तीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। एक या दो बार देश व्यापी पत्रिका में उसकी चीज छपी थी। उस पत्रिका का नाम था 'डीयलो।'

खाट के नीचे से पाण्डुलिपियों का एक बस्ता जो भूरे रंग के चादर में बँधा होता, निकालता, गर्द झाड़ता और धूल के कारण खांस कर कहता, 'यह रहीं—इन्हें मैंने हृदय के खून से लिखा है, खून से।'

उसका चेहरा पीला था, ऐसे अवसरों में आँखें गीली हो जातीं। उसने अपनी एक लम्बी कहानी सुनाई जिसमें एक किसान और सिपाही का किस्सा था। पढ़कर उसने कहा, 'कितनी बढ़िया लिखी गई है। देखो इसमें आत्मा को कितनी शान्ति मिलती है।'

मुझे कहानी की चिन्ता न थी लेकिन लेखक की भावनाओं को देखकर मुझे आँसू आ गये। मैंने घर पर पढ़ने के लिए पाण्डुलिपि माँगी। मैंने देखा कि उसने कुछ अमीर विधवाओं का बहुत मार्मिक चित्रण किया था। मुझसे अपने मन की भड़ास निकाल कर उसने वोद्का का एक गिलास और पिया फिर कहा, 'कुछ सीखने की कोशिश करो। कविताएँ लिखना मूर्खता है। तुम नेडसन* नहीं हो सकते। तुममें उतनी प्रतिभा नहीं। तुम भावुक नहीं—रूखे हृदय के हो। तुम्हारी कौन कहे—कुश्किन तक ने कविताओं के चक्कर में अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया।'

उसकी मकान मालकिन बहुत मोटी थी। उसकी छातियाँ साधारण रूप से बड़ी थीं। उसकी पीठ किसी भी कुर्सी में

*उसी जमाने का मशहूर कवि।

बड़ी कठिनाई से समा पाती। स्टारोस्टीन ने उसे उसकी एक वर्ष गांठ पर एक बहुत बड़ी आराम कुर्सी भेंट में दिया था। भावावेग में उसने स्टारोस्टीन को दबोच कर चूम लिया फिर मुझे देखकर बोली, 'इससे शिक्षा लो कि स्त्रियों से कैसा व्यवहार किया जाता है।'

मार्च के महीने में चारों ओर फूल खिल गये थे। वसन्ती बयार में हल्की सी संगीत पूर्ण आवाज आती थी। मुझ पर भी वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ा। मैं उन्हीं दिनों शेक्सपियर पढ़ रहा था।

उसका पति एक मास्टर था जो प्रति शनिवार को अपनी पत्नी को स्नानगृह में बन्द कर के पीटता था अक्सर पड़ोसी यह दृश्य देखने के लिये मित्रों को बुला लेते। अक्सर वह स्त्री जो काफी मोटी थी, नंगी ही स्नान घर से भाग कर बाग में छिप जाती। मैं वहाँ तमाशा देखने वालों को देखता। एक बार मैं इन लोगों से लड़ गया और मुझे थाने पर जाना पड़ा। भीड़ में से किसी ने कहा, 'तुम्हें चिढ़ क्यों लगती है। हर एक व्यक्ति ऐसे दृश्यों में मजा पाता है। मास्को में भी ऐसे दृश्यों पर रोक नहीं है।

मैं जिस रेलवे के क्लर्क के कमरे के एक कोने का किराये-दार था उसकी पत्नी और भाई सभी मिलकर रोज मुझे सोने में विघ्न डालते। एक दिन उसके भाई और उसकी मैंने दाँत तोड़ पिटाई की। ये कमबख्त केवल खाने की फिक्र में दिन रात काट देते।

यहाँ मैंने जो कुछ देखा उसे देखकर मेरे मन की उत्सुकता बढ़ती ही गई। इस विद्वान—समाज में भी मुझे दो लड़कियों से परिचय करना प्राप्त करना पड़ा। ये दोनों बहनें थीं। नान्कोन नामक एक अफसर जो लंगड़ा कर चलता था [illegible]

दोनों को 'पवित्र प्रेम' का पाठ पढ़ाता और भाषण देता था। जिसके फलस्वरूप एक दिन उन लड़कियों के भाई का एक पत्र माश्किन को मिला, 'अगर तुमने मेरी बहनों को यह शिक्षा देना बन्द न किया तो मैं तुम्हारी शिकायत तो करूँगा ही साथ ही तुम्हारे कान भी घूँसों से तोड़ दूंगा।'

मेरे सामने दो दुनियां थीं। एक तो अपनी दुनिया दूसरी पेत्रोवस्की के यहाँ की दुनिया। मैं अपने को इस कार्य में असफल पाता कि दोनों दुनियाओं को जोड़ सकूँ।

आज तीस वर्ष बाद जब मैं ये घटनाएँ लिखने बैठा हूँ और ये फिर मेरे सामने स्पष्ट हो गई हैं तब मैं अपने को बहुत अशक्त पाता हूँ क्योंकि मेरे पास वे शब्द नहीं हैं जो इनका ठीक ठीक चित्रण कर सकें।

सिर्फ वाम्कनोव ने बड़ी ऊँची आवाज में कहा, 'ओफ, कितना घृणित! मैं तो वहाँ ऐसा हूँ जैसे कीचड़ में बैल फँस जाए। मुझे शक है कि कहीं तू भी उन्हीं में न मिल जाए! तुम्हारा जीवन अभी कच्चा है, ऊबड़ खाबड़ और उनका बन चुका है। हमें तो आश्चर्य है कि पेत्रोवस्की ने अब तक तुम पर कोई वार क्यों नहीं किया। जानते हो एक बार उसके घर की तलासी हो चुकी है—एक दूसरे मामले में, चाय का एक बड़ा गट्ठर गायब हुआ था। टेबिल में से एक कागज निकालकर उसने इंसपेक्टर को देकर कहा था—'मैंने सचमुच चोरी की है! सब का ब्योरा इसमें है।' कहकर बाजनोव चुप हो गया। उसने अपना सिर खुजलाया फिर हँसकर कहा, 'चोरी बता दी—सच्चा रूसी है। मैं पूछता हूँ तुम क्या इस तरह कह सकते थे!' फिर कुर्सी से उठते हुये उसने कहा, 'हम रूसी भी महान हैं। शायद इसीलिए हमारी परेशानियाँ भी अनगिनत हैं।'

सिर्फ वाम्कनोव ही था जिससे मेरे विचार मेल खाते थे। तोम्स्क का विद्यार्थी जो कीव विश्वविद्यालय में बड़ी कठिनाइयों

के बीच विद्याग्रहण कर रहा था। वहीं उस पर सरकार के प्रति विद्रोह का अभियोग लगाकर सात महीने को जेल भेजा गया था। उसके लम्बे बाल होने से कोई उसे पादरी समझता; शरीर का बहुत बड़ा, लम्बा और चौड़ा होने के कारण कोई उसे विद्यार्थी न मानता। उसकी आवाज मधुर थी और आँखों से सज्जनता टपकती थी। वह बातें करते समय सदा अपने दोनों हाथ जेबों में डाले रहता था। किसी बात पर जोर देना होता तो वह सिर ही हिलाता। अक्सर वह आधी बात करके रुक जाता फिर उसे कभी पूरी न करता। एक बार उसने खोए से मन से कहा, 'मेरी समझ से मनुष्यता इतिहास में तीन हजार वर्ष बाद आई—खैर! मैं शहर वापस जा रहा हूँ। क्या चलोगे?'

मई के अन्त में मेरी बदली वोल्गा-डोन ब्रांच में क्रुताया स्टेशन पर हो गई। जहाँ मुझे तरक्की मिली थी और मैं तोलने-वाला पल्लेदार हो गया था। वहीं पहली जून को मुझे बोरी-सोग्लेस्क से हमारे दफ्तरी मित्र मीशा का पत्र मिला जिससे ज्ञात हुआ कि कब्रगाह के बगल वाले खेत में बुम्भानेव ने गोली मार ली है। बुम्भानेव का एक पत्र भी संलग्न था, 'मीशा, मेरी चीजें बेचकर मकान मालिक को सात रूबल और तीस कोपेक देना। हुवैल की किताबों की जिल्द बँधवा कर क्रुताया में पेन्कोव के पास भेज देना। स्पेन्सर की किताबें भी उसी के लिये हैं, बाकी तुम्हारी हैं। केवल ग्रीक व लेटिन की पुस्तकें कोष में निम्न पते पर जाएँगी। अच्छा मित्रों विदा!'

पत्र पाकर यों रह गया जैसे मेरे हृदय में किसी ने छेद कर दिया है। मुझे इस आदमी के जीवन के अन्त पर हार्दिक कष्ट हुआ।

उसने क्यों आत्महत्या की? मुझे याद आया, एक बार पर

हज्जाम की दूकान पर उसने कहा था, 'एलेक्सी जानते हो ! दुनिया का सबसे अच्छा गाना कौन है ?'

एक फ्रेंच गाना उसने गाया जो उसे बहुत प्रिय था। कुछ ही महीनों में मैं उसके कितने नजदीक आ गया था। यह मैं शब्दों में नहीं बयान कर सकता।

मास्को के एक होटल में मेरी ही मेज पर बहुत लम्बा चश्मा पहने एक व्यक्ति आकर बैठ गया। वह नीली कमीज और भूरा सूती पैन्ट पहने था जो गुठनों पर पेवन्द सहित बहुत छोटा होता था। एक जूते का तल्ला रबर का था दूसरा चमड़े का। उसका नाम था 'एलेक्सी ग्लैडकोव !' वह बाद में बहुत अच्छा व्यक्ति सिद्ध हुआ। वह कानून पढ़े था, लेकिन काम वह अजीब अजीब करता था, जैसे थियेटरों की नोटिसें लिखना। धनी व्यापारियों की पत्नियों की आवश्यकता की चीजें वह खरीद देता। कहता, 'रूसी विशेषकर महिलाएँ बहुत कंजूस हैं।'

मेरे जीवन में ऐसे अनेक लोग आये जिन्हें मैं शक की निगाह से देखता लेकिन वे मुझमें काफी दिलचस्पी लेते थे। वह एक अधपक्के मकान में रहता था। कच्चे फर्श से दुर्गन्ध आती थी। एक कोने में एक बिल्ली लेटी थी और लकड़ी की बेंच पर एक व्यक्ति बैठा था।

'पीसेन मासलोव बहुत बड़ा रसायनिक व विद्वान।' ग्लैडकोव ने परिचय दिया। काफी नाटे कद का वह व्यक्ति देखने में बिल्कुल बालक लगता था। इन लोगों के साथ कुछ दिन बीते। जीवन में कुछ कठोर पहलू और भी सामने आये।

———

आठ

मई की एक सुबह ! मैंने सितम्बर में निमनी पहुंचने के इरादे से जारितयान छोड़ दिया। कुछ दूर ही मैं मोटर पर चला नहीं तो अधिकांश पैदल ही चलना पड़ा। डोन के किनारे किनारे मैं तामबोम और रायाजान तक आया। रायाजान से ओक की ओर बढ़ा तब मास्को की ओर मुड़ा। रास्ते में मैं टाल्सटाय के घर गया। लेकिन टाल्सटाय घर पर नहीं था। श्रीमती टाल्सटाय ने बताया कि वह ट्रोइट्ज-स्सरजोवलक के गिरजेघर में है।

किताबों से भरी एक झोपड़ी के दरवाजे पर वह खड़ी थी। मुझे वह रसोईघर में लिवा ले गई। वहाँ एक केक व काफी का एक प्याला दिया।

सितम्बर करीब-करीब बीत गया था। बरसात के कारण जमीन गीली थी। अवश्य ही सौंदर्य के लिये यह मौसम बहुत महान था लेकिन पैदल यात्रा करनेवालों के लिये बिलकुल खराब। चलने में चमड़े के जूते भी गीले हो जाते थे।

मास्को में मैंने ट्रेन के गार्ड से प्रार्थना किया कि मुझे वह कम से कम जानवरों वाले हिब्बे में सवार होने की आज्ञा दे दे

जिसमें आठ बैल भरे थे जो निझनी जा रहे थे। पांच बैल तो सीधे थे लेकिन तीन बैलों ने रास्ते भर हर कोशिश की कि मैं वहाँ न बैठूँ और चला जाऊँ। अन्त में परेशान होकर ट्रेन के गार्ड ने मुझसे यह काम लेना शुरू किया कि मैं रास्ते भर अपने इन आठों साथियों को ठीक से चारा खिलाता चलूँ।

फिर बैलों के साथ मैंने जीवन के चौंतीस घंटे काटे। मेरे जेब में एक नोटबुक पड़ी थी जिसमें मैंने बहुत कुछ लिख रखा था। उसमें एक कविता भी थी, 'प्राचीन ओक का गीत।' मेरे विचार में उस समय की मेरी वह महान रचना थी। इसमें मैंने वे सभी विचार गूँथ दिए थे जो मेरे जीवन के गत दस कठोर वर्षों में मेरे मन में आये थे।

उन दिनों कारोनिन निझनी में रहता था। मैं उसके यहाँ कई बार गया लेकिन उसे अपनी रचना दिखाने की हिम्मत न पड़ी। वह सदा बीमार रहता था।

मैं उससे कजान में भी मिला था जब अपने निर्वासन से लौटकर वह वहाँ रहा था।

'यहाँ आना मेरे लिये इतना जरूरी तो था नहीं।' यही उसके पहले शब्द थे जो उसने एक बहुत छोटे से कमरे में घुसते समय कहे। फिर बीच में खड़ा होकर अपनी हथेली पर रखी एक छोटी घड़ी को बहुत गौर से देखा। उसके दूसरे हाथ की उँगलियों के बीच सिगरेट खुंसी थी। थोड़ी देर बाद वह लम्बे कदमों से कमरे में चहल कदमी करने लगा। थोड़ी देर में कमरे में लगभग एक दर्जन विद्यार्थी जो देखने में अमीर लगते थे, आगये।

कुछ भरे हुए गले से कारोनिन ने अपने निर्वासित जीवन के बारे में बताना शुरू किया। वह बिना किसी को देखे बोले जा रहा था। लगता जैसे वह अपने आपसे बातें कर

रहा है। बीच में रुकता भी। अपनी उँगलियों से बालों में कंघी करता और इन छोटे छोटे वाक्यों में उत्तर देता, 'हो सकता है, लेकिन मुझे पता नहीं, मैं नहीं जानता, मैं कह नहीं सकता।'

कारोनिन ने उसी प्रकार युवकों से व्यवहार किया। मेरा परिचित और मित्र अनातोल और हम एक प्रकार से अब तक किताबी कीड़े रहे हैं। कारोनिन जैसे व्यक्ति से भाषण द्वारा ज्ञान लाभ करना एक नई बात थी।

लगभग आधी रात को एकाएक कारोनिन ने अपना भाषण रोक दिया। बीच में खड़ा हो गया, जैसा धुंए का कोई खम्भा। अपने हाथ को उसने अपने दाढ़ी पर रगड़ा। जैसे पानी से धो रहा हो फिर कमरे के नीचे किसी गुप्तजेब से उसने घड़ी निकाली और नाक के पास लाकर गौर से देखा और कहा, 'तो, अब मुझे जाना पड़ेगा। मेरी बेटी बीमार है। अच्छा नमस्कार!'

निफनी में वहाँ के शिक्षितों के बीच कारोनिन टाल्सटायन आन्दोलन चला रहा था। सिमबिर्क्स में भी वह एक बस्ती बनवा रहा था। अपना 'बोर्स्क कालोनी' नामक कहानी में उसने इसका चित्रण भी किया है।

उसने मुझे भी साथ लेने की कोशिश की 'क्यों न अपनी इसी धरती पर बस जाओ। शायद जिसके खोज में तुम हो वह यहीं मिल जाए।'

लेकिन मेरे अनुभव भी मेरे साथ थे। मास्को में मैं बहुत बड़े टाल्सटायन नोवोसेलोव नामक प्रसिद्ध कार्यकर्ता के परिचय से आया था जो सचमुच टाल्सटायन का जानी दुश्मन था।

लम्बा आदमी, शायद उसने शरीर को ही महत्व दिया था। मेरा परिचय आरेलोव से हुआ जो लिओपार्डी और फ्लावर्ट का अनुवादक था। मुझे नोवोसेलोव बहुत पढ़ा लिखा भी लगा। मुझे यह भी ज्ञात था कि प्रसिद्ध लेखक कोरोलेन्को भी तब निझनी में ही रहता था। कुछ कारणों से मैं उसकी रचना 'मकर का सपना' को पसन्द न करता था। एक बार मैं अपने एक मित्र से बातें कर रहा था कि उसने मुझे इशारा किया, 'वह, कोरोलेंको !'

मैंने एक विशालकाय व्यक्ति को भारी कदमों से चलते देखा। पानी बरस रहा था इसलिये चूते हुये छाते के नीचे मुझे केवल घुंघराले बालों वाली दाढ़ी दिखाई पड़ी।

कोरोलेन्को के इस दर्शन के कुछ दिनों बाद ही मैं गिरफ्तार हो गया और निझनी के प्रसिद्ध चार मीनार वाले जेल में रखा गया।

मेरा मुकदमा खुफिया पुलिस के प्रधान जेनरल पोजनान्स्की ने खुद ही चलाया था। उसने अपने पीले हाथों में मुझसे छीने हुये कागजों को लेकर कहा, 'तो, तुम कविताएँ लिखते हो, लिखा करो। अच्छी कविताएँ पढ़ने में मजा भी आता है।'

जहां तक जेनरल की बात है उसके कोट के बटन टूटे थे और उसकी पैंट गिंजी—फटी थी। उसकी तैरती सी आँखें बहुत चिन्तित सी लगतीं। मैंने कोनी के भाषण में कहीं कहीं पोजनान्स्की का जिक्र पढ़ा था।

'तुम क्रांतिकारी हो !' उसने पूछा, 'तुम यहूदी तो नहीं। तुम लेखक हो न ! तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा। तुम अपनी रचनायें लेकर कोरोलेंको के पास जाना, वह इन्हें ठीक कर देगा। उसे

जानते हो ? नहीं ? अच्छा, वह बहुत शान्त प्रकृति का लेखक है—तुर्गनेव के टक्कर का।'

उसके पास से दुर्गन्ध आती थी। बोलता तो लगता जैसे एक एक शब्द वह कठिनाई से बोल रहा हो। फिर मुझे देखकर पूछा, 'समझे !'

उसके मेज पर अनगिनत तगमें पड़े थे। वह एक एक का इतिहास बताता रहा और मैं गौर से सुनता रहा। फिर मुझे छोड़ दिया गया।

लेकिन कुछ ही दिनों बाद फिर मुझे जेनरल के सामने खड़ा किया गया। उसने पूछा, 'तुम अवश्य ही जानते हो कि सोमोव कहाँ छिपा है। तुम मुझे बता दो तो इसी क्षण तुम्हें छोड़ दूंगा और देखो किसी अफसर से पूछताछ करने पर उसका अपमान नहीं करना चाहिये।' फिर वह एकाएक मेरी ओर घूम कर हँसकर बोल उठा, 'और अब तुम चिड़ियों को मारते हो या नहीं ?'

इस हास्यास्पद भेंट के बाद फिर दस वर्ष बाद मुझे निफनी की पुलिस ने पकड़ा और मुझे फिर वहीं उपस्थित होना पड़ा। एक युवक ने आकर मेरे कान में कहा, 'याद है, जेनरल पोजनान्सकी ?' उसने कहा, 'टोम्स्क में वह मर गया। वह सदा तुम्हारे साहित्यिक गति विधि से परिचय रखता था और उस बात को अक्सर कहता था कि तुम्हारी प्रतिभा को सर्व प्रथम उसी ने पहचाना था। अपने मृत्यु के पहले उसने कहा था कि यदि तुम चाहो तो वे सभी तगमें ले सकते हो जो तुम्हें पसन्द आये थे !

इसे सुनकर मैं भावना विभोर हो गया। जेल से छूटकर मैंने वे तगमें निफनी म्यूजियम को भेंट कर दिये।

बहुत इच्छा रहने पर भी फौज में भरती न हो सका। एक बहुत लम्बा चौड़ा हँसोड़ डाक्टर ने परीक्षा करके यह निर्णय दिया—'अयोग्य, जवान आदमी तुम फौज के लिये ठीक नहीं हो। तुम्हारे पावों की नसें ठीक नहीं और तेरे फेफड़े में कई छेद हैं।'

इसके बाद ही मेरी भेंट एक इञ्जीनियर से हुई, जिसका नाम ठीक तो याद नहीं शायद पाश्कीन या पाश्कोलोव था। वह कुश्का की लड़ाई में था अतः अफगानी सीमा के जीवन का बहुत सुन्दर वर्णन करता था। उस वसन्त में उसे पामीर* जाना था—नकशा बनाने। वह व्यक्ति बहुत ऊँचा था। वह फेदोतोव के ढंग पर चित्रकारी भी करता था। सैनिक जीवन के बहुत अच्छे चित्र बनाये थे। उसमें यह असाधारण प्रतिभा मैं पहली भेंट में ही पहचान गया था।

उसने मुझसे कहा, 'हमारे दल में आ जाओ। मैं तुम्हें पामीर लिवा चलूंगा। फिर वहाँ संसार का सबसे सुन्दर दृश्य; रेगिस्तान!'

'अच्छा देखेंगे।' मेरे मन में भी रहस्यमय रेगिस्तान देखने की जाग उठी। जब उसने सुना कि मैं फौज में नहीं लिया गया तो उसने कहा, 'कोई बात नहीं। तुम एक अर्जी लिखकर हमारे दल में भरती हो जाओ बाकी मैं खुद देख लूँगा।'

मैंने अर्जी दी लेकिन कुछ दिनों बाद पाश्कोलोव ने बताया, 'तुम पर राजनीति विचारों के कारण भरोसा नहीं किया

*मध्य-एशिया में एक विशाल पर्वत माला।

जा सकता । अब कुछ नहीं हो सकता ।' उसने नीचे देख कर दुःखी होकर कहा, 'तुमने मुझसे यह क्यों छिपाया ?' मैंने उसे बताया कि यह खोज मेरे लिये भी उसी की तरह आश्चर्यपूर्ण है पर शायद उसे विश्वास नहीं हुआ। कुछ दिनों बाद ही उसने निझनी छोड़ दिया । बाद में मास्को के एक दैनिक पत्र में उसके आत्महत्या संबंधी छोटी सी खबर छपी । अपने स्नानघर में उसने उस्तूरे से अपनी जीभ तराश ली थी ।

मेरा जीवन फिर बड़ी कठिनाइयों और उलझनों से भर गया। आखिर एक दिन मैंने कोरोलोन्को को अपनी रचनाएँ दिखाने का निश्चय किया। उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि तीन दिनों तक लगातार बर्फ गिरती रही । हर छत पर जैसे सफेद रूमाल किसी ने ओढ़ा दिया हो ।

कोरोलोन्को एक लकड़ी की झोपड़ी में ऊपरी भाग में रहता था । उसके सामने ही एक राक्षस जैसे डीलडौल का व्यक्ति जो देखने में बहुत डरावना भी था, बर्फ हटा रहा था। ज्योंही मैं उसके दरवाजे पर पहुँच कर बर्फ के एक टीले पर चढ़ा कि वह गरज उठा, 'तुम कौन हो, किसे खोज रहे हो ?'

'कोरोलोन्को ।'

'कहो, मैं ही हूँ ।'

कठोर चेहरा, और घनी दाढ़ी के बीच दयालु आँखें । मैं इसलिये नहीं पहचान सका कि गली में जब देखा था तब चेहरा ढँका था । मैंने उससे अपने आने का कारण बताया तब जैसे वह कुछ याद करने की मुद्रा में बोला, 'तुम्हारा नाम तो परिचित सा लगता है ! शायद तुम

वही हो जिसके बारे में कुछ वर्ष पूर्व रोमास ने बताया था; क्यों ?'

उसने मुझे सीढ़ी का रास्ता बताया फिर पूछा, 'तुम्हें जाड़ा नहीं लगता, इतने कम कपड़े पहनते हो ?' फिर जैसे अपने ही किसी भाव में खो गया, 'रोमास भी क्या आदमी है ? आजकल वह कहां है ? शायद वीयस्का में, क्यों ?'

कोने का एक कमरा जिसकी खिड़की बाग की ओर खुलती थी। दो मेज, तीन कुर्सियां और किताब की आलमारियां। अपनी गीली दाढ़ी को उसने रुमाल से सुखाया फिर मेरी रचनाएँ उलटने पलटने लगा।

'मैं इन्हें अवश्य पढ़ लूँगा।' उसने कहा, 'बहुत अच्छी लिखावट है, साफ, और ठीक, फिर भी पढ़ना कठिन होता है।' फिर उसे बन्द करके उसने कहा, 'रोमास ने मुझे लिखा था कि वहाँ के किसानों ने उसे पीटा फिर उसके घर में आग लगा दी थी ? तब तो तुम शायद उसके साथ ही रहते थे।'

कहते हुए वह पाण्डुलिपि के पृष्ठ उलटता रहा। 'विदेशी मुहावरों का प्रयोग केवल अत्याधिक आवश्यकताओं पर ही करना चाहिये। कायदे से तो उन्हें छोड़ ही देना चाहिये। रूसी भाषा तो इतनी धनी है कि किसी भी विचार को अच्छी तरह व्यक्त किया जा सकता है।' वह यह कहता बीच बीच में रोमास और वहां के जीवन के बारे में भी पूछता जाता। अचानक उसने कहा,

'तेरा चेहरा बताता है कि तूने जीवन के कठोर दृश्य भी देखे हैं। तू रूखे शब्दों का प्रयोग अधिक करता है। वे जरा प्रभावपूर्ण होते भी हैं।

मैं मानता हूं कि रूखे शब्दों का मैंने अधिक प्रयोग किया है। यद्यपि समय मिला होता तो मैं अधिक मधुर शब्द अपने भंडार में जोड़ता। फिर मेरी कविताएँ पढ़ कर कोरोलोंको तनिक मुस्कुराया। उसने जो भी मेरी रचनाओं में दोष बताये उन्हें लेकर कई दिनों तक मैं बहुत परेशान रहा।

मैं एक बहुत ऊँचे लेखक के साथ परिचय प्राप्त कर चुका था। इस बार मैं उसके पास दो घन्टे से कुछ अधिक ही रहा। लगभग एक पखवारे के बाद, लाल बालों वाला प्रोफेसर. डेरियाजिन मेरी रचनाएँ वापस दे गया। कोरोलोंको ने कहलाया था 'वह पढ़कर काफी चिन्तित हुआ है। मुझमें प्रतिभा है लेकिन मुझे प्रकृति से अभी और कुछ सीखना है। 'हास्य में रूखापन होता है। लेकिन इसके लिये चिन्ता करने की बात नहीं। और कवितायें तो सभी पागलपने की हैं।'

मेरी पाण्डुलिपि के आवरण पर बायें ओर पेन्सिल से लिखा था। 'तुम्हारी प्रतिभा का सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता है। अभी केवल उन्हीं घटनाओं पर लिखो जिनका खुद ही जीवन में अनुभव किया हो। मुझे फिर दिखाना। मैं कविता पर राय नहीं दे सकता। इस विषय में भी कुछ बहुत ही गजब की है।' भावों के विषय में कोई राय न थी। इस अद्भुत व्यक्ति ने अपने प्रभाव का कहीं जिक्र नहीं किया।

पाण्डुलिपि से दो पेज खो गये थे। उसमें एक कविता थी और एक विवाद। मैंने उसी दिन सभी रचनायें फाड़ डालीं। चूल्हे में जला दिया। मैंने निश्चय किया कि वह लिखूँगा जिसका अनुभव हुआ है। एक कविता मैंने छिपा कर

लिखा था। किसी को बताया नहीं था, न दिखाया था। शायद मैं खुद भी इसे समझ नहीं पा रहा था।

अब मैं लोगों के बीच पागल कवि की तरह समझा जाता था। लोगों की अच्छी राय न थी। न तो अपनी रचनाओं से मुझे ही सन्तोष था। इच्छा होती कि कुछ न लिखूँ—न कविता न गद्य। फिर लगभग दो वर्ष जब तक निझनी में रहा मैंने एक पंक्ति भी न लिखा यद्यपि मन में कभी कभी प्रबल इच्छा होती थी।

यहाँ के सभी साहित्यकारों से कोरोलेंको सदा ही अलग रहता था। यहाँ के लोगों को जो लेखक पसन्द थे, उनमें ज्लातोवरात्स्की प्रसिद्ध था। उसके विषय में एक ने मुझे बताया, 'ज्लातोवरात्स्की को पढ़ो, बहुत विद्वान, मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित हूँ।'

वे लोग कारोनिन, माकतेत, जासोडिम्स्की, पोतापेन्को मामिन—साइबेरियाक पर जाते थे। तुर्गनेव, दास्तायवस्की और टाल्स्टाय को बाहरी समझते थे।

कोरोलेन्को उनके लिये एकसिर दर्द था। वह निर्वासन भी सह चुका था, और जो कुछ लिखा था, उसे विवश होकर मानना पड़ा था। 'उसकी रचनाएँ केवल कल्पना की हैं, 'एक ने कहा, 'लेकिन लोग हृदय की बात पढ़ना चाहते हैं।' फिर भी कोरोलेन्को को ऊँचे श्रेणी के लोगों में काफी प्रसिद्धि मिली थी।

इन्हीं दिनों शहर के एक बैंक में बहुत बड़ा गबन हुआ जिसका बहुत ही भयानक और करुण अन्त हुआ। उस काण्ड का मुख्य व्यक्ति जेल में ही मर गया। उसकी पत्नी ने जहर खा लिया। उसे गाड़ा गया और उसके कब्र पर उसके प्रेमिक ने आत्म हत्या कर ली। और यह उत्तेजना अभी समाप्त भी

न हुई कि दो अन्य व्यक्तियों ने भी जो इस मामले में फंसे थे अपना जीवन समाप्त कर लिया। इन्हीं दिनों 'दि वोल्गा हेराल्ड' में कोरोलोन्को ने बैंक के विषय में कई लेख प्रकाशित कराये। लोगों ने कहा कि कोरोलोन्को ने ही अपनी कलम से उन्हें मार डाला। लेनिन ने कोरोलोन्को का ही पक्ष लिया।

कोरोलोन्को के आसपास सदा ही कुछ प्रतिभावान लोग मंडराया करते। अनेन्स्की नामक जो अपने तेज दिमाग के लिये मशहूर था, इल्पाटिस्की नामक डाक्टर, आलोचक पिसारेव, सोवलीव, कारेलिन आदि लेखक सदा ही उसके आस पास रहा करते।

मेरा एक मित्र था, पीमेन व्लासोव, जो कैस्पियन के मछली का ठेकेदार था! उसका कहना था कि कोरोलोन्को का सीधा सम्बन्ध राजपरिवार से है। अनपढ़ पीमेन खुदा पर बहुत विश्वास करता था। एक शनिवार को हम और पीमेन एक होटल में खाना खाने गये। एकाएक पीमेन ने मुझे घूर कर कहा, 'रुको!' उसका हाथ काँप रहा था। गिलास उसने मेज पर रख दिया।

'क्या हुआ है तुम्हें?' मैंने पूछा।

प्यारे दोस्त! लगता है कि खुदा शीघ्र ही मुझे बुला लेगा!'

'तुम पागल हो रहे हो!'

'श···श ऐसा मत कहो।'

और उसके बाद वाले दौरे को वह कुचल कर मर गया।

अगर इसे अतिशयोक्ति न समझा जाय तो कहा जा सकता है कि १८८६ से १८९६ तक का युग का एक प्रकार से निझनी में कोरोलोन्को का ही युग था।

उन्हीं दिनों मेरी मित्रता जारुविन से हुई जो निश्चय ही उस समय पचास से अधिक का था। उसने बताया, जब मैं बीमार था तभी मेरा भतीजा सीमन—जिसे निर्वासन हुआ था—मुझे देखने आया। तभी उसने मुझे 'मकर का सपना' पढ़ कर सुनाया। सच मानो मेरे आँखों में आँसू आ गये। उससे यह ज्ञात होता है कि एक व्यक्ति दूसरे के लिये कितना अनुभव कर सकता है। तब से मैं बिल्कुल बदल गया। मैंने अपने एक शराबी मित्र को बुलाकर कहा, 'ओ चुड़ैल के बच्चे, इसे पढ़। उसने पढ़ा। इसके कारण ही उससे सदा के लिये लड़ाई हो गई। मेरे व्यापार पर इसका असर पड़ा। मेरा व्यापार चौपट हो गया। मेरा दिवाला हो गया। तीन साल जेल में रहना पड़ा। छूटने पर सीधा मैं कोरोलोन्को के पास गया। वह शहर में नहीं था अतः मैं टाल्सटाय के यहां गया। उसने मेरे काम को ठीक ही बताया।

ऐसी कहानियाँ मुझे पसन्द हैं। उनका महत्व भी बहुत है।

१९०१ में मुझे कैद हुई। वह जेलर के पास आया और मुझसे मिलने की बात कही।

'क्या तुम उसके रिश्तेदार हो?'

'नहीं।'

'तो नहीं मिल सकते!'

उसके लाख कोशिश पर भी मुझसे भेंट न हो सकी। इन दिनों जब मैं निझनी में नहीं था तब कोरोलोन्को ने एक कलाकार व महान नागरिक के रूप में बहुत नाम पैदा किया। उसने दुर्भिक्ष के समय तो बहुत ही काम किया व यश कमाया। मैं समझता हूँ कि उसकी पुस्तक 'अकाल का वर्ष' भी उसी समय निकली थी।

निझनी के एक और सज्जन उसके बहुत विरोधी थे। मैंने पूछा, 'अच्छा एक लेखक की हैसियत से उसकी क्या जगह है ?'

'कुछ नहीं।'

बाद में मैंने जाना वह व्यक्ति शराबी था।

सन १८६८ और १८६० में मैं उससे बिल्कुल न मिला। उन दिनों मैंने लिखना भी बन्द कर रखा था। कभी कभी मैं उसे सड़कों पर या भीड़ भाड़ में देख लेता। मेरे मित्रों में कुछ लोग मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे कुछ केवल किस्से कहानी ही पढ़ते।

गर्मी के मौसम में एक रात को वोल्गा के किनारे मैं एक बेंच पर बैठा सामने के दृश्य देख रहा था—एक प्रकार से मैं उस समय दुनिया से खोया हुआ था कि अचानक कोरोलेन्को आकर मेरे बगल में बैठ गया। लेकिन मुझे उसकी उपस्थिति का तभी ज्ञान हुआ जब उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा।

'किस विचार में खोये हुये हो ?' उसने पूछा 'मैं तो तुम्हारा हट गिराना चाहता था।'

कोरोलेन्को शहर के दूसरे छोर पर रहता था। काफी रात हो गई थी और वह बहुत थका सा दिखता था। उसका सिर नंगा था। उसे बेतरह पसीना छूट रहा था जिसे वह रूमाल से सुखा लेता था। फिर उसने कहा,

'क्या हाल चाल है ? कर क्या रहे हो आज कल ? सुना है कि तुम स्कोवोर्तोसोव के दल के सदस्य हो गये हो।'

स्कोवोर्तोसोव मार्क्सवादी विद्वान था। बहुत तेज और साहसी व्यक्ति। वह सारी दुनिया को मार्क्सवाद समझाने को

हिम्मत रखता था। वह सदा ही लम्बे बांस की पाइप में लगा कर सिगरेट पीता था जिसे वह छुरे की तरह अपने पेटी के नीचे खोंसे रहता।

मैंने उसे बताया कि मैं भी उस विचारधारा से प्रभावित हूँ। बड़ी देर तक वह मुझे बहुत सी बातें समझाता रहा। फिर वह जैसे बिल्कुल थक गया। बैठकर आकाश की ओर वह देखने लगा। फिर कहा, 'बहुत देर हो गई न! अब तो सवेरा होने वाला है। कहीं पानी न बरसे।'

मैं पास ही रहता था—वह दो मील दूर। मैंने उसके घर तक साथ देना स्वीकार किया।

'क्या तुम अब भी लिख रहे हो?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'मुझे समय नहीं मिलता।'

'सचमुच बहुत बुरा है, अभाग्य! लेकिन मैं समझता हूँ कि लिखने का निश्चय हो तो समय मिल ही जाता है। मैं तो तुम्हारी प्रतिभा का कायल हूँ।'

तभी अचानक पानी आ ही गया और हम दोनों अपनी अपनी दिशा की ओर घूम पड़े।

—नव—

मैं काफी दिनों से यह जानने को इच्छुक था कि जिस धरती पर रहता हूँ उसका इतिहास तो जान ही लूँ। मैं मित्रों से इसके सम्बन्ध में प्रश्न पूछता, कुछ तो हँसते, कोई कुछ पुस्तकें पढ़ने की राय देते।

इन्हीं दिनों हमारी मण्डली में एक व्यक्ति और आया—विद्यार्थी। जो फटा सा ओवरकोट, नीली जैकेट पहनता था। उसे दिखता कम था इससे चश्मा लगाता था। उसके बाल बड़े बड़े थे और दाढ़ी को वह बालों की तरह दो हिस्सों में बाँट लेता था। उसे देखकर क्राइस्ट के चित्र की याद आती थी।

हमारी दोस्ती बहुत गहरी हो गई। यद्यपि वह मुझसे चार वर्ष बड़ा था। उसका नाम था निकोलस वेसीलोव और वह रसायन शास्त्र का विद्यार्थी था। वह काफी पढ़ा लिखा और तेज दिमाग का व्यक्ति था।

उन दिनों ए० आई० लेनिन नामक एक वकील का मैं क्लर्क था। बहुत अच्छा और भला आदमी। एक दिन मैं जब दफ्तर पहुँचा तो घात क्रोध में उसने स्वागत किया फिर एक

अर्जी दिखा कर कहा, 'क्या तुम पागल हुये हो? देखो इस पर तुमने क्या लिख दिया है। एक नई प्रति तैयार करो। आज आखिरी तारीख है। यह क्या तुमने मजाक किया है—कुछ भी किया—बुरा किया है।'

मैंने भी गौर से देखा—सचमुच मेरे हाथ की ही एक कविता लिखी थी। मुझे खुद आश्चर्य था कि क्या वह मैंने ही बनाई है। शाम को लेनिन मेरे पास आकर बोला, 'भाई, उसके लिये माफ करना, मुझे बहुत आश्चर्य था। क्या बात है, कुछ दुबले लग रहे हो!'

'मुझे रात को नींद नहीं आती!'

'क्यों इसके लिये कोई इलाज करना होगा।'

सचमुच कुछ करना ही था।

कभी कभी एक स्त्री से मैं मिलता जो पीले ग्लोव्स पहनती और भूरे रंग का हैट लगाती। वह बेंच पर बैठी होती मैं उससे कहता, 'खुदा कहीं नहीं है।'

'तो मुझे क्या?' कह कर वह क्रुद्ध मुद्रा में वहाँ से उठकर चली जाती।

मैंने एक डाक्टर को अपने को दिखाया। मेरी पीठ थप-थपा कर उसने कहा, 'तू इतना जो पढ़ता है न, इससे नींद नहीं आती। तुम्हारे जैसे मजबूत देह वाले युवक को इस प्रकार की बीमारी हो यह कितने दुख की बात है। तुम्हें कुछ शारीरिक व्यायाम करना चाहिये। और तुम्हें किसी लड़की से भी मित्रता करनी चाहिये तेरे लिये यह आवश्यक है।' उसने मेरे लिये दवाइयाँ भी लिखीं परन्तु अन्त में जो कहा वह मुझे अक्षरशः याद है। उसने कहा, 'मैंने तुम्हारे बारे में काफी सुना है। जो मैं कहूँगा वह अवश्य ही तुम्हें बुरा लगेगा लेकिन मुझे

माफ करना। तुमने जो कुछ पढ़ा है, तुमने जो कुछ देखा है उसका तुम्हारे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। और वह वास्तविकता से बहुत भिन्न है।—खैर जाने दो। मेरी बात याद रखना—एक लड़को से गहरी मित्रता करो।"

कुछ दिनों बाद ही सिकविक्स के लिये मैं निस्कनी छोड़कर चल पड़ा।

दस

अपनी पढ़ाई में मैं एक नया अध्याय जोड़ने की कोशिश कर रहा था कि अचानक भाग्य ने मुझे जीवन के प्रथम प्रेम के चक्कर में डाल दिया। कुछ मित्रों ने ओक नदी में नाव पर एक दावत की व्यवस्था किया। मुझे खुशी थी—फ्राँस से आये एक नव दम्पत्ति भी उस दावत में शामिल होने वाले थे, जिनसे अभी तक मेरी भेंट न हुई थी। उसी शाम को सर्व प्रथम वार मैं उनके निवास स्थान पर गया। एक पुराने मकान का छोटा सा कमरा। मैं भीतर घुस गया।

एक लम्बा आदमी आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसकी छोटी छोटी आँखें व दाढ़ी अजीब भावना का सृजन करती थीं। उसने तनिक रूखे स्वर में पूछा, 'क्या चाहते हो? देखो घर में घुसने के पूर्व खटखटाना चाहिये।'

उस व्यक्ति के पीछे धुँधलापन था। मैं पहचान तो न न सका लेकिन लगा कि उस धुँधलके में कोई बहुत बड़ी सफेद चिड़िया हो। उसने बहुत मधुर और संगीतपूर्ण आवाज में कहा, 'विशेष कर जब किसी विवाहित परिवार में जाना पड़े।'

तनिक परेशानी में फँस कर मैंने पूछा कि क्या वही लोग 'वे' हैं । फिर जब उस व्यक्ति के भावों से यह ज्ञात हुआ कि वे ही हैं तो मैंने उन्हें सन्देश कह दिया ।

'वो·····ने तुम्हें भेजा है !' कह कर उस व्यक्ति ने अपने हाथ बांधे और चिल्ला पड़ा, 'ओह ओलगा !'

तभी उसके पास एक दुबली पतली जवान लड़की आई । अपनी नीची आँखों से ज्योति बिखेरते हुये वह अचानक हँस पड़ी । मैं घबड़ाया नहीं क्योंकि मैं जानता था कि मुझपर न हंसकर वह मेरे कपड़े पर हँसी होगी । पीले पैन्ट पर सफेद कोट, बन्द गले का ।

मुझे वह खींचकर कमरे में ले गई और एक कुर्सी पर बैठा कर कहा, 'कितना मजाक बना रखा है !'

'क्यों, कैसे ?'

'डरो नहीं ।' उसने कहा । भला ऐसी लड़की से भी कोई डरेगा ।

खाट पर बैठकर वह दाढ़ी वाला व्यक्ति अब तक कागज पर तमाखू लपेट रहा था । उसकी ओर इशारा करके मैंने लड़की से पूछा, 'तुम्हारा पिता है या भाई ।'

'पति !' उसने नाटकीय ढंग से बताया ।

क्षण भर उसे घूर कर मैंने कहा, 'माफ करना ।'

बस कुछ क्षणों में केवल इतनी ही बातें हुईं । उस लड़की के निचले ओंठ ऊपर के ओंठ से तनिक अधिक फूले थे । उसका चेहरा गोलाई लिये हुये तनिक लम्बा था । उसके हाथ अत्याधिक मासूम और सुन्दर थे क्योंकि जब वह दरवाजे पर थी तब मैंने बहुत अच्छी तरह उसे देख लिया था । उसने बहुत सादे पर लुभावने कपड़े पहने थे—एक सफेद [illegible] और

सफेद ही स्कर्ट! और इन सबों से भी अजीब थीं उसकी आखें जिन्हे देखकर बरबस दिलचस्पी पैदा होती थी।

'किसी भी क्षण तेज पानी बरस सकता है।' सिगरेट पीते हुए उसके पति ने कहा। मैंने खिड़की के रास्ते तारों से भरा साफ आकाश देखा। मुझे लगा जैसे उसे मेरी उपस्थिति पसन्द न हो अतः मैं चला आया।

उस रात भर मैं खेतों में टहलता रहा। रह रह कर मेरे सम्मुख वे तेज नीली आखें चमक पैदा कर रहीं थीं। उसके पति की कल्पना कर के मुझे उस पर तरस आया। बेचारी! दाढ़ी वाले भालू के साथ रहना पड़ रहा है।

दूसरे दिन नाव की सैर हुई। वह दिन इतना अच्छा लग रहा था जैसे सृष्टि के प्रारम्भ से इतना अच्छा दिन इसके पूर्व न आया हो। सूरज की चमक भी असाधारण थी। इस वातावरण से भी अधिक प्रभावित होने के कारण वे लोग और प्यारे लगे। वह व्यक्ति तो नांव पर न गया, पूरा एक जग दूध पीकर एक झाड़ी में घुसकर सो रहा और रात तक सोता रहा। मैं उस लड़की को नाव पर घुमाता रहा। मैं ही नाव चलाकर उसे किनारे पर लाया। उसने कहा, 'सचमुच तुम बहुत ताकतवर हो।'

मुझे खुशी हुई और मैंने कहा, 'मैं तुम्हे अपने बाहों में उठाकर पाँच मील तक शहर में चल सकता हूँ। सुनकर वह फिर हँस पड़ी। उसकी आँखें यों चमकी कि दिन भर मुझे याद आती रही—जैसे वे मेरे ही लिए हों।

मुझे शीघ्र ही पता चल गया कि वह मुझसे दस वर्ष बड़ी दिखाई पड़ी थी—और उसने पेरिस में रहकर काफी उच्च शिक्षा प्राप्त की है। उसकी माँ नर्स व दाई का भी काम करती थी। वह अपने सौंदर्य के लिए अपने कपड़े व हैट खुद ही

सीती थी । वह सिगरेट भी पीती थी—बहुत अच्छे ढंग से जैसे सिनेमा में कोई अभिनेत्री पिये । अपने विषय में वह बड़ी दिलचस्पी लेकर बताती, इस अवसर पर उसकी आँखें चमक उठतीं और उस चमक की गहराई में बच्चे की हँसी दिखाई पड़ती ।

उसके व्यवहार से फौरन ही मैं समझ गया कि उसको मुझसे अधिक संसारी ज्ञान प्राप्त है । एक प्रकार वह अब तक मेरे जीवन में आई सभी स्त्रियों से सुन्दर थी । मैंने सोचा कि वह सब कुछ जानती है जिसके बारे में हमारे क्रान्तिकारी युवक बातें करते हैं ।

जहाँ वह रहती थी वह दो कमरों में विभाजित था । एक छोटा कमरा, रसोईघर का काम देता—दूसरा बड़ा कमरा जिसमें पाँच खिड़कियाँ थीं । तीन सड़क की ओर खुलती थीं और दो भीतर । यह मकान किसी और के लिये चाहे ठीक होता लेकिन पेरिस में रह आई एक स्त्री के लिये कदापि ठीक न था । कमरे में लगाई गई तस्वीरें सजावट में भी अनोखा-पन था । मैं सब कुछ देखकर हैरान था । लेकिन शायद उसे यह ज्ञात नहीं हो पाया कि मैं उसके कारण कितना परे-शान था ।

वह सुबह से काफी रात गए तक काम करती रहती । पहले घर का काम करती, फिर पति का काम जो सरकारी नौकर था । पति की सहायता के लिये वह खिड़की के नीचे लगे टेबिल पर बैठ कर नकशा बनाती । खुली खिड़की से गली की धूल आ कर उसके बालों पर जम जाती । सामने चलने वालों की परछाइयाँ कागज पर रेंगतीं । लेकिन काम वह पूरा अवश्य करती । जब बहुत थक जाती तब अपनी चार वर्ष की बच्ची के साथ खेल लेती । लेकिन इतना काम करके

भी वह बिल्कुल साफ सुथरी सफेद बिल्ली की तरह ही बनी रहती।

उसका आरामतलब पति अक्सर पूरा पूरा दिन बिस्तरे में ही घुसा रहता, केवल उपन्यास पढ़ता—विशेष कर ड्यूमा के। वह अजीब आदमी था। अक्सर अपनी लड़की को पढ़ाता,

'हेलेन, खाना खाते समय खूब चबाना चाहिये। इससे पचने में आराम रहता है।'

वह कभी भी अपने इस प्रकार के भाषणों पर पत्नी की हंसी को बुरा न मानता और सो जाता। मैंने उसकी स्त्री से मित्रता कर ली थी। वह अपने पति की बातों की अपेक्षा मेरी कहानियों में अधिक दिलचस्पी लेती। फलस्वरूप वह मुझसे जलने लगा था।

'पेशकोव, मुझे विरोध है। बच्चों के शिक्षा देने के विषय में शायद तुम्हें नहीं मालूम।' बोलोस्लाव कहता।

वह मेरी उम्र का दूना व्यक्ति लेकिन संसार की गतिविधि से जरा दूर ही रहता। अक्सर उससे मिलने कुछ ऐसे दिल-चस्प लोग आते जिनकी विशेषता से वह खुद अधिक परि-चित न रहता। यहीं मुझे क्रान्तिकारी साबूनेयेव का परिचय मिला।

एक दिन बोलोस्लाव के ही यहाँ, मैंने एक सुन्दर से छोटे सिर वाले व्यक्ति को देखा जो देखने में हज्जाम लगता था। उसने धारीदार कपड़े पहन रखे थे। मुझे रसोईघर में ले जाकर धीरे से बोलोस्लाव ने बताया, 'यह पेरिस से आ रहा है। कोरोलेन्को के पास कोई सन्देश ले जाना है। इनके भेंट का प्रबन्ध करो।'

मैंने वायदा तो कर लिया लेकिन कोई मुझसे पहले ही कोरोलोन्को से उसके बारे में बता चुका था और उसने मिलने से इन्कार कर दिया था। वोलोस्लाव ने बुरा माना। दो दिन खर्च कर के उसने लम्बा सा पत्र कोरोलोंको को लिखा फिर उसे जला दिया।

इसके थोड़े दिन बाद ही मास्को, निज्नी, ब्लाडीमीर और दूसरे केन्द्रों में गिरफ्तारी का तूफान आया। धारीदार कपड़े वाला व्यक्ति लैन्डेसन हार्डिंग था।

उसकी पत्नी के प्रति मेरा प्रेम गहरा होता गया लेकिन मुझे अब ऊब लगने लगी। मैं घन्टों उसके पास बैठता लेकिन वह सिर झुकाए काम करती रहती। मैं कल्पना करता कि कैसे मैं इसे अपनी बाहों में उठाकर ले जाऊँ और इस चक्कर से छुट्टी दिला दूं। एक दिन मैंने बातें न करने की शिकायत की।

'अपने बारे में मुझे कुछ और बताओ।' उसने कहा। लेकिन कुछ ही मिनटों में वह कहती, 'लेकिन यह तुम्हारे जीवन की घटना नहीं हो सकती।'

उसी समय में सतर्क होकर सोचता तो पाता कि सचमुच वह घटना मेरे जीवन की नहीं थी मैं तो भावावेश में मनगढ़न्त बातें करता जाता था। फिर मैं अपने विषय में सोचने लगता, मैं क्या हूँ ? मैं कौन हूँ ? और मुझमें या उसमें क्या है कि मैं उसे मन की इतनी गहराई से प्यार करता हूँ—चाहता हूँ।

मैं जो सपने देखा करता—उनका वर्णन सम्भव नहीं। लेकिन वे सपने देखकर मैं स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध के बारे में गहराई से सोचने लगता। फिर डरकर मैंने सोचा कि

शायद इस दुनिया में मैं यही सब सोच सोच कर मर जाने को ही पैदा हुआ हूँ।

आदमी जो नहीं जानता उसके विषय में सोचता है। और सबसे अधिक ज्ञान आदमी को किसी स्त्री के प्यार से ही प्राप्त होता है। उसके सौंदर्य से ही विश्व के सौन्दर्य का बोध होता है। संसार में किसी भी पुरुष के लिये जो भी सौंदर्य है वह सब किसी न किसी स्त्री के प्यार के माध्यम से ही दिखाई पड़ता है।

एक दिन तैरते समय मैं डूब गया था। मेरे पाँव सेवार में फँस गये थे और सिर पानी में डूब गया था। लोगों ने कठिनाई से मुझे निकाला। कई दिनों तक मैं खाट पर रहा।

वह मेरे पास आई, बगल में बैठी—सभी बातें पूछा कि मैं कैसे डूबा था। अपने मुलायम प्यारे हाथों से वह मेरा सिर सहलाने लगी। उस समय उसकी काली आँखों से उसके अन्तर की परेशानी का अन्दाजा लगता था। मैंने पूछा कि क्या वह जानती है कि मैं उसे प्यार करता हूँ—

'हाँ।' हिचकिचाहट की मुस्कान के साथ उसने कहा।

उसके उत्तर से 'मुझे लगा जैसे धरती हिलने लगी और बाग में तूफान आ गया हो। उत्तर की आशा न थी। आत्म-विभोर होकर मैंने उसकी गोद में चेहरा छिपा लिया। उसकी कमर में दोनों हाथ डाला। उसने मुझे कसकर दबाया। मुझे लगा कि खुशी के मारे साबुन के बुलबुले की तरह कहीं मैं फूट न जाऊँ।

'देखो, हिलो मत। हिलना बुरा है।' मेरे सिर को वापस तकिये पर रखने की कोकिश करते हुये उसने कहा, 'तुम चुपचाप ही पड़े रहो नहीं तो मैं चली जाऊँगी। तुम पागल हुये हो क्या?'

इसके कई दिनों बाद मैं घास पर बैठा था। मैं सोच रहा था—उसने जो जो प्यारे शब्द कहे थे। हमारी उम्र का अन्तर, हमारी पढ़ाई की बातें और असमय में ही उसपर पत्नित्व व मातृत्व का जो भार पड़ गया। यह सभी शब्द उसने इस प्रकार स्नेह से कहे थे जैसे प्यार से कोई माँ कहे। उसकी बातें सुन कर मुझे थोड़ा रंज और अनन्त खुशी भी हुई थी।

मैं झाड़ियों में दूर तक आंखें गड़ा कर झाँकने की कोशिश कर रहा था। मैं मन ही मन उसके शब्दों का उसी प्रकार कोमलता से उत्तर देने की बात सोच रहा था—

'किसी निर्णय पर पहुँचने के पूर्व हमें हर बात को बहुत अच्छी तरह सोच लेना चाहिये।' उसने अपनी प्यारी आवाज में कहा, 'और यह भी स्वाभाविक है कि इसके लिये बोलोत्लाव से भी बातें करनी होंगी। उसे कुछ हमारे व्यवहारों की भनक मिली है और वह ऐसे अवसरों पर भावुक बन जाता है। मुझे ऐसी भावुकता से घृणा है।

यह सब काफी दुःखपूर्ण और सुन्दर भी था। अतः कुछ अच्छा या बुरा निर्णय होना ही था। मेरा पेन्ट बहुत चौड़ा बना था अतः नीचे में एक तीन इञ्च लम्बी पिन लगाकर उन्हें सिकोड़ लेता था। अचानक वह पिन पाँव में गड़ गई। मैंने खींचकर निकाल तो लिया लेकिन खून काफी मात्रा में बहकर पेन्ट को गीला कर रहा था।

मैंने चाहा कि यह दृश्य वह न देखे। तभी उसने कहा,

'अब चलो नहीं तो पानी आ जाएगा।'

'मैं यहां अभी रुकूँगा।' मैंने उत्तर दिया।

'क्यों?'

अब मेरे पास कोई उत्तर न था।

'क्या मुझसे नाराज हो ?' उसने बहुत नम्रता से पूछा।

'नहीं अपने से।'

'नाराज होने का कारण क्या है ?' उसने पूछा। पर मैं उत्तर न दे सका और वह उठी। मैं भयभीत था कि खून देख कर कहीं वह चीख न पड़े। सो मैंने उससे जाने की प्रार्थना किया।

वह चली गई। उसकी सुन्दर आकृति हिलती डुलती चली गई। और हमारे विछोह की दूरी बढ़ती गई, बढ़ती गई। मैं अपने प्रथम प्रेम के इस दुःखान्त पर आश्चर्य चकित था।

जब उसने अपने पति से बातें कीं तो बहुत भावुकता से वह आँसू गिराने लगा। पति के आँसुओं के सामन उसका धैर्य भी जाता रहा और उसने बाद में रोकर मुझे बताया, 'तुम इतने मजबूत हो और वह इतना असहाय। अगर उसे छोड़ दूँगी तो वह पौधे से अलग हुये फूल की तरह सूख जायगा।'

पहले तो मुझे दुःख हुआ पर शीघ्र ही जाने क्या सोचकर मुझे हँसी आ गई।

मुझे हँसता देख कर वह भी हँस पड़ी, 'मैं जानती हूँ कि यह तुम्हें बहुत हास्यास्पद लगा है। लेकिन वह भी बहुत असहाय है।'

'मैं भी तो हूं।'

'लेकिन तुम अभी जवान हो और ताकतवर भी।'

और शायद तभी से मैं कमजोर दिल वालों को घृणा की दृष्टि से देखने लगा।

मुझे इस घटना से इतनी मानसिक चोट लगी कि मैंने शीघ्र ही वह शहर छोड़ दिया और दो वर्ष तक लगातार

पोवोलम्मे, डोन, युक्रेन, क्रीमिया और काकेशश में घूमता रहा। नये नये अनुभवों के साथ मुझे नए नए दृश्य देखने को मिले लेकिन अपने दिल की इस साम्राज्ञी, इस अपनी प्रेमिका को तस्वीर मैंने मन में सुरक्षित रखी। यद्यपि मुझे कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी मिलीं जो विद्वता में और अन्य बातों में उससे अधिक थीं परन्तु कोई फल न हुआ।

तिफलिस में दो साल से अधिक बिताये। मुझे पता लगा कि पेरिस से लौट आकर वह वहीं थी और यह सुनकर उसने अपार हर्ष प्रदर्शित किया कि मैं भी उसी शहर में था। मैं तब तेइस वर्ष का था और मेरे सामने ही मेरे जैसे युवक की आकृति मुझे धुंधली होती सी दिखाई पड़ी। कुछ मित्रों ने यह सन्देश दिया कि वह मुझसे मिलना चाहती है—यदि मैं खुद उसके पास नहीं जा सकता।

मैंने उसे पहले से अधिक सुन्दर और प्यारी पाया—उम्र बढ़ने से जैसे उस पर यौवन का अधिक प्रभाव पड़ रहा हो। उसके गाल, आँखें पहले से अधिक आकर्षक लगे। उसकी बेटी जो अब जरा बड़ी लड़की सी दिख रही थी—उसके साथ थी। उसका पति फ्रांस में ही रह गया था।

जिस दिन मैं उससे मिलने गया उस दिन गजब की बर्फीली हवा चल रही थी। पानी की बूंदें ऐसी लगतीं जैसे कोई ढेले मार रहा हो।

'ऐसा तूफान मैंने पहले नहीं देखा।' मेरी प्रेमिका के मुंह से अचानक ये शब्द निकल पड़े, 'क्या तुमने मेरे प्रति अपने मन में उपजी कोमलता पर विजय पा लिया ?'

'नहीं !'

इसे सुनकर उसे शायद आश्चर्य हुआ, 'तुम कितने अजीब हो। तुम बिल्कुल भिन्न आदमी हो।' कह कर वह खिड़की के

पीछे की एक कुर्सी में दुबक गई। उसने कुछ परेशान होकर आँखें बन्द कर लिया और फुसफुसाहट के स्वर में कहा, 'लोग यहाँ तुम्हारे बारे में बहुत बातें करते हैं। तुम यहाँ क्यों ठहरे हो ? इतने बरसों तक करते भी क्या रहे तुम ?'

और मैं लगातार सोच रहा था--यह अब तक कितनी सुन्दरी बनी हुई है। मैं उस दिन आधी रात तक उसके पास रहा—गत वर्षों की सभी घटनायें विस्तार पूर्वक बताया। मैं देख रहा था कि जब मैं उसे बता रहा था तो आश्चर्य से उसकी आँखें फैली थीं और उसकी निगाह में एक प्रकार की उत्सुकता थी। बीच बीच में वह कहती थी, 'कितना अजीब है सब कुछ !' और जब मैं विदा हुआ तो भी बड़ी कोमलता से उसने विदा दिया। सर्दी से गलती हुई सड़क पर मैं चला, मेरा सिर खुशी के मारे नाच सा रहा था। दूसरे दिन मैंने एक कविता बनाकर उसके पास भेजी जिसे वह बाद में अक्सर गाया करती थी—जिसकी मुझे अब भी साफ स्मृति है। कविता का मतलब लगभग यह था—

'मेरी प्रेमिका, तुम्हारे हाथ के एक स्पर्श के लिये, तुम्हारी कोमल आँखों की एक झलक के लिये, मैं अपना सर्वस्व दे सकता हूँ—।'

इसे चाहे कविता न कहा जाय पर मैंने इसे बहुत प्रेम और हृदय की गहराई से लिखा था।

मैं फिर उसी चक्कर में पड़ गया। दुनिया में जिसे सब से अधिक प्यार करता था उसके सम्मुख फिर था। आज फिर वही मेरे लिये दुनिया की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई थी।

नीले कपड़ों में वह ऐसी लगती जैसे सुन्दर, खुशबूदार बादल ! वह अपनी पेटी के फीते के साथ खेलती हुई साधारण

शब्दों में बातें कर रही थी पर वे शब्द शायद उसके कारण बहुत अर्थ भरे मुझे प्रतीत होते। मेरे मन में इतनी खुशी थी कि यदि मैं उसी प्रकार मर भी जाता तो भी कोई चिन्ता न थी। मैं सोचता कि यदि किसी तरह सम्भव हो सके तो मैं इस स्त्री को अपनी साँसों के साथ भीतर पी जाऊं ताकि वह सदा के लिये मुझमें समा जाये। वह मेरे जीवन में संगीत की तरह प्रवेश कर चुकी थी। मैंने उसे अपनी सर्व प्रथम कहानी पढ़कर सुनाया। मुझे याद तो नहीं कि सुनकर उसने क्या कहा था लेकिन आश्चर्य अवश्य हुआ था।

'तो अब तुम गद्य लिखने लगे हो?'

एक बार उसने कहा, 'मैंने अक्सर तुम्हारे बारे में सोचा है। क्या तुमने यह सब मुसीबतें मेरे ही कारण उठाया है?'

मैंने उसे समझाया कि उसके साथ मैं जीवन में कभी कठिनाई अनुभव नहीं कर सकता।

'तुम बहुत प्यारे हो।' उसने कहा और मैं जैसे लुट गया।

मेरे मन में पागलपन की यह लालसा रही है कि मैं उसे अपनी बाहों में ले लूँ लेकिन कभी ऐसा किया नहीं। एक बार बहुत हिम्मत कर के कहा, 'आकर मेरे ही साथ रहो। कृपा कर के आओ।'

एक अजीब हँसी, तेज निगाह! वह चलकर कमरे के दूसरे सिरे पर जाकर खड़ी हुई और बोली, 'अच्छी बात है। तुम निकली जाओ। मैं यहीं रुक कर इसपर सोचूँगी फिर तुम्हें लिखूंगी।'

पुस्तकों में पढ़े हुये नायकों की तरह मैं बाहर चला आया।

फिर जाड़ों में वह अपनी बेटी के साथ मेरे पास निम्नी आ गई। 'गरीब आदमी की भी सुहागरात कितनी छोटी होती है!' यह कहावत कितनी सच लेकिन कितनी दुखदाई भी है। इसका प्रमाण मैं अपने ही अनुभवों से दे सकता हूँ।

दो रुबल प्रतिमाह पर हमने एक मकान किराये का लिया। एक पादरी के घर का पिछला हिस्सा। छोटा कमरा मैंने अपना बनाया। बड़े कमरे को मेरी पत्नी* ने ठीक से सजाया जो रहने के कमरे का भी काम देता था। लेकिन यह स्थान हम जैसे विवाहितों के रहने लायक नहीं था। हर ओर दीमक और शीत से सब नुकसान हो रहा था। रात को काम करने के लिये मैंने एक दरी का प्रबन्ध किया। मैं अपने को काफी ताकतवर समझता था फिर भी मुझे बुखार आने लगा।

रहने वाले कमरे को गर्म रखने के लिये स्टोव जला लेते थे लेकिन हमारी वह बेटी, नीले आँखों वाली गुड़िया को सिर दर्द रहने लगा।

बसन्त के साथ साथ कमरे भर में मकड़ी का जाला भर गया। माँ बेटी दोनों परेशान रहतीं। मैं घंटों सफाई में खर्च करता। कमरे में भी अँधेरा भरा रहता क्योंकि खिड़की के सामने भयंकर रूप से बेर की झाड़ी उग आई थी जिसे वह धर्मांध पादरी काटने न देता।

मुझे दूसरे अच्छे मकान भी आसानी से मिल सकते थे। लेकिन मैं मकान मालिक उस पादरी का कर्जदार बन चुका था—दूसरे जाने न क्यों पादरी चाहता था कि मैं उसी के घर में रहूँ। 'तुम्हे इस प्रकार के घर में रहने की आदत पड़ जायेगी।' उसने कहा, 'और नहीं तो तुम मेरे रुपये देकर जहाँ चाहना चले जाना।'

---

*मेरी यह प्रेमिका अब पूरी तरह मेरी पत्नी बन चुकी थी।

वह पादरी राक्षस की डील डौल का था और चेहरा लाल गुब्बारे की तरह था। शराब की आदत के कारण गिरजाघर बहुत कम जाता। एक लम्बी नाक वाली दरजिन से उसका प्रेमव्यापार चल रहा था। उसके विषय में वह मुझे बता चुका था। उसने कहा, 'उसे देख कर मुझे स्वर्ग की देवी की याद आती है।'

मुझे न तो स्वर्ग पर विश्वास था न देवी पर, अतः वह मुझे समझाता, 'जैसे पानी के बाहर मछली नहीं रह सकती उसी तरह, गिरिजाघर के बाहर आत्मा भी नहीं रह सकती समझे! आओ इसी बात पर थोड़ा सा पिया जाय।'

'मैं नहीं पीता, मेरी तबियत ठीक नहीं रहती।'

मैं अपने आप पर बहुत दुःखी रहता। मैंने जिस मकान में लाकर अपनी पत्नी को रखा था वह इसके योग्य न था: न तो गरीबी के कारण मैं एक वक्त भी गोश्त खरीद पाता, न लड़की के लिये खिलौने। ऐसा जीवन भी क्या। अपनी इसी चिन्ता के कारण अक्सर रात रात भर मुझे नींद न आती। मैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी हद तक तकलीफें उठा सकता था—इसमें भी मैं आनन्द ही लेता था लेकिन इस सुकुमार स्त्री और बच्ची के लिये ऐसा जीवन असह्य था, नरक था।

रात को, एक कोने में मेज पर बैठा मैं अपनी कहानियाँ लिखता। उस समय अपने आप पर ही मैं दाँत पीसता, मैं भी क्या हूँ—मनुष्यता, तकदीर, प्यार, अस्तित्व!

वह मुझसे इसी प्रकार व्यवहार करती जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को कभी अपनी तकलीफें नहीं बताती। उसने कभी भी आज के इस कष्टमय जीवन का जिक्र न किया। जैसे जैसे तकलीफें बढ़ती जातीं उसकी हँसी निखरती जाती।

सुबह से रात तक वह पादरियों और उनकी पत्नियों के चित्र बनाती और नक्शे तैयार करती। उसके लिये उसे एक स्वर्ण-पदक भी मिल चुका था। जब चित्रों का कार्य समाप्त हो गया तो उसने तार व अन्य मामूली वस्तुओं से पेरिस हैट बनाना शुरू किया। वह खुद ही जब वे हैट पहन कर शीशे के सामने खड़ी होती तो हँसी के मारे लोट पोट हो जाती। फिर भी खरीद-दारों पर उन हैटों का जादू छा गया था।

मैं एक वकील की क्लर्की करता था और एक स्थानीय अखबार में कहानियां लिखता था। कहानियों पर दो कोपेक पर पंक्ति मिलता। शाम चा के समय जब कोई मेहमान न होता तो मेरी पत्नी दूसरे एलेक्जेंडर के बिलोस्टोक स्कूल जाने की बातें बताती। मैं देखता कि पेरिस के उसके संस्करण उस पर शराब की तरह नशा करते। वह अपनी प्रेम कथायें ही बताती जिन्हें मैं बहुत ध्यान से सुनता। वह अपने प्रथम शादी की बात बताती, कि किस प्रकार उसका वह पति जो एक जनरल था—जार के पास तक जाया करता था। एक बार उसने कहा, 'फ्रांस के लाग प्यार को एक कला मानते हैं।'

एक दिन और उसने कहा, 'रूसी औरतें फल की तरह होती हैं और फ्रांस की औरतें फल के रस की तरह।'

मैंने उसे बहुत प्रेमातुर होकर स्त्री और पुरुषों के सम्बन्ध में अपने विचार बताये। यही विचार मैंने उसे शादी के दूसरे या तीसरे रात को बताये थे। 'क्या सचमुच तुम यही विश्वास करते हो?' उस नीली चांदनी में मेरी बाहों में पड़ी हुई उसने पूछा था।

उसकी पतली उंगलियाँ मेरे बालों में उलझी थीं। वह मुझे अपनी आश्चर्य से फैली आंखों से देख रही थी, रह रह कर वह मुस्करा पड़ती। तभी अचानक वह बिस्तरे पर से कूद कर

अलग हो गई। नंगे पाँव वह कमरे में उस ओर गई जहाँ केवल चाँद की रोशनी आ रही थी। पुनः मेरे पास वापस आकर उसने मेरे गालों को थपथपा कर कहा, 'तुम्हे किसी नई छोकड़ी से प्रेम करना चाहिये था—मुझसे नहीं।'

जब मैंने उसे अपनी गोद में खींच लिया तो वह रो पड़ी, 'जान लो तुम, कि मैं तुम्हे कितना प्यार करती हूँ तुम्हारे साथ से बढ़कर मैंने कभी सुख नहीं पाया। विश्वास करो कि मैं यह सब सच ही कह रही हूँ। प्यार मेरे लिये कभी इतना जोरदार, मासूम और आरामदेह नहीं था जितना अब है। मुझे तुम्हारे साथ अपार आनन्द का सुख मिलता है। लेकिन हमने एक गलती की है। तुम्हे जिसकी जरूरत है वह मुझमें नहीं। और मैं ही इसकी दोषी हूं।'

उसकी इस प्रकार की बातों से मुझे डर लगता। मैं कोशिश करता कि बात का रुख बदल जाये। लेकिन उसके ये शब्द मेरे दिल पर जमे रहे। शायद वह भी उनसे छुटकारा न पा सकी थी कि एक दिन आंखों में आंसू भर कर उसने कहा, 'काश कि मैं युवती होती!'

जहाँ तक मुझे याद है, उस रात बाग में तूफान आया था। चिमनी में लग कर हवा भेड़िये की तरह आवाज करती।

जब कभी कुछ रुबल आ जाते तो हम लोग मित्रों को दावत देते। गोश्त, वोदका, बियर और अन्य वस्तुयें। मेरी पत्नी को रूसी खाना पसन्द था। वह वहां के नगर समाज में काफी प्रतिष्ठा व आदर पाती थी।

'बहुत महान महिला है।' उस वकील के मददगार की राय थी। कुछ नई उम्र के लड़के, कवितायें लिख लिखकर मेरी पत्नी के पास लाते।

'तुम क्यों उन्हे इतना आश्रय देती हो ?'

'इसमें मछली मारने जैसा ही मजा आता है।' उसने कहा, 'क्या तुम्हे जलन हो रही है ?'

मुझे बिल्कुल जलन नहीं थी। मुझे फिर भी ऐसे आदमी बहुत पसन्द न थे। मैं खुद भी एक खुश आदमी हूँ और हँसने वाले लोग ही मुझे अच्छे लगते हैं। मुझे तो हँसते हँसते आँसू निकल आयें तभी मजा आता है। कभी मेरी हँसी पर वह कहती, 'तुम तो नाटक में चले जाओ। बहुत सफल हास्य अभिनेता हो सकते हो।'

वह खुद भी रंगमंच की प्रेमिका थी। उसने कहा, 'मुझे रंग मंच पसंद है। लेकिन परदे के पीछे जो कुछ होता है उससे मुझे घृणा है।' उसमें एक बड़ी विशेषता थी कि वह जो अनुभव करती थीं साफ साफ सीधे शब्दों में कह देती थी।

मुझसे उसे शिकायत थी, 'तुम कभी कभी बहुत अधिक दार्शनिक बन जाते हो। कठोरता जहाँ है वहीं वास्तविक जीवन है। अपने को अवास्तविकता में क्यों उलझाते हो ? यह सीखो कि जीवन की इस कठोरता को कैसे कम किया जाय, यही तुम करो तो मानवता का महाकल्याण हो ?'

अक्सर रात को काम करते करते मैं उठकर उसको देखता वह सोती होती—निद्रा में वह और भी प्यारी लगती। उसका शान्त सुन्दर चेहरा देखकर मुझे उस पर आने वाली सभी मुसीबतों का ख्याल हो आता और हमारे प्यार पर करुण का परदा पड़ा होता।

हम दोनों की साहित्यिक रुचि में भी अन्तर था। मुझे बालजक और फ्लाबर्ट पसन्द थे। उसे पाल केवल, ओक्टावे फुइलेट आदि। लेकिन हमारे संबंधों पर इसका प्रभाव न पड़ता।

बल्कि हम लोग एक दूसरे के विचारों में आनन्द लेते।

ज्यों ज्यों दिन बीतते गये! मैं पुस्तकों में फँसता गया। मैं काफी समय तक लिखता। हमारी मित्र मंडली भी काफी विस्तृत होती गई। हम दोनों जितना भी कमाते अधिकांश दावतों में ही खर्च होता।

मेरी पत्नी मेरे लिखने पर अधिक ध्यान न देती। लेकिन इस विषय में उसकी अवहेलना का भी मुझ पर कोई प्रभाव न पड़ता। यद्यपि मैं अपने को लेखक भी न मानता था फिर भी मेरे भीतर अब बहुत अधिक साहित्यिक प्रेरणायें उमड़ लेती थीं। एक दिन सुबह सुबह मैं उसे अपनी एक कहानी सुना रहा था जिसे उसी रात को मैंने लिखा था। सुनते सुनते वह सो गई। मुझे अधिक बुरा न लगा। पढ़ना बन्द करके मैं उसे निहारने लगा।

सोफा में उसका छोटा सा, प्यारा प्यारा सिर धंसा था। उसका मुँह आधा खुला था और बच्चों की तरह साँस चल रही थी। बाहर की झाड़ी से छनकर सूरज की किरणें खिड़की की राह आ रही थीं।

उठ कर मैं आँगन में चला गया। जीवन भर मैं औरतों को जिस रूप में देखता आ रहा था वह सब मेरे लिये आश्चर्य का विषय था। लड़कपन में रानी मारगोट को देखा था—लेकिन वे अनुभव हमारी पत्नी के साथ मेल नहीं खाते थे। सचाई यह थी कि मैं अपने मन में उस माँ को उसी तरह प्यार करता था जिस तरह अपनी माँ को। उसकी तरफ मैं सदा इसी आशा से देखता था कि शायद जीवन की कठोरता कम हो सके।

तीस साल पहले की बात है। और आज मैं उसे जब याद करता हूँ तो हमारा रोम रोम पुलकित हो जाता है।

मैं इस बात पर विश्वास करता हूं कि किसी दुःखदायी घटना के विषय में भी खुशी की बात की जाये तो उस घटना का दुःखी प्रभाव कम होता है।

मैं अब तक अपने जीवन को ही बहुत अद्भुत मानता था—उसी को कठोरता की सीमा मानता था लेकिन मुझे उन्हीं दिनों बुद्ध पर लिखी हुई ओल्डेनबर्ग की पुस्तक मिली। उसे पढ़ कर लगा कि उसके सामने हमारे जीवन की कठोरता नहीं के बराबर है।

मेरी पत्नी को जो युवक सुन्दर सुन्दर कागज पर कविताएं लिखकर दे जाते उनका उपयोग वह बिछाने के कागज के साथ में करती।

एक दिन उसने एक के बारे में कहा, 'उसके लिए मुझे दुःख है।' बिना अधिक जाने ही मैंने भी दुःख ही का अनुभव किया। एक कवि जो बहुत अधिक आता था वह मुझसे चार वर्ष बड़ा था। वह बहुत शान्त - प्रकृति का आदमी था और उसकी ऐसी आदत थी कि किसी भी स्थान पर वह घन्टों बैठा रहता था। एक बार दिन को दो बजे उसे खाने पर बुलाया और वह रात को दो बजे तक चुपचाप बैठा रहा। मेरी ही तरह वह भी एक वकील का क्लर्क था। वह पीता खूब था।

उसके कुछ रिश्तेदार उर्गेन में थे जो अमीर थे और प्रति माह उसे पचास रूबल भेजते थे। वह प्रति रविवार को मेरी पत्नी के लिये मिठाइयाँ लाता। उसकी वर्षगांठ पर उसने एक घड़ी भेंट में दिया था। वह घड़ी एक पेड़ के बीच में जड़ी थी और पेड़ पर एक उल्लू बैठा था।

एक बार जब मैंने उस व्यक्ति की बातें चलाईं तो पत्नी ने कहा, 'मुझे उसके प्रति कोई गहरी भावना नहीं। हाँ मैं, अनुभव करती हूँ किसी कारणवश उसकी आत्मा सो गई है और मैं सोचती हूँ कि शायद मैं उसे जगा सकूँ।'

यह मैं जानता था कि संसार में किसी भी सोते को जगाने में उसे आन्तरिक सुख मिलता था।

अक्सर मेरे कुछ मित्र मुझसे मिलने आते। इधर मेरे मन में सभी के प्रति एक रुखाई आ गई थी। मेरे कुछ मित्र मेरे रूखे व्यवहार से कभी कभी चिढ़ भी जाते। एक दिन पत्नी ने कहा, 'इस रुखाई से तुम्हें कुछ मिल नहीं सकता। इसका नतीजा होगा कि इधर उधर लोग गलत अफवाहें फैलावेंगे। तुम आजकल शायद ईर्षा की आग में जल रहे हो, क्यों?'

'मैं सोचता हूँ कि मैं अपनी जिन्दगी का रास्ता बदल दूँ।'

क्षण भर सोचकर उसने कहा, 'ठीक ही कहते हो। तुम्हारा जीवन आजकल कुण्ठित हो रहा है।'

मैं यह मानने लगा था कि संसार का हर व्यक्ति पापों से भरा है।

एक दिन रात को पत्नी को चुपचाप कलेजे से लगा कर मैं विदा हुआ। वह शहर ही छोड़ दिया। कुछ दिन बाद ही वह एक नाटक कम्पनी में शामिल हो गई। यही मेरे प्रथम प्रेम का अन्त था—यद्यपि अन्त बहुत दुखदाई था फिर भी……।

सुना है अभी हाल में वह मर गई।

उसके लिए मैं यही कहूँगा कि वह महान स्त्री थी। वह बड़े से बड़े अभावों के बीच भी रह सकती थी। वह जीवन के

कष्टों को हँसकर उड़ा देती थी। ऐसा नहीं कह सकता कि वह पुरुषों को पसन्द करती थी लेकिन वह उन्हें पहचानने की कोशिश करती थी—वह कहती, प्यार और भूख—संसार में दो ही चीजें हैं बस।

सरकारी बैङ्क का एक अफसर लम्बा शरीर और चलता था बहुत धीरे धीरे। वह जब कभी आता तो हममें रसायन विज्ञान पर बहस होती। मैं चिढ़ जाता। उसके जाने के बाद पत्नी मेरे पास आकर कहती, 'तुम गम्भीर वादविवाद में चिढ़ क्यों जाते हो। लेकिन वह भी कितना मूर्ख है।'

कभी कभी मैं उसके गालों को थपथपाता तो वह अत्यन्त खुश होती। ऐसे अवसरों पर खुशी से वह आँखें बन्द कर लेती। कभी कभी अर्धनग्न हो शीशे के सामने खड़ी होकर वह कहती, 'एक औरत भी क्या है! उसका शरीर भी क्या है!' फिर मुझसे कहती, 'अच्छे कपड़ों में अधिक स्वस्थ और अच्छी लगती हूँ न!'

दूसरी औरतें उसके कपड़ों की नकल करतीं। एक ने एक बार उससे कहा, 'मेरे कपड़ों में तुम्हारे से तिगुनी कीमत लगती है पर तुम्हारे कपड़े अधिक अच्छे दिखते हैं। तुम्हें देख कर मुझे ईर्षा होती है। एक बार एक लेडी डाक्टर ने बहुत चुपचाप मुझसे कहा. 'तुम इस औरत के मन को नहीं पहचान सकते। यह तुम्हारे शरीर के अन्तिम रक्त बूंद को भी चूस लेगी!'

कुछ भी हो इस प्रथम प्रेम में मैंने बहुत कुछ सीखा। मैं जीवन के विभिन्न पहलुओं को बहुत गम्भीरता से देखता। मैंने बहुत देखा भी है।

एक दिन मैंने देखा कि बाजार में एक सिपाही एक बूढ़े और काने यहूदी को पीट रहा है—जिस पर उसने चोरी का

अपराध लगाया था। दूसरे दिन भी मैंने उसी व्यक्ति को सड़क पर देखा—धूल से भरा हुआ। जाने क्यों आज तीस वर्ष बाद भी उसकी आकृति मुझे साफ दिखाई पड़ती है। एक आँख से ही आकाश को वह देखता जैसे आकाश में छेद कर देगा—

उसकी दृष्टि का जाने क्यों मुझ पर काफी असर पड़ा और घर आकर भी मैं उसी को सोचता रहा। मैंने उस घटना का जब पत्नी से जिक्र किया था तो उसने कहा था, 'तुम कितने कमजोर दिल के हो। तुम उसे अच्छा आदमी कहते हो पर कैसे हो सकता है जब वह एक आँख वाला ही है!'

आज जब वह मौत के गर्भ में खो गई है तो मैं कल्पना करता हूँ कि मृत्यु के समय भी वह भविष्य के लिये बहुत सतर्क रही होगी।

ग्यारह

जब मैं तिफलिस से वापस निझनी आया तब कोरोलोन्को सेन्टपिटर्सबर्ग* जा चुका था।

मेरे पास कोई काम नहीं था अतः मैंने कुछ कहानियाँ लिखा और 'वोल्गा हेराल्ड' को भेज दिया। कोरोलोन्को इसमें सदा ही लिखता था जिससे उस क्षेत्र में यह पत्र काफी प्रचलित था।

मैं अपनी कहानियों में अपना नाम 'एम० जी' या 'जी० वाई०' ही लिखता था। लिखाई के फलस्वरूप प्रति माह मुझे लगभग तीस रुबल मिल जाते थे। लेकिन अपने मित्रों जैसे लेनिन व वेसीलोव तक से मैंने अपने लेखक होने की बात छिपा रखी थी। लेकिन प्रकाशक ने कोरोलोन्को से मेरा नाम बता दिया था। निझनी पुनः आने पर कोरोलोन्को ने मुझे बुलवाया।

वह अब भी शहर के बाहर एक छोटे से लकड़ी के मकान में रह रहा था। जब मैं गया तो एक बहुत छोटे से कमरे में बैठा वह चाय पी रहा था। उसकी पत्नी और बच्चों

---

*अब का लेनिनग्राड

ने चाय पी लिया था और घूमने चले गए थे। मुझे देखते ही उसने कहा,

'मैंने अभी ही तुम्हारी कहानी पढ़ी है—चिड़िया—तो तुमने अपनी रचनायें छपाना भी शुरू कर दिया। बधाई!'

अपनी आधी खुली आँख से देखकर वह कह रहा था। गहरे नीले रंग की वह कमीज पहने था। मैंने उसे बताया कि 'काकेशश' नामक एक अन्य कहानी भी मैंने लिखा है जो पत्रिका में छप चुकी है।

'तुम कुछ लाये नहीं। तुम्हारे लिखने का ढंग अपना है। रूखी भाषा लेकिन पढ़ने वाले को हिला देती है।'

उन्हीं दिनों मैंने उसकी एक कहानी 'नदी का खेल' पढ़ा था जो मुझे महान रचना लगी। मैं उसकी तारीफ करने लगा। उसने आँखें बन्द कर लीं और सुनता रहा, फिर उठ खड़ा हुआ। फिर कहा, 'बताओ अभी तक तुम कहाँ क्या करते रहे?'

मैंने उसे अपनी यात्राओं के बारे में बताया।

दरवाजे तक आकर उसने विदा दिया। मैंने चलते चलते भी पूछा, 'क्या सचमुच मैं लिख सकता हूँ!'

'अवश्य! तुम लिख भी रहे हो, चीजें छप भी रही हैं। भला और क्या चाहिये।'

वहाँ से वापस आया तो मैं बहुत खुश था। मैं कोरोलेन्को को आदर देता था परन्तु मुझे उसके प्रति आकर्षण का अनुभव हुआ। यह शायद इसलिए कि मैं अब 'गुरु - चेला' ढोंग से ऊब गया था।

लगभग एक पखवारे के बाद मैं कुछ रचनाएँ लेकर गया। कोरोलेन्को घर पर न था अतः उन्हें छोड़ आया।

दूसरे दिन एक पत्र मिला—'आज शाम को आ जाओ। हम लोग बातें करेंगे।'

मैं गया लेकिन आज वह मुझे पहले से कुछ बदला सा लगा। अपने टेबिल से मेरी रचनाएँ उसने उठाया। बोला, 'मैं सब पढ़ गया। लेकिन जो कुछ तुमने लिखा है वह तुम्हारी आवाज नहीं लगती—। तुम बहुत अधिक भावुक नहीं हो—यथार्थवादी हो। समझे? और इसमें सभी व्यक्तिगत घटनाएं हैं?'

'हाँ लगभग व्यक्तिगत!'

'तो इन्हें निकालना होगा। व्यक्तिगत घटनायें व्यापक बनाकर ही लिखो जाएँगी!' कहकर उसने रचनाएं तो मेज पर रख दीं पर कुर्सी मेरी ओर निकट खींचकर कन्धे पर हाथ रखकर कहा, 'मैं एक बात साफ साफ कहूँ! मैं अधिक तो नहीं जानता लेकिन तुम्हारे पास काफी मसाला है। तुम ठीक से रहते नहीं। तुम्हें ठीक जगह मिलती नहीं। तुम फौरन किसी बढ़िया और सुन्दर लड़की से ब्याह कर लो।'

'लेकिन मेरे पत्नी है।'

'यही तो सारी परेशानी है।'

मैंने कहा कि इस विषय पर बातें करना बेकार है। उसने कहा, 'तो माफ करना। हाँ तुमने सुना है कि नहीं कि रोमास जेल में है।'

'हाँ मुझे कल ही पता लगा है। एमोलेस्क में वह क्या कर रह था?

'पुलिस ने उसके यहाँ सब पता लगा लिया था—पूरा प्रेस और उसके पत्रिका का सारा सामान पुलिस ने जब्त कर लिया।

तभी उसके परिवार के लोग आ गये। बच्चों ने कमरा अपने सिर पर उठा लिया मैंने विदा लिया और तनिक हल्के दिल से वापस आया।

अब मुझे उस प्रान्त के लगभग सभी लोग जान गये थे। मैं उनके आदर का पात्र बन गया था परन्तु कोरोलेन्को सदा ही मुझे आगाह करता रहा, 'देखो अधिक इनके लालच में न पड़ना। ये तुम्हें गुमराह कर देंगे।'

कुछ विद्यार्थियों ने मुझे अपनी एक छोटी सी मंडली में भाषण देने को बुलाया। उन्होंने मेरे स्वागत में वोदका और बियर दोनों ही मेरे गिलास में मिला दिया। मैंने उन्हें ऐसा करते देख लिया। वें मुझे शराब के नशे में देखना चाहते थे। क्यों सो मैं नहीं जानता।

कोरोलेन्को का शहर में काफी नाम था। कुछ लोग उसे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं में भी शामिल करना चाहते थे।

एक दिन प्रातःकाल मैं एक खेत से वापस आ रहा था जहाँ मैं रात भर टहलता रहा। मैं कोरोलेन्को के यहाँ ठीक उसी क्षण पहुंचा जब वह कहीं जाने को निकल रहा था, 'कहाँ से आ रहे हो?' पूछा उसने 'घूमने निकला हूँ। कल की रात बहुत अच्छी थी। आओ न, साथ चलो।'

वह भी रात भर नहीं सोया था। उसकी आँखें धंसी रही थीं। उसकी दाढ़ी उलझी थी। उसने पूछा, 'तुम आते क्यों नहीं।'

उसे मैंने समझाया कि जब से उससे मैं तीन रूबल उधार माँग ले गया हूँ तब से कुछ झेंप लगती है।

'लेकिन मुझे तो याद ही नहीं कि तुमने कब रुपये लिये थे। और हम सभी एक जैसे हैं। एक दूसरे को सदा ही समय पर हमें मदद करनी चाहिये।'

फिर क्षण भर चुप रह कर उसने कहा, 'क्या तुम्हें मालूम है कि रोमास के मामले में इस्तोमिना नाम की कोई लड़की भी थी ?'

मैं उस लड़की को जानता था। मेरी उसकी भेंट वोल्गा के किनारे पर हुई थी। मैंने उसके बारे में बता दिया कोरोलेंको ने कहा, 'इस प्रकार बच्चों को ऐसे मामले में फँसाना ही एक प्रकार से गुनाह है।'

मैं खुद भी उस लड़की से चार वर्ष पूर्व मिला था लेकिन मेरी ऐसी कोई धारणा नहीं बनी जैसे तुम्हारी है। वह कहीं मास्टरनी बन सकती थी—क्रान्तिकारिणी नहीं।

वह बहुत तेजी से चल रहा था कि मुझे साथ देने में कठिनाई हो रही थी।

घर आकर मैं लिखने बैठ गया। निखोलायेव अस्पताल की एक नर्स पर मैंने कहानी लिखी—'पेलकास'। उसकी पहली प्रति ही कोरोलेन्को के पास भेज दी।

उसने कहानी पसन्द की और बधाइयाँ भिजवाईं। एक दिन मेरे कंधे पर हाथ रख कर कोरोलेन्को ने कहा, 'तुम इस शहर से चले क्यों नहीं जाते ? चाहे समारा ही। मेरा एक मित्र समारा के एक अखबार में है। मैं लिखूंगा तो वह तुम्हें कोई काम भी देगा। कहो क्या राय है ?'

'क्या यहाँ मैं किसी के रास्ते का रोड़ा बना हूं।'

'नहीं कुछ अन्य लोग तेरे रास्ते के रोड़े बने हैं।'

मुझे ज्ञात हुआ कि वह भी मेरे शराब पीने और दरिद्रता और मेरी कलंक कहानियों से भी वह परिचित है। सुनकर वह दुखी ही होता है।

'यहूदी खलामीदा' के उपनाम से मैं 'समारा गजट' का अच्छा खासा लेखक बन गया।

एक घटना हुई। स्कुकिन नामक एक कवि से मैं बहुत परेशान था। उसकी ढेरों कवितायें मेरे पास कार्यालय में आतीं। मैं उनके साथ उचित न्याय न कर पाता, फलस्वरूप उसके कारण मेरे प्रति काफी असंतोष फैला।

वहाँ मुझे कुछ ऐसे लोग भी मिले जिनके चरित्र पर निगाह डालनी ही पड़ी। एक पादरी—जिसने एक तातार लड़की को अपने चंगुल में फँसा लिया था। फलस्वरूप तातारों ने विद्रोह कर दिया था। वह पादरी भी अजीब था। एक झूठा मुकदमा चलवा कर अपने अनेक विरोधियों को उसने फँसा दिया था। उसकी खास बातें ये थीं--बहुत बुरे मौसम में गाड़ी हांक कर ले गया। रास्ते में गाड़ी टूट गई तो उसे एक किसान के यहाँ ठहरना पड़ा। वहीं से उसे कुछ विद्रोह की भनक मिली थी। फलस्वरूप उसने झूठा मुकदमा चलवाया था।

१८९७ के वसन्त में मैं पकड़ा गया और निगानी में निर्वासित पाकर तिफलिस भेजा गया। मेरा मुकदमा हो रहा था तब कर्नल कोनिस्की (सेंट पीटर्सबर्ग की पुलिस का प्रधान) ने कहा, 'तुम्हारे पास कोरोलेन्को के पत्र आते हैं। वह हम लोगों का सबसे अच्छा लेखक है।'

वह अजीब आदमी था। उसने बताया, मैं कोरोलेन्को के ही गाँव का हूं। हम दोनों वोल्हीनिया के हैं।

हम लोग जिस कमरे में थे उसमें एक मेज पर कागज का अम्बार लगा था उसी में मुझे वह कागज भी दिखा जिस पर कभी मैंने कुछ अनोखे मुहावरे नोट कर रखे थे। मुझे लगा कि यदि यह इसके अर्थ पूछेगा तो मैं क्या कहूंगा।

पूरे ६ साल—१८९५ से १९०१ तक मैं कोरोलेन्को से न मिला। १९०१ में मैं सेंट पीटर्सबर्ग गया। एक रात को एक पुल पार करते समय दो व्यक्ति मिले—देखने में हज्जाम से लगते थे। उनमें से एक ने घूम कर मेरा चेहरा देखकर कहा, 'वह गोर्की है।' दूसरा भी रुका—मुझे ऊपर से नीचे तक देखा फिर आगे बढ़ गया बोला, 'कम्बख्त रबड़ के जूते पहन कर घूमता भी है।

एक बार एक पत्र के सम्पादक के कुछ मित्रों के साथ मैंने एक चित्र 'खिचवाया। उन मित्रों में एक व्यक्ति गुरोविच नाम का था—वह पुसिल का भेदिया था। मैं इससे तो इन्कार कर नहीं सकता कि औरतों और लड़कियों की मुस्कान अब मुझे खींचने लगी थी।

पीटर्सबर्ग में सभी मकान पत्थर के थे लेकिन जाने कैसे यहाँ भी कोरोलेन्को ने काठ का एक मकान खोज ही लिया। अब वह पहले से बड़ा हो गया था। बाल पक गये थे। चेहरे पर कुछ झुर्रियाँ भी पड़ गई थीं। चाय की मेज पर बैठ कर उसने मेरी रचनाओं पर बातें शुरू किया। फिर अचानक पूछ बैठा, 'क्या तुम मार्क्सवादी हो गये हो?'

जब मैंने बताया कि इधर आकर्षित हो रहा हूं तो उसने कहा, 'अच्छा जाने दो। पीटर्सबर्ग कैसा लगा ?'

'यहाँ के आदमियों से यहाँ का शहर ही अच्छा है।'

'हाँ, यहाँ के आदमी रूसी नहीं योरोपियन अधिक हैं।'

बातों ही बातों में मुझे लगा कि मार्क्सवाद को वह एक मजाक समझता है।

'लाइफ' के सम्पादक बी० ए० पोस ने एक शाम को साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया। सभी प्रकार की विचार धारा के लोगों को निमन्त्रण दिया। यह गोष्ठी महान लेखक 'चेरनेशविस्की' की स्मृति में की गई थी।

इसके पहले ही मेरे पास तीन विद्यार्थी आये उनमें एक लड़की भी थी। उनका कहना था कि वे चेरनेशविस्की के नाम पर होने वाले किसी भी जलसे में पोस को नहीं शामिल होने देंगे क्योंकि वह अपने अन्य सहयोगी सम्पादकों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता।

पोस को मैं लगभग एक वर्ष से जानता था पर मुझे ऐसा अनुभव न था। यह अवश्य जानता था कि वह खुद भी घोड़े की तरह काम करता था और उसी प्रकार काम लेता भी था। मैंने उन्हें अपना दृष्टिकोण समझाना चाहा पर उनकी समझ में न आया। बाद में उन्होंने इस धमकी के साथ विदा लिया कि वे किसी को वहाँ बोलने न देंगे।

मुझे मीटिंग की सारी सूचना मिली। कोरोलेन्को ने मुझे आगाह किया कि इस प्रकार के चक्करों से मैं अपने को दूर ही रखूँ। इसके बाद हमारी उसकी भेंट तनिक कम हो गई। कोरोलेन्को की हर बात, उसकी महानता की मुझे याद दिलाती।

जब टालसटाय की मृत्यु हुई तो कोरोलोन्को ने मुझे लिखा 'टाल्सटाय ने सोचने और पढ़ने वालों की संख्या खूब बढ़ाई है।'

दूसरों को ठीक रास्ते पर लाने के लिये ही कोरोलोन्को ने अपनी जीवन की आधी शक्ति नष्ट की थी।

१९०८ में उसने लिखा—'आज जहां भी जो कुछ हो रहा है—कुछ वर्षों बाद उसी का भयानक विस्फोट होगा। वे दिन बहुत भयानक होंगे।'

अपने जीवन भर कोरोलोन्को उस कठिन पथ का ही यात्री रहा जो किसी को भी महान बना दे और उसकी यही देन चिरस्मरणीय होगी।

— ——